राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

फरवरी- 2026

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

www.swarnimumbai.com

महाशिवरात्रि

आत्मजागरण की रात

VIP विमान हादसे

दर्दनाक उड़ान!

बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO.: MAHHIN-2014/55532

•वर्ष : 10 •अंक: 11 •मुंबई •फरवरी-2026

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक
नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक
मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक
भाग्यश्री कानडे,
संतोषी मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ
ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा
ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट
राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W), Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in
Website: www.swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को.ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

महाराष्ट्र की पहली महिला डिप्टी सीएम	05
आसमान में गुम दर्दनाक उड़ान!	06
केंद्रीय बजट २०२६-२७...	12
पकवान	18
'आस्था, साधना और जागरण की पावन रात्रि..	20
युवाओं का हार्ट अटैक! .	22
राशिफल	24
चारमीनार का इतिहास	26
सिनेमा	29
चेन्नई में सैकड़ों कौवों की मौत से हड़कंप...	30
कीस में ६६वें अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलन का हुआ शुभारंभ..	32
महेश नाम स्वयं ब्रह्माजी ने भगवान शिव-शंकर को दिया	33
एएपीआई ग्लोबल समिट का कीम्स में हुआ उद्घाटन	34
कीट विदेशी छात्रों को आकर्षित करने में देश का ५वाँ सर्वश्रेष्ठ ...	36
'तीसरा कमरा'	38
डिजिटल करोड़पति	41
विचित्र पड़ोस	44
यूजीसी के नए नियमों पर विवाद,	54
काले गन्ने की खेती...	56

सुविचारः

हर छोटा बदलाव बड़ी कामयाबी का हिस्सा होता है...

डिजिटल भारत या डिजिटल धोखा?

भारत आज स्वयं को गर्व के साथ 'डिजिटल राष्ट्र' कहता है। मोबाइल फोन, इंटरनेट, UPI, आधार, ऑनलाइन बैंकिंग, सरकारी पोर्टल और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस - हर तरफ तकनीक का विस्तार हो रहा है। सरकार इसे विकास की क्रांति कहती है, कंपनियाँ इसे सुविधा का युग बताती हैं और मीडिया इसे आधुनिक भारत की पहचान के रूप में प्रस्तुत करता है। पर इसी चमकदार डिजिटल तस्वीर के पीछे एक गहरी छाया भी है, जहाँ हर दिन हजारों लोग ऑनलाइन ठगी, डेटा चोरी और साइबर अपराध का शिकार हो रहे हैं। इसलिए आज यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या हम सच में डिजिटल भारत बना रहे हैं या अनजाने में डिजिटल धोखे की एक विशाल व्यवस्था खड़ी कर रहे हैं। डिजिटल इंडिया की शुरुआत एक सकारात्मक सोच से हुई थी। इसका उद्देश्य था सरकारी सेवाओं को पारदर्शी बनाना, भ्रष्टाचार को कम करना और आम नागरिक का समय बचाना। आज रेलवे टिकट मोबाइल से बुक होते हैं, बैंकिंग ऐप से होती है, राशन कार्ड आधार से जुड़ा है, अस्पताल की रिपोर्ट ऑनलाइन मिलती है और बिजली-पानी के बिल भी ऐप से जमा हो जाते हैं। इन सुविधाओं ने जीवन को आसान बनाया है, इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन समस्या यह नहीं कि व्यवस्था डिजिटल हुई, समस्या यह है कि नागरिक को बिना पूरी तैयारी के डिजिटल बना दिया गया। तकनीक तेजी से आगे बढ़ी, पर आम आदमी की समझ और सुरक्षा उसी गति से नहीं बढ़ सकी।

आज स्थिति यह है कि मोबाइल फोन न हो तो व्यक्ति लगभग व्यवस्था से बाहर हो जाता है। बैंकिंग, सरकारी योजनाएँ, टिकट, फार्म - सब कुछ डिजिटल है। यह सुविधा धीरे-धीरे निर्भरता में बदल गई है। इस निर्भरता का सबसे खतरनाक परिणाम साइबर अपराध के रूप में सामने आया है। पहले चोरी होती थी तो ताले टूटते थे, घर के दरवाजे खुलते थे और चोर दिखाई देता था। आज चोरी होती है तो मोबाइल स्क्रीन पर सिर्फ एक मैसेज आता है - 'Transaction Successful~' अपराधी दिखाई नहीं देता, लेकिन नुकसान वास्तविक होता है। साइबर अपराध के नए-नए रूप सामने आ रहे हैं। कभी KYC अपडेट के नाम पर कॉल आता है, कभी बैंक मैसेज बनकर फर्जी लिंक भेजा जाता है, कभी नकली सरकारी वेबसाइट से लोगों को फँसाया जाता है, तो कभी 'डिजिटल अरेस्ट' जैसे शब्दों से डराकर पैसे निकलवा लिए जाते हैं। निवेश के नाम पर फर्जी ऐप बनते हैं और लोन ऐप के जरिए ब्लैकमेलिंग होती है। अपराधी अब हथियार लेकर नहीं आते, वे डेटा लेकर आते हैं। यह अपराध इसलिए और खतरनाक है क्योंकि पीड़ित को यह समझ ही नहीं आता कि वह कब और कैसे ठगा गया।

इन ठगी के मामलों में सबसे ज्यादा शिकार वही लोग बनते हैं जो तकनीक से कमजोर हैं - बुजुर्ग, ग्रामीण नागरिक, कम पढ़े-लिखे लोग और मध्यम वर्ग। एक पेंशनर, जिसने पूरी जिंदगी बैंक की लाइन में लगकर पैसे जमा किए, आज एक फोन कॉल पर अपनी सारी पूंजी खो देता है। यह केवल आर्थिक नुकसान नहीं है, यह मानसिक अपमान भी है। व्यक्ति खुद को असहाय महसूस करता है और व्यवस्था पर से उसका भरोसा टूटने लगता है। जब कोई व्यक्ति ठगी का शिकार होता है तो सबसे पहले बैंक और कंपनियाँ यही कहती हैं कि 'आपने OTP क्यों दिया?' या 'आपने लिंक क्यों खोला?' सवाल यह है कि पूरी जिम्मेदारी सिर्फ उपभोक्ता की क्यों मानी जाती है। क्या बैंक और डिजिटल कंपनियों का सिस्टम इतना कमजोर है कि उसे आसानी से तोड़ा जा सकता है? क्या फ्रॉड को पहले रोका नहीं जा सकता था?

सरकार और पुलिस की भूमिका भी इस संकट में सवालों के घेरे में है। हर शहर में पोस्टर लगे हैं - 'OTP किसी को न दें', 'फर्जी कॉल से सावधान रहें'। लेकिन जब ठगी हो जाती है तो ईर्द दर्ज करने में टालमटोल होती है, जांच महीनों चलती है और पैसा वापस मिलने की उम्मीद लगभग खत्म हो जाती है। साइबर अपराध हाई-टेक हैं, लेकिन जांच अब भी लो-टेक है। कई जगहों पर प्रशिक्षित साइबर विशेषज्ञों की कमी है और आधुनिक तकनीक उपलब्ध नहीं है। नतीजा यह होता है कि अपराधी तेजी से आगे निकल जाता है और पीड़ित पीछे छूट जाता है।

सरकार डिजिटल साक्षरता की बात करती है, लेकिन वास्तविकता यह है कि डिजिटल सिस्टम आम आदमी से तेज हो गया है। इससे भविष्य में एक नया वर्ग बनेगा - डिजिटल सक्षम और डिजिटल शोषित। आज सवाल केवल पैसे का नहीं, डेटा का भी है। आधार, मोबाइल नंबर, बैंक विवरण, मेडिकल रिपोर्ट, चेहरा और आवाज - सब कुछ डिजिटल रूप में संग्रहीत है। यह डेटा नई संपत्ति बन चुका है। पर यह स्पष्ट नहीं है कि यह डेटा कितना सुरक्षित है और किसके हाथों में जा रहा है। कौन देख रहा है हमारी निजी जानकारी और कौन उसे बेच रहा है, यह आम नागरिक को पता नहीं। डिजिटल भारत धीरे-धीरे निगरानी भारत बन सकता है, जहाँ हर गतिविधि पर नजर रखी जा सके। कानून की स्थिति भी कमजोर दिखाई देती है। आईटी एक्ट और साइबर कानून मौजूद हैं, लेकिन उनकी सज़ा हल्की है और प्रक्रिया लंबी है। आम नागरिक को यह भी नहीं पता कि शिकायत कहाँ और कैसे दर्ज करनी है। अपराधी तकनीक से तेज हैं और कानून कागजों में उलझा हुआ है। कानून तभी प्रभावी होता है जब वह जल्दी लागू हो, पीड़ित को राहत मिले और अपराधी को सजा मिले। आज यह तीनों बातें पूरी नहीं हो पा रही हैं।

मीडिया और समाज की भूमिका भी कम जिम्मेदार नहीं है। मीडिया डिजिटल क्रांति के फायदे गिनाता है, लेकिन ठगी की कहानियाँ कुछ दिनों में भूल जाता है। समाज भी अक्सर पीड़ित से कहता है कि 'आपने ही गलती की होगी।' यह सोच खतरनाक है, क्योंकि इससे अपराधी और मजबूत होते हैं और पीड़ित चुप हो जाता है। अगर हर पीड़ित को दोषी ठहराया जाएगा तो व्यवस्था कभी सुधरेगी नहीं। बैंक और डिजिटल कंपनियों की जवाबदेही तय करनी होगी कि फ्रॉड की स्थिति में उपभोक्ता को मुआवजा मिले। साइबर पुलिस को आधुनिक तकनीक और प्रशिक्षण देना होगा तथा फास्ट ट्रैक साइबर अदालतें बनानी होंगी। डेटा सुरक्षा कानून को सख्त करना होगा ताकि नागरिक की निजता सुरक्षित रह सके। चेतावनी और जागरूकता प्रणाली सरल भाषा में, हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं में लागू करनी होगी।

अगर तकनीक आगे बढ़े और नागरिक पीछे छूट जाए तो यह विकास नहीं, शोषण है। डिजिटल भारत को सुविधा, सुरक्षा, पारदर्शिता और जवाबदेही - इन चारों की एक साथ आवश्यकता है। डिजिटल भारत की दिशा यह तय करेगी कि हम प्रगति की ओर जा रहे हैं या नियंत्रण की ओर। अगर आज सवाल नहीं उठाए गए तो कल जवाब नहीं मिलेंगे। अगर आज व्यवस्था नहीं सुधरी तो कल नुकसान और बढ़ेगा। डिजिटल भारत तभी सफल होगा जब हर नागरिक सुरक्षित होगा। वरना यह सुविधा नहीं, एक बड़ा डिजिटल धोखा कहलाएगा। तकनीक अगर मानव की सेवा करे तो वह विकास है, और अगर मानव को असहाय बना दे तो वही तकनीक सबसे बड़ा खतरा बन जाती है। ■ *-एम. पाठारे*

महाराष्ट्र की पहली महिला डिप्टी सीएम

अजित के निधन के चौथे दिन पत्नी सुनेत्रा उपमुख्यमंत्री बनीं

१. सुनेत्रा डिप्टी सीएम, पर 'दादा' जितनी ताकत नहीं
२. वित्त मंत्रालय सीएम के पास
३. घट गई पवार पावर

अजित पवार की पत्नी सुनेत्रा पवार शनिवार को महाराष्ट्र की पहली महिला डिप्टी सीएम बन गईं। राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने लोकभवन में सुनेत्रा को शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह करीब १२ मिनट तक चला। शरद पवार इस समारोह में नहीं पहुंचे। इससे पहले दिन में NCP विधायक दल और विधान परिषद सदस्यों की विधान भवन में बैठक बुलाई गई थी, जिसमें सुनेत्रा को पार्टी नेता चुना गया था। डिप्टी CM की शपथ से पहले सुनेत्रा ने राज्यसभा के सांसद पद से इस्तीफा दे दिया।

सुनेत्रा को राज्य उत्पादन शुल्क, खेल एवं युवा कल्याण और अल्पसंख्यक विकास/औकाफ विभाग दिए गए हैं। वहीं सीएम देवेंद्र फडणवीस ने वित्त विभाग अपने ही पास रखा है। अजित पवार की तीन दिन पहले २८ जनवरी को बारामती में प्लेन क्रैश में मौत के बाद डिप्टी CM पद खाली हो गया था।

शपथ के बाद उन्होंने X पर लिखा- इस मुश्किल समय में महाराष्ट्र के लोगों का प्यार और सपोर्ट ही मेरी सबसे बड़ी ताकत है। आपके भरोसे के साथ, मैं दादा के आदर्शों को जिंदा रखते हुए नई उम्मीद के साथ आगे बढ़ूंगी।

महाराष्ट्र की राजनीति में बड़ा बदलाव देखने को मिला है। सुनेत्रा पवार ने उपमुख्यमंत्री पद की शपथ लेकर इतिहास रच दिया है और वह राज्य की पहली महिला डिप्टी सीएम बन गई हैं। हालांकि मंत्रालयों के बंटवारे के बाद यह साफ हो गया है कि उन्हें उतनी ताकत नहीं मिली, जितनी पहले अजित पवार के पास थी। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने वित्त और योजना जैसे अहम विभाग अपने पास रख लिए हैं।

राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने मुंबई में आयोजित समारोह में सुनेत्रा पवार को पद की शपथ दिलाई। इस दौरान उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे भी मौजूद रहे। शपथ के बाद सबसे ज्यादा चर्चा इस बात को लेकर रही कि सुनेत्रा को कौन-कौन से विभाग मिलेंगे। सरकार की ओर से मंत्रालयों का बंटवारा पूरा कर राज्यपाल को इसकी जानकारी भेज दी गई है। मंत्रालयों के आवंटन के मुताबिक वित्त विभाग, जो पहले स्वर्गीय अजित पवार के पास था, अब मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस संभालेंगे। इसके साथ ही योजना विभाग भी उनके पास रहेगा। इसका मतलब है कि २०२६ का राज्य बजट फडणवीस ही पेश करेंगे। गौरतलब है कि वह २०२३ में भी वित्त विभाग संभाल चुके हैं। वित्त जैसे महत्वपूर्ण विभाग का मुख्यमंत्री के पास रहना राजनीतिक रूप से अहम माना जा रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सुनेत्रा पवार को बधाई देते हुए कहा कि राज्य की पहली महिला डिप्टी सीएम के रूप में वह जनता के कल्याण के लिए निरंतर काम करेंगी और स्वर्गीय अजित दादा पवार के विजन को आगे बढ़ाएंगी। उनके इस संदेश को राजनीतिक तौर पर महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस पर सुनेत्रा ने कहा कि आपने जो आशीर्वाद दिया है, वह मेरे लिए प्रेरणादायक है। जैसे ही मैं महाराष्ट्र की सेवा के लिए नई जिम्मेदारी शुरू कर रही हूं, आपके शब्दों ने लोक कल्याण के काम के लिए मेरा आत्मविश्वास बढ़ा दिया है। राज्य के लोगों की भलाई के लिए ईमानदारी और समर्पण की भावना से काम करने का मेरा संकल्प इससे और मजबूत हो गया है। आपके भरोसे के लिए दिल से धन्यवाद।

शपथ ग्रहण समारोह के दौरान सुनेत्रा पवार सफेद साड़ी में नजर आईं। जैसे ही उन्होंने शपथ लेकर दस्तावेजों पर हस्ताक्षर किए, समारोह स्थल अजित दादा अमर रहें के नारों से गूंज उठा। यह नारेबाजी बताती है कि अजित पवार की राजनीतिक विरासत अब भी समर्थकों के बीच मजबूत है। वहीं, नए मंत्रालय बंटवारे ने यह संकेत दिया है कि महाराष्ट्र की सत्ता में संतुलन बनाए रखने की कोशिश की जा रही है। ■

आसमान में गुम दर्दनाक उड़ान!

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री और एनसीपी नेता अजित पवार का विमान हादसे में निधन हो गया है. बुधवार सुबह बारामती में लैंडिंग के दौरान उनका चार्टर्ड विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया और देखते ही देखते आग की भीषण लपटों में घिर गया. विमान का मलबा कई हिस्सों में बिखर गया. घटना के समय का भयावह वीडियो सामने आया है. DGCA के अनुसार, विमान इमरजेंसी लैंडिंग करते समय नियंत्रण खो बैठा. रनवे को छूते ही उसने तेज झटका खाया और कुछ ही पलों में जमीन से टकराकर बिखर गया. मौके से सामने आए वीडियो में आग के ऊंचे गुबार और धधकते हिस्सों को साफ देखा जा सकता है. इस विमान हादसे में अजित पवार समेत विमान में सवार सभी लोग मारे गए. अजित पवार का अंतिम संस्कार आज पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा. हादसे में विमान में मौजूद सभी छह लोगों की मौत हो गई. जिसमें अजित पवार, उनके सुरक्षा अधिकारी, एक परिचारक और दो क्रू मेंबर थे. यह विमान थी वू ४५ था और मुंबई से चार्टर कर बारामती के लिए उड़ान भरी थी. एयरपोर्ट अधिकारियों के अनुसार, लैंडिंग के दौरान विमान रनवे से साइड में फिसल गया और टकराते ही विस्फोट हो गया, जिससे आग तेजी से फैल गई. प्रशासन ने इलाके को सील कर दिया है और हादसे के कारणों की जांच जारी है. शुरुआती संकेतों के मुताबिक, तकनीकी खराबी और लैंडिंग के दौरान अस्थिरता को वजह माना जा रहा है; हालांकि विस्तृत जांच रिपोर्ट का इंतजार है. अजीत पवार की अचानक मौत ने महाराष्ट्र की राजनीति में ऐसा शून्य पैदा कर दिया है, जिसे भर पाना लंबे समय तक मुश्किल माना जा रहा है.

आधुनिक युग में विमान को सबसे सुरक्षित और तेज़ यात्रा माध्यम माना जाता है, लेकिन इतिहास गवाह है कि यही तकनीक कई बार सत्ता, शक्ति और प्रतिष्ठा के प्रतीकों को एक ही पल में मलबे में बदल चुकी है। जब किसी

VIP विमान हादसे

भारत में विमानन इतिहास केवल तकनीकी प्रगति की कहानी नहीं है, बल्कि उसमें कई ऐसे दर्दनाक अध्याय भी दर्ज हैं जब देश की राजनीति, सेना और प्रशासन से जुड़े शीर्ष लोग हवाई हादसों का शिकार हुए। इन दुर्घटनाओं ने न सिर्फ परिवारों को झकझोरा बल्कि राष्ट्रीय राजनीति की दिशा भी बदल दी। भारत के विमान हादसों का इतिहास यह याद दिलाता है कि सत्ता और सुरक्षा भी प्रकृति और तकनीक के सामने असहाय हो जाती है। इन त्रासदियों से मिले सबक ने देश की विमानन और सैन्य सुरक्षा व्यवस्था को अधिक सतर्क बनाया है, लेकिन हर हादसा यह प्रश्न छोड़ जाता है – क्या हम पर्याप्त तैयार हैं?

आम नागरिक का विमान दुर्घटनाग्रस्त होता है, वह एक त्रासदी होती है; लेकिन जब उसी विमान में देश का नेता, मुख्यमंत्री, मंत्री या सेना प्रमुख सवार हो – तो वह केवल हादसा नहीं रहता, बल्कि एक राष्ट्र की सामूहिक पीड़ा बन जाता है।

भारत में भी ऐसे कई विमान हादसे हुए हैं जिन्होंने राजनीति की दिशा बदल दी, परिवारों को उजाड़ दिया और पूरे देश को शोक में डुबो दिया। संजय गांधी से लेकर माधवराव सिंधिया, लोकसभा अध्यक्ष जी.एम.सी. बालयोगी से लेकर भारत के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ जनरल बिपिन रावत तक – इन दुर्घटनाओं ने यह साबित कर दिया कि आसमान में पद, शक्ति और प्रोटोकॉल कोई सुरक्षा कवच नहीं बन पाते।

इन हादसों के पीछे कभी खराब मौसम जिम्मेदार रहा, कभी तकनीकी खामी और कभी मानवीय भूल। लेकिन हर दुर्घटना के बाद एक ही सवाल उठा –

क्या वीआईपी यात्राओं की सुरक्षा व्यवस्था पर्याप्त है? और क्या इन त्रासदियों से हमने सच में सबक लिया? यह विशेष रिपोर्ट उन विमान हादसों की पड़ताल करती है जिनमें देश की बड़ी हस्तियाँ सवार थीं। यह केवल मौतों की सूची नहीं, बल्कि उन घटनाओं की कहानी है जिन्होंने भारत की राजनीति, प्रशासन और सुरक्षा व्यवस्था को झकझोर कर रख दिया। यह रिपोर्ट याद दिलाती है कि आसमान की ऊँचाई जितनी बड़ी होती है, गिरने पर चोट उतनी ही गहरी होती है – चाहे वह आम नागरिक हो या देश का सबसे बड़ा पदाधिकारी।

इन हादसों ने बार-बार यह साबित किया है कि VIP होने के बावजूद हवाई यात्रा जोखिम से मुक्त नहीं है खराब मौसम, तकनीकी खराबी और मानवीय त्रुटि मुख्य कारण रहे। कई हादसों के बाद उड़ान सुरक्षा नियमों को सख्त किया गया। विशेषज्ञों का कहना है कि वीआईपी उड़ानों के लिए अलग से उच्च स्तरीय सुरक्षा प्रोटोकॉल की आवश्यकता है। लेकिन विमान हादसा पद नहीं देखता – राष्ट्रपति हो या आम नागरिक।

१. संजय गांधी विमान हादसा (१९८०)

तारीखः २३ जून १९८०

स्थानः सफदरजंग एयरपोर्ट, नई दिल्ली

व्यक्तिः संजय गांधी (कांग्रेस नेता, इंदिरा गांधी के पुत्र)

संजय गांधी एक प्रशिक्षण उड़ान के दौरान अपने निजी विमान को स्वयं उड़ा रहे थे। टेकऑफ के तुरंत बाद विमान संतुलन खो बैठा और रनवे के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस हादसे में उनकी मौके पर ही मौत हो गई। यह दुर्घटना भारतीय राजनीति के लिए बड़ा झटका साबित हुई।

२. माधवराव सिंधिया विमान हादसा (२००१)

तारीखः ३० सितंबर २००१

स्थानः मैनपुरी, उत्तर प्रदेश

व्यक्तिः माधवराव सिंधिया (पूर्व केंद्रीय मंत्री)

दिल्ली से कानपुर जा रहा चार्टर्ड विमान खराब मौसम में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में सवार सभी लोग मारे गए। माधवराव सिंधिया की मृत्यु को कांग्रेस पार्टी के लिए अपूरणीय क्षति माना गया।

३. जनरल बिपिन रावत हेलीकॉप्टर हादसा (२०२१)

तारीखः ८ दिसंबर २०२१

स्थानः कुन्नूर, तमिलनाडु

व्यक्तिः भारत के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (CDS) जनरल बिपिन रावत, उनकी पत्नी और ११ अन्य सैन्य अधिकारी

वेलिंगटन से सुलूर जा रहा सेना का Mi-17V5 हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। जांच में सामने आया कि खराब मौसम और मानवीय त्रुटि इस हादसे के प्रमुख कारण थे। यह भारतीय सैन्य इतिहास की सबसे दुखद दुर्घटनाओं में से एक रही।

४. डी. राजा रेड्डी (मुख्यमंत्री का निजी विमान हादसा) - १९९२

स्थानः आंध्र प्रदेश

एक निजी विमान दुर्घटना में राज्य के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी और राजनीतिक सलाहकार मारे गए। इस हादसे ने वीआईपी उड़ानों की सुरक्षा पर सवाल खड़े किए।

५. जी.एम.सी. बालयोगी हेलीकॉप्टर हादसा (२००२)

तारीखः ३ मार्च २००२

स्थानः आंध्र प्रदेश

व्यक्तिः लोकसभा अध्यक्ष जी.एम.सी. बालयोगी

हेलीकॉप्टर दुर्घटना में तत्कालीन लोकसभा स्पीकर बालयोगी की मृत्यु हो गई। यह स्वतंत्र भारत में पहली बार था जब संसद के अध्यक्ष का इस तरह आकस्मिक निधन हुआ।

६. के.एस. सदाशिव राव और अन्य मंत्री (१९६३)

स्थानः महाराष्ट्र

एक छोटे विमान के क्रैश में कई वरिष्ठ नेता मारे गए। यह शुरुआती दशक की गंभीर राजनीतिक त्रासदी थी।

७. अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री दोरजी खांडू (२०११)

तारीखः ३० अप्रैल २०११

स्थानः तवांग क्षेत्र

व्यक्तिः अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री दोरजी खांडू

हेलीकॉप्टर लापता होने के बाद मलबा पहाड़ों में मिला। खराब मौसम इस हादसे का कारण माना गया।

८. पी. नरसिंह राव के सहयोगियों का

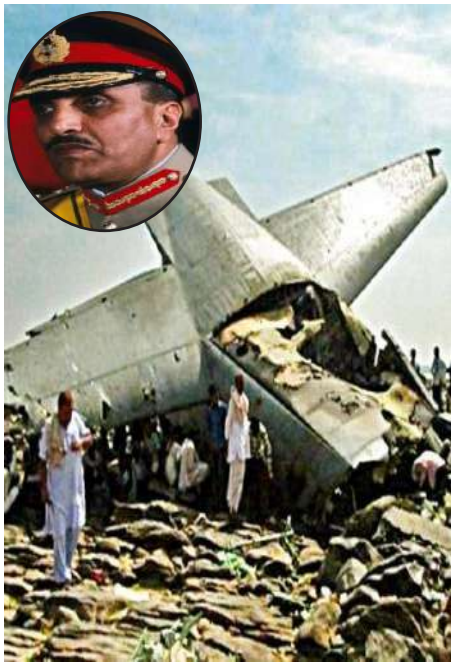

विमान हादसा (१९९३)

कांग्रेस नेताओं को ले जा रहा छोटा विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ, जिसमें कई वरिष्ठ राजनीतिक कार्यकर्ता मारे गए।

९. पूर्व सांसद जी.एम. खान (१९७८)

राजनीतिक दौरे के दौरान विमान हादसे में मृत्यु।

१०. वायुसेना के वरिष्ठ अधिकारियों का विमान हादसा (१९६६)

एक सैन्य विमान दुर्घटना में वायुसेना के कई शीर्ष अधिकारी मारे गए। इससे भारतीय वायुसेना की उड़ान सुरक्षा नीतियों में बड़ा बदलाव हुआ।

११. पोलैंड के राष्ट्रपति - २०१०
लेख काचिंस्की (President of Poland)
रूस (Smolensk)
मृतकः ९६ लोग
इनमें शामिल थेः
राष्ट्रपति
सेना प्रमुख
संसद सदस्य
सेंट्रल बैंक गवर्नर
पूरा राष्ट्रीय नेतृत्व एक साथ खत्म हो गया।

१२. ईरान के राष्ट्रपति - २०२४ (हेलीकॉप्टर क्रैश)
इब्राहिम रईसी (President of Iran)
ईरान (पहाड़ी इलाका)
मौसम खराब होने से हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त
राष्ट्रपति और विदेश मंत्री की मौत

१३. पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जिया-उल-हक - १९८८
बहावलपुर, पाकिस्तान
C-१३० विमान क्रैश
सभी सवार मारे गए
अब तक रहस्यमय दुर्घटना (संभावित साजिश)

१४. रवांडा और बुरुंडी के राष्ट्रपति - १९९४
किगाली एयरपोर्ट
दोनों राष्ट्रपतियों का विमान मार गिराया गया
इस घटना के बाद रवांडा नरसंहार शुरू हुआ (८ लाख मौतें)

१५ संयुक्त राष्ट्र महासचिव - १९६१
डैग हैमरशोल्ड (UN Secretary-General)
अफ्रीका (Zambia)
UN इतिहास की सबसे बड़ी त्रासदी

१६. मोज़ाम्बिक के राष्ट्रपति - १९८६
समोरा माशेल
दक्षिण अफ्रीका सीमा
पूरा विमान दुर्घटनाग्रस्त

१७. चिली के रक्षा मंत्री और सैन्य अधिकारी - १९७३
पूरा सैन्य विमान क्रैश
देश की राजनीति बदल गई

१८ ब्राज़ील फुटबॉल टीम (Chapecoense) - २०१६
कोलंबिया
७१ मौतें
खिलाड़ी, कोच, पत्रकार सभी मारे गए

१९ अमेरिकी गायक Buddy Holly - १९५९
USA
इसे कहा गयाः
'The Day the Music Died' ■

रूस (Smolensk)

JOB VACANCY

ADVERTISING & SALES EXECUTIVE

PRINT & DIGITAL MAGAZINE

Location: Mumbal (Field + Office)

Employment Type: Full-time / Part-time

ROLE & RESPONSIBILITIES

- Identify and approach potential advertisers across sectors (corpotates, SMEs, Government, Institutions)
- Present advertising options and packages for the magazine (print & digital)
- Maintain strongrelationships with existing and new clients to ensure repeat business

SALARY & BENEFITS

- Base salary- high commission structure
- Potential earnings ₹40,000–50.000/mont for achieving targets
- Performance-based incentives and bonuses

HOW TO APPLY:

Send a **swarnim mmbai@yahoo.in**

To: **9082391833**

SWARNIM MUMBAI

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

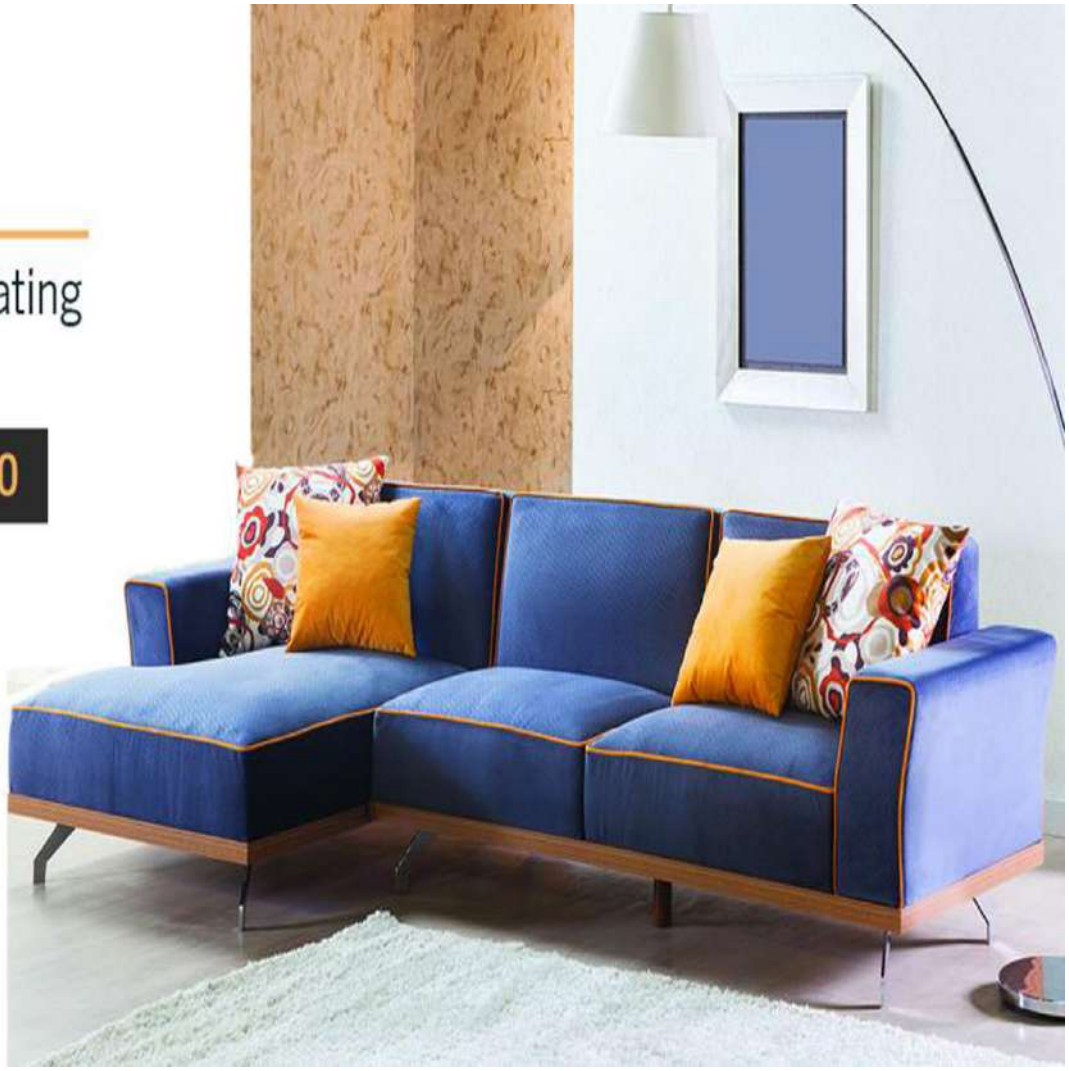

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार
फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर
एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

केंद्रीय बजट 2026-27

बजट पेश करतीं वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण

वित्त मंत्री ने कहा कि माघ पूर्णिमा के पवित्र अवसर और गुरु रविदास की जन्म जयंती के मौके पर कर्तव्य भवन में तैयार हुआ यह पहला बजट ३ कर्तव्यों से प्रेरित हैः

पहला कर्तव्य है- उत्पादकता और प्रतिस्पर्धा को बढ़ाते हुए तथा उथल-पुथल भरी वैश्विक स्थिति के प्रति सहनीयता का निर्माण करके आर्थिक वृद्धि को तेज करना तथा इसे बनाए रखना ।

दूसरा कर्तव्य है- लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करना और उनके क्षमता का निर्माण करना; भारत की समृद्धि के मार्ग में उन्हें मजबूत भागीदार बनाना।

तीसरा कर्तव्य सबका साथ-सबका विकास के विज़न से जुड़ा है। यह सुनिश्चित करेगा कि प्रत्येक परिवार, समुदाय, क्षेत्र के पास संसाधनों, सुविधाओं तथा सार्थक भागीदारी के लिए अवसरों तक पहुंच की सुविधा हो।

युवा शक्ति संचालित बजट, जो गरीब, शोषित और वंचित समुदायों के प्रति सरकार के संकल्प पर जोर देता है, पेश करते हुए वित्त मंत्री ने कहा कि देश विकसित भारत हासिल करने की दिशा में विश्वास से भरे कदम उठाता रहेगा, समावेश के साथ महत्वाकांक्षा का संतुलन करेगा। बढ़ते व्यापार और पूंजी की जरूरतों के साथ एक बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था के रूप में भारत को वैश्विक बाजारों के साथ मजबूती से एकीकृत होना चाहिए, निर्यात में वृद्धि करनी चाहिए तथा लम्बी अवधि के स्थिर निवेश को आकर्षित करना चाहिए।

उन्होंने उल्लेख किया कि देश बाहरी वातावरण का सामना कर रहा है, जिसमें व्यापार और बहु-पक्षवाद को नुकसान हुआ है तथा संसाधनों और आपूर्ति श्रृंखलाओं तक पहुंच में बाधाएं आई है। नई तकनीकें निर्माण प्रणालियों में बदलाव ला रही है, जबकि जल, ऊर्जा तथा महत्वपूर्ण खनिजों की मांग तेजी से बढ़ रही है।

वित्त मंत्री ने कहा कि २०२५ के स्वतंत्रता दिवस पर प्रधानमंत्री की घोषणा के बाद, ३५० से ज्यादा सुधारों की शुरूआत की गई है। इनमें जीएसटी सरलीकरण, श्रम संहिताओं की अधिसूचना, अनिवार्य गुणवत्ता नियंत्रण आदेशों का युक्तिकरण शामिल है। उच्च स्तरीय समितियां गठित की गई है और इसके साथ नियम समाप्त करने तथा अनिपालन जरूरतों को कम करने के लिए केन्द्र सरकार राज्यों के साथ मिलकर काम कर रही है।

पहला कर्तव्य आर्थिक वृद्धि को तेज करना व बनाए रखना है। पहले कर्तव्य के तहत छह क्षेत्रों में हस्तक्षेप कार्यक्रमों का प्रस्ताव दिया गया है।

७ रणनीतिक और सीमा क्षेत्रों में विनिर्माण

का विस्तार करना

विरासत औद्योगिक क्षेत्रों का पुनर्निर्माण करना

चैम्पियन एमएसएमई बनाना

अवसंरचना पर सशक्त बल देना

लम्बी अवधि की ऊर्जा सुरक्षा और स्थिरता को सुनिश्चित करना

नगर आर्थिक क्षेत्र विकसित करना

वैश्विक बायोफॉर्मा निर्माण केन्द्र के रूप में भारत को विकसित करने के लिए बायोफॉर्मा शक्ति, जिसका कुल परिव्यय १०,००० करोड़ रुपये है, बायोलॉजिक्स और बायोसिमिलर्स के घरेलू उत्पादन के लिए अगले पांच वर्षों में इको-सिस्टम का निर्माण करेगी। रणनीति में शामिल है- तीन नए राष्ट्रीय औषधि शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईपीईआर) और सात वर्तमान संस्थानों के उन्नयन के साथ बायोफॉर्मा पर केन्द्रित नेटवर्क। यह १००० मान्यता प्राप्त भारत क्लिनिक जांच स्थलों के एक नेटवर्क का निर्माण करेगा। वैश्विक मानक हासिल करने तथा एक समर्पित वैज्ञानिक समीक्षा कैडर व विशेषज्ञों के माध्यम से समयावधि मंजूर करने के लिए केन्द्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन को मजबूत किया जाएगा।

श्रम गहन वस्त्र क्षेत्र के लिए, पांच उपभागों के साथ एकीकृत कार्यक्रम का प्रस्ताव किया गया है:

रेशम, ऊन और जूट जैसे प्राकृतिक फाइबर, मानव निर्मित फाइबर और नए युग के फाइबरों में आत्मनिर्भरता के लिए राष्ट्रीय फाइबर योजना; मशीनरी, प्रौद्योगिकी उन्नयन और सामान्य परीक्षण एवं प्रमाणन केन्द्रों के लिए पूंजीगत सहायता के साथ पारम्परिक क्लस्टरों के आधुनिकीकरण के लिए वस्त्र विस्तार एवं रोजगार योजना; मौजूदा योजनाओं को एकीकृत एवं सुदृढ़ करने और बुनकरों एवं कारीगरों के लिए लक्षित सहायता सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय हथकरघा एवं हस्तशिल्प कार्यक्रम; वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी और टिकाऊ वस्त्र और परिधानों को बढ़ावा देने के लिए टेक्स-इको पहल; उद्योग जगत और शैक्षणिक संस्थानों के सहयोग से वस्त्र कौशल इको-सिस्टम के आधुनिकीकरण और उन्नयन के लिए समर्थ २.० ।

बजट में क्या होगा सस्ता क्या महंगा

आपकी थाली की सब्जी से लेकर आपके स्मार्टफोन तक, ज्यादातर चीजों के दाम GST काउंसिल तय करती है, न कि वित्त मंत्री। बजट में तो बस इम्पोर्ट ड्यूटी के घटने-बढ़ने से कुछ सामान ऊपर-नीचे होते हैं।

१. वित्त मंत्री बोलीं- इलेक्ट्रॉनिक इक्विपमेंट के लिए ४० हजार करोड़ देंगे

२. १००० मान्यता प्राप्त क्लीनिकल साइट्स बनाई जाएंगी, जहां साइंटिफिक रिव्यू हो सकेंगे।

३. सेमीकंडक्टर मिशन - प्रोडक्शन और इंडियन आईपी बनाने, सप्लाई चेन बनाने के लिए प्रावधान किया गया है।

४. इलेक्ट्रॉनिक इक्विपमेंट बनाने के लिए ४० हजार करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है।

५. रेयर अर्थ मटेरियल के लिए ओडिशा, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश में डेडिकेटेड फेसिलिसिटी बनाने की पहल की गई है। इसके लिए डेडिकेटेड मिनरल पार्क बनाए जाएंगे।

६. हाई टेक टूल रूम दो लोकेशन पर हाई प्रेसिजन कंपोनेंट्स बनाने के लिए - इसके तहत टनल बोरिंग मशीन से लेकर मल्टी स्टोरीज में फायर फाइटिंग सिस्टम तक बनेंगे।

विकास के प्रमुख इंजन के रूप में एमएसएमई को मान्यता देते हुए, १०,००० करोड़ रुपये के एसएमई विकास निधि का प्रस्ताव दिया गया है ताकि भविष्य के चैम्पियनों का निर्माण किया जा सके और निर्धारित विशेषताओं के आधार पर उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जा सके।

वित्त मंत्री ने कहा कि सार्वजनिक पूंजीगत व्यय में गुणात्मक वृद्धि हुई है जो वित्त वर्ष २०१४-१५ के २ लाख करोड़ रुपये से बढ़कर बीई २०२५-२६ में ११.२ लाख करोड़ रुपये

हो गई है। उन्होंने प्रस्ताव दिया कि इस गति को बनाए रखने के लिए वित्त वर्ष २०२६-२७ में इसे बढ़ाकर १२.२ लाख करोड़ रुपये किया जाएगा।

कार्गो के पर्यावरण रूप से टिकाऊ आवाजाही को बढ़ावा देने के लिए वित्त मंत्री ने नए समर्पित फ्रेट कॉरिडोर का प्रस्ताव दिया, जो पूर्व में दानकुनी को पश्चिम के सूरत से जोड़ेगा; अगले पांच वर्षों में २० नए राष्ट्रीय जलमार्गों (एनडब्ल्यू) का संचालन प्रारंभ होगा। इसकी शुरूआत ओड़िशा में एनडब्ल्यू ५ से की जाएगी, जो खनिज की प्रचुरता वाले क्षेत्र तालचर और अंगुल व कलिंग नगर जैसै औद्योगिक केन्द्र को पारादीप और घामरा पत्तनों से जोड़ेगा। आवश्यक कार्यबल के विकास के लिए क्षेत्रीय उत्कृष्टता केंद्रों के रुप में प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना की जाएगी।

इस बजट का लक्ष्य शहरी आर्थिक क्षेत्रों के विशिष्ट विकास कारकों के आधार पर, शहरी आर्थिक क्षेत्रों (सीईआर) का मानचित्रण करके समूहों की आर्थिक स्थिति का उपयोग करने के लिए शहरों की क्षमता को और अधिक बढ़ाना है। सुधार-सह-परिणाम आधारित वित्तपोषण तंत्र से चुनौती मोड के माध्यम से उनकी योजनाओं को लागू करने में प्रति सीईआर ५ हजार करोड़ रुपये का आवंटन का प्रस्ताव दिया गया है।

पर्यावरणीय रूप से सतत् यात्री प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिए, हम शहरों के बीच विकास संयोजक के रूप में सात उच्च-गति रेल कॉरीडोर विकसित किए जाएंगे-

मुंबई-पुणे
पुणे-हैदराबाद
हैदराबाद-बेंगलुरु
हैदराबाद-चेन्नई
चेन्नई-बेंगलुरु
दिल्ली-वाराणसी
वाराणसी-सिलीगुड़ी।

वित्त मंत्री ने कहा कि दूसरा कर्तव्य आकांक्षाओं को पूरा करना और क्षमता निर्माण करना है। सरकार के सतत् और सुधार उन्मुख प्रयासों के जरिए २५ करोड़ व्यक्ति गरीबी की रेखा से ऊपर उठ गए है।

चिकित्सा पर्यटन सेवाओं के लिए भारत को एक वैश्वक केन्द्र के रूप में बढ़ावा देने के लिए वित्त मंत्री ने राज्यों को सहायता देने के लिए एक योजना का प्रस्ताव दिया, जिसके तहत राज्य निजी क्षेत्र के सहयोग से पांच क्षेत्रीय चिकित्सा केन्द्र स्थापित कर सकते है। यह केन्द्र एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल भवन के रूप में कार्य करेंगे, जिनमें चिकित्सा, शिक्षा और शोध करने की सुविधाएं मौजूद होगी। इन केन्द्रों में आयुष केन्द्र, चिकित्सा केन्द्र, पर्यटन केन्द्र एवं स्वास्थ्य जांच, बाद के देखभाल और पुनर्वास की अवसंरचना होंगी। यह केन्द्र डॉक्टर और एएचपी के साथ-साथ स्वास्थ्य पेशेवरों के लिए विभिन्न नौकरियों का विकल्प प्रस्तुत करेगे।

पशु चिकित्सा पेशेवरों की संख्या २०,०००

मिडिल क्लास की ५ बड़ी 'विशलिस्ट'

१. इनकम टैक्सः नए टैक्स रिजीम में स्टैंडर्ड डिडक्शन ७५ हजार रुपए से बढ़ाकर १ लाख हो सकता है। इससे सैलरीड की १३ लाख तक की इनकम टैक्स-फ्री हो सकती है।

२. किसान सम्मान निधिः पीएम-किसान योजना की राशि ३ हजार रुपए बढ़ाकर ६ हजार से ९ हजार की जा सकती है। बीते करीब २-३ साल से इसे बढ़ाने की बात हो रही है।

३. रेल इंफ्रास्ट्रक्चरः वेटिंग लिस्ट कम करने के लिए ३००+ नई अमृत भारत और वंदे भारत ट्रेनों का ऐलान हो सकता है। रेलवे को अब तक का सबसे बड़ा फंड मिल सकता है।

४. पीएम सूर्य घर योजनाः बजट में २ kW तक के सोलर सिस्टम पर सब्सिडी को ३० हजार रुपए प्रति किलोवाट से बढ़ाकर ४० हजार करने का ऐलान हो सकता है।

५. आयुष्मान भारतः आयुष्मान भारत (PM-JAY) योजना का दायरा बढ़ाया जा सकता है। अभी ७० साल से ऊपर के बुजुर्गों को इस योजना का फायदा मिल रहा है, जिसे घटाकर ६० साल किया जा सकता है।

तक करने के लिए ऋण से जुड़े पूंजीगत सब्सिडी का प्रस्ताव दिया गया है ताकि निजी क्षेत्र में पशु चिकित्सा और पारावेट कॉलेज, वेटेनरी, पशु चिकित्सालय, जांच प्रयोगशाला, प्रजनन सुविधा की स्थापना के लिए समर्थन दिया जा सके।

भारत का एनीमेशन, विजुअल इफेक्ट, गेमिंग और कॉमिक्स (एवीजीसी) क्षेत्र एक बढ़ता हुआ उद्योग है। अनुमान है कि २०३० तक इस क्षेत्र में २० लाख पेशेवरों की जरूरत होगी। वित्त मंत्री ने भारतीय रचना प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई को समर्थन देने का प्रस्ताव दिया, ताकि संस्थान १५,००० उच्च माध्यमिक विद्यालयों तथा ५०० कॉलेजों में एवीजीसी कंटेट निर्माण लैब की स्थापना कर सके।

उच्च शिक्षा एसटीईएम संस्थानों में अध्ययन और प्रयोगशाला कार्य की लम्बी अवधि छात्राओं के लिए चुनौती पैदा करती है। वीजीएफ/पूंजीगत समर्थन के जरिए प्रत्येक जिले में लड़कियों के लिए एक छात्रावास की स्थापना की जाएगी।

वित्त मंत्री ने वर्तमान के राष्ट्रीय होटल प्रबंधन और केटररिंग प्रौद्योगिकी परिषद का उन्नयन करके राष्ट्रिय आतिथ्य संस्थान की स्थापना करने का प्रस्ताव रखा। यह शिक्षा जगत, उद्योग

बजट २०२६-२७: सराहना, सवाल और सियासत – देश ने कैसे लिया आर्थिक रोडमैप?

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश किया गया केंद्रीय बजट २०२६-२७ सरकार के अनुसार 'विकसित भारत २०४७' की दिशा में एक मजबूत कदम है। लेकिन बजट सामने आते ही देश दो हिस्सों में बंट गया – एक ओर उद्योग जगत और रक्षा क्षेत्र की तालियाँ, दूसरी ओर किसान, मध्यम वर्ग और युवाओं की चिंता।

यह बजट जहां इंफ्रास्ट्रक्चर, रेलवे और रक्षा क्षेत्र में बड़े निवेश का वादा करता है, वहीं आम आदमी को सीधी राहत देने में कमजोर दिखता है।

सरकार का दावा है कि यह बजट रोजगार सृजन, निवेश बढ़ाने और डिजिटल अर्थव्यवस्था को मजबूत करेगा। वित्त मंत्री ने इसे गरीब, किसान, युवा और महिला केंद्रित बजट बताया।

सरकारी प्रवक्ताओं के अनुसारः

रेलवे और सड़क परियोजनाओं से रोजगार बढ़ेगा

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को बल मिलेगा

स्टार्टअप और श्एर्ं को नई ऊर्जा मिलेगी

लेकिन आलोचकों का कहना है कि यह सब दीर्घकालीन योजनाएँ हैं, जिनका फायदा आम जनता को तुरंत महसूस नहीं होगा।

विपक्षः 'यह बजट अमीरों के लिए है'

विपक्ष ने बजट को 'चुनावी और कॉर्पोरेट समर्थक' करार दिया।

कांग्रेस और अन्य दलों का आरोप है कि महंगाई पर कोई ठोस नियंत्रण नीति नहीं

बेरोज़गारी से निपटने की स्पष्ट योजना नहीं

किसानों के लिए MSP और कर्ज़ माफी पर चुप्पी

राहुल गांधी ने बयान दियाः 'यह बजट चंद उद्योगपतियों को फायदा पहुंचाने वाला बजट है, आम जनता को नहीं।'

विपक्ष का हमला राजनीतिक जरूर है, लेकिन आर्थिक असमानता पर उठाए गए सवाल पूरी तरह निराधार भी नहीं हैं।

TMC के अभिषेक बनर्जी बोले- बजट सुने बिना कोई कमेंट नहीं करूंगा

तृणमूल कांग्रेस सांसद अभिषेक बनर्जी बोले- हम बजट भाषण सुनने आए हैं। बजट भाषण सुने बिना मैं अपनी किसी उम्मीद के बारे में बात नहीं करूंगा। अभी मैं कोई कमेंट भी नहीं करूंगा।

प्रियंका गांधी बोलीं- बजट से ज्यादा उम्मीदें नहीं

कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा बोलीं- मुझे बजट से ज्यादा उम्मीदें नहीं हैं, लेकिन देखते हैं।

अखिलेश बोले- क्या सरकार अपने वादों पर खरी उतरी है

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि जिस सरकार से कोई उम्मीद नहीं, उसके बजट से क्या उम्मीद होगी। पिछले कुछ

जगत और सरकार के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करेगा। उन्होंने आगे २० पर्यटनों स्थलों में १०,००० गाइडों के कौशल का उन्नयन करने के लिए एक पायलट योजना का प्रस्ताव रखा। इसके लिए भारतीय प्रबंधन संस्थान के साथ साझेदारी में हाईब्रिड मोड में १२ सप्ताह के एक मानक उच्च गुणवत्ता वाला प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के जरिए गाइडों को प्रशिक्षित किया जाएगा।

खेलो इंडिया कार्यक्रम के जरिए खेल प्रतिभाओं को मार्गदर्शन व सहायता प्रदान करने के कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए वित्त मंत्री ने अगले दशक में खेल क्षेत्र को परिवर्तित करने के लिए खेलो इंडिया मिशन के शुभारंभ का प्रस्ताव रखा।। यह मिशन निम्न सुविधाएं प्रदान करेगा। क.) प्रशिक्षण केन्द्रों के समर्थन से प्रतिभा विकास के लिए एकीकृत तरीका ख.) कोच और सहायककर्मियों का प्रणालीगत विकास ग.) खेल विज्ञान और प्रौद्योगिकी का एकीकरण घ.) खेल संस्कृति को बढ़ावा देने तथा मंच प्रदान करने के लिए प्रतियोगिताएं और लीग ड.) प्रशिक्षण और प्रतियोगिता के लिए खेल अवसंरचना का विकास।

वित्त मंत्री ने कहा कि बजट का तीसरा कर्तव्य जो सबका साथ, सबका विकास के दृष्टिकोण के अनुरूप है, यह सुनिश्चित करता है कि किसानों की आय में वृद्धि हो, दिव्यांगजन सशक्त बनें, मानसिक स्वास्थ्य और ट्रॉमा केयर तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए कमजोर समूहों का सशक्तिकरण हो, विकास और रोजगार के अवसरों में तेजी लाकर पूर्वोदय राज्यों और पूर्वोत्तर क्षेत्र की ओर ध्यान केंद्रित हो।

वित्त मंत्री ने एक भाषीय टूल - भारत विस्तार (कृषि संसाधनों तक पहुंच के लिए वर्चुअल एकीकृत प्रणाली) - का प्रस्ताव किया जो एक बहुभाषीय एआई टूल है और जिसे एआई प्रणाली सहित कृषि संबंधी प्रणालियों के लिए आईसीएआर पैकेज सहित एग्रीस्टैक पोर्टल के रूप में एकीकृत किया गया है। इससे कृषि उत्पादकता में वृद्धि होगी, किसानों को उचित निर्णय लेने में सक्षम बनाएगा और अनुकूल परामर्श सहायता प्रदान करते हुए जोखिम को कम करेगा।

लखपति दीदी कार्यक्रम की सफलता को आगे बढ़ाते हुए, संवर्धित और नवाचार वित्तपोषण के माध्यम से क्लस्टर स्तरीय संगठनों के भीतर सामुदायिक स्वामित्व वाले खुदरा आउटलेट के रूप में स्व-सहायता उद्यम (शी) मार्ट स्थापित किए जाएंगे। वित्त मंत्री ने मानसिक स्वास्थ्य और ट्रॉमा केयर पर सरकार की प्रतिबद्धता दोहराते हुए निमहांस-२ की स्थापना की घोषणा की और रांची तथा तेजपुर में राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य संस्थानों को शीर्ष क्षेत्रीय संस्थानों के रूप में अपग्रेड करने की बात कही।

वित्त मंत्री ने दुर्गापुर में बेहतर संपर्क नोड के साथ एकीकृत पूर्वी तट औद्योगिक कॉरीडोर के विकास, ५ पूर्वोदय राज्यों में ५ पर्यटन स्थलों के निर्माण और ४००० ई-बसों के प्रावधान का प्रस्ताव रखा। उन्होंने अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, असम, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा में बौद्ध सर्किट के विकास हेतु एक योजना का प्रस्ताव रखा। इस योजना में मंदिरों और मठों का संरक्षण, तीर्थस्थल भाषांतरण केंद्र, संपर्क एवं तीर्थ यात्रियों की सुविधाएं शामिल होंगी।

राजकोषीय समेकन

ऋण से जीडीपी अनुपात संशोधित अनुमान २०२५-२६ में जीडीपी के ५६.१ प्रतिशत की तुलना में, बजट अनुमान २०२६-२७ में जीडीपी के ५५.६ प्रतिशत रहने का अनुमान है। गिरता हुआ ऋण और जीडीपी अनुपात धीरे-धीरे ब्याज भुगतान पर व्यय को कम करके प्राथमिक क्षेत्र के व्यय के लिए संसाधनों को मुक्त करेगा। संशोधित अनुमान २०२५-२६ में, राजकोषीय घाटे का अनुमान जीडीपी के ४.४ प्रतिशत रहने का अनुमान है जो २०२५-२६ के बजट अनुमान के बराबर है। ऋण समेकन की नई राजकोषीय दूरदर्शिता के अनुरूप, बजट अनुमान २०२६-२७

में राजकोषीय घाटा जीडीपी का ४.३ प्रतिशत रहने का अनुमान है।

संशोधित अनुमान २०२५-२६

गैर-ऋण प्राप्तियों का संशोधित अनुमान ३४ लाख करोड़ रुपये है। जिनमें से केंद्र की निवल कर प्राप्तियां २६.७ लाख करोड़ रुपये है। कुल व्यय का संशोधित अनुमान ४९.६ लाख करोड़ रुपये है जिनमें से पूंजीगत व्यय लगभग ११ लाख करोड़ रुपये है।

बजट अनुमान २०२६-२७

वर्ष २०२६-२७ में गैर-ऋण प्राप्तियां और कुल व्यय का अनुमान क्रमशः ३६.५ लाख करोड़ रुपये और ५३.५ लाख करोड़ रुपये है। केंद्र की निवल कर प्राप्तियों का अनुमान २८.७ लाख करोड़ रुपये है। राजकोषीय घाटे के वित्तपोषण हेतु, दिनांकित प्रतिभूतियों से निवल बाजार उधारी का अनुमान ११.७ लाख करोड़ रुपये है। शेष वित्तपोषण छोटी बचतों और अन्य स्रोतों से आने की संभावना है। सकल बाजार उधारी का अनुमान १७.२ लाख करोड़ रुपये है।

सालों से यही देखने को मिला है कि बजट ५% लोगों के लिए होता है। सरकार को देखना चाहिए कि जो वादे उन्होंने किए थे, उस पर खरे उतरे हैं।

शेखावत बोले- ये बजट विकसित भारत की दिशा में एक और कदम

केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि विकसित भारत के लक्ष्य को लेकर मोदी सरकार पिछले ११ साल से काम कर रही है। ये बजट विकसित भारत की दिशा में एक और कदम होगा।

शिवराज बोले- ये विकसित और आत्मनिर्भर भारत का बजट

थरूर बोले- वित्त मंत्री की स्कीम्स से क्या नौकरियां मिलेंगी, ये देखना है

कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कहा कि आज देखना है कि वित्त मंत्री क्या बोलती हैं? इकोनॉमिक सर्वे में इकोनॉमिक ग्रोथ की बात कही गई है, क्या इससे नौकरियां पैदा होंगी? बिना नौकरी के ग्रोथ का कोई मतलब नहीं है। हम इस बात को जानने के लिए उत्सुक हैं कि वित्त मंत्री किस तरह की स्कीम्स लाती हैं, जिससे युवाओं को नौकरियां मिलेंगी।

उद्योग जगतः 'Growth Budget'

CII, FICCI और ASSOCHAM जैसे औद्योगिक संगठनों ने बजट को Growth Oriented बताया।

उनका कहना है कि इंफ्रास्ट्रक्चर खर्च बढ़ाने से अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी

टैक्स नीति में स्थिरता निवेशकों का भरोसा बढ़ाएगी

स्टार्टअप और मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को बल मिलेगा

उद्योग जगत का उत्साह बताता है कि यह बजट कॉर्पोरेट सेक्टर के लिए अनुकूल है।

किसान और ग्रामीण भारतः उम्मीद से कम

किसान संगठनों की प्रतिक्रिया सबसे तीखी रही। उनका कहना है कि खेती की लागत बढ़ रही है. MSP को कानूनी दर्जा नहीं मिला

कर्ज़ राहत पर कोई ठोस फैसला नहीं

किसान नेताओं ने इसे 'भाषणों का बजट, खेतों का नहीं' बताया। ग्रामीण रोजगार और सिंचाई योजनाओं को लेकर भी निराशा दिखी।

शिक्षा और युवाः नीति है, पैसा नहीं

शिक्षा विशेषज्ञों ने माना कि डिजिटल एजुकेशन और स्किल डेवलपमेंट पर जोर सराहनीय है, लेकिन बजट आवंटन अपर्याप्त है।

छात्र संगठनों का कहना है कि सरकारी स्कूलों और विश्वविद्यालयों को अपेक्षित धन नहीं मिला। रोजगार से जुड़ी योजनाएं अस्पष्ट हैं युवाओं की मुख्य चिंता बेरोज़गारी है, जिस पर बजट स्पष्ट समाधान नहीं देता।

रक्षा और रेलवेः सबसे मजबूत पक्ष

रक्षा क्षेत्र को मिले बजट को विशेषज्ञों ने सकारात्मक बताया। स्वदेशी हथियार निर्माण और सीमा सुरक्षा को प्राथमिकता देना सरकार की रणनीतिक सोच को दर्शाता है।

रेलवे और इंफ्रास्ट्रक्चर में भारी निवेश को 'Growth Engine' माना जा रहा है, हालांकि रेलवे कर्मचारियों की भर्ती पर चुप्पी सवाल खड़े करती है।

अर्थशास्त्रीः सुरक्षित लेकिन साहसिक नहीं

अर्थशास्त्रियों की राय बंटी हुई है।

कुछ ने कहा कि Fiscal deficit को नियंत्रण में रखना अच्छी नीति है

निवेश बढ़ाने पर फोकस सही दिशा है

वहीं कई विशेषज्ञों का मानना हैः

'यह एक Safe Budget है, Bold Budget नहीं।' यानी सरकार ने जोखिम लेने के बजाय स्थिरता को चुना।

आम जनताः घोषणाएँ ज्यादा, राहत कम

मध्यम वर्ग को टैक्स में बड़ी राहत की उम्मीद थी, जो पूरी नहीं हुई।

महंगाई और रोजमर्रा की जरूरतों की कीमतों पर बजट खामोश नजर आया।

आम लोगों की प्रतिक्रियाः 'बजट टीवी पर अच्छा लगा, जेब में नहीं।' ■

वड़ा पाव

सामग्री
आलू मसालाः
उबले आलू ५,
हरी मिर्च ३-४,
लहसुन ८ कलियां,
अदरक १ इंच,
राई १ छोटा चम्मच,
हल्दी ½ छोटा चम्मच,
करी पत्ता, तेल
बैटरः
बेसन १ कप,
नमक, हल्दी,
चुटकी भर खाने का सोडा,
पानी

विधिः तेल गरम कर राई डालें। करी पत्ता और मिर्च-लहसुन-अदरक का पेस्ट डालकर भूनें। हल्दी और मैश किए आलू मिलाकर नमक डालें। मिश्रण ठंडा होने पर गोले बनाएं। बेसन का गाढ़ा बैटर तैयार कर आलू के गोले डुबोकर मध्यम आंच पर तलें। पाव के साथ सूखी लहसुन चटनी और हरी मिर्च।

पाव भाजी

सामग्री
आलू ४,
फूलगोभी १ कप,
मटर ½ कप,
प्याज़ ३,
टमाटर ३,
पाव भाजी मसाला २ चम्मच,
लाल मिर्च पाउडर १ चम्मच,
नमक, तेल,
थोड़ा बटर,
नींबू,
हरा धनिया

विधिः सब्ज़ियों को उबालकर मोटा मैश करें। तवे पर तेल और थोड़ा बटर डालकर प्याज़ भूनें। टमाटर डालकर तेल अलग होने तक पकाएँ। मसाले डालें, फिर सब्ज़ी मिलाकर तवे पर ही मैश करते हुए भाजी तैयार करें। बटर में सेके हुए पाव, ऊपर से धनिया और नींबू।

मिर्ची वड़ा

सामग्रीः
मोटी हरी मिर्च ६,
उबले आलू ३,
अमचूर ½ चम्मच,
धनिया पाउडर ½ चम्मच,
नमक
बेसन, हल्दी,
नमक, पानी
विधिः मिर्च में चीरा लगाकर बीज निकालें। आलू में मसाले मिलाकर मिर्च में भरें। गाढ़े बेसन बैटर में डुबोकर धीमी आंच पर तलें।

सामग्रीः
उसलः अंकुरित मटकी २ कप,
हल्दी, नमक
तर्रीः तेल,
प्याज़ २,
लहसुन १० कलियां,
सूखी लाल मिर्च ६,
मिसळ मसाला २ चम्मच
विधिः मटकी को उबालकर अलग रखें। तेल में प्याज़, लहसुन और मिर्च पीसकर भूनें। मसाला डालें और तेल ऊपर आने दें। यही तर्री उसल पर डालें। फरसाण, कटा प्याज़, नींबू और पाव के साथ।

मिसळ पाव

चाइनीज़ भेल

सामग्री
उबली नूडल्स - २ कप
तले हुए नूडल्स - १ कप
पत्ता गोभी - ½ कप
शिमला मिर्च - ¼ कप
गाजर - ¼ कप (जूलियन)
प्याज़ - १ छोटा (पतला कटा)
हरी मिर्च - १-२ (बारीक)
हरा प्याज़ - २ टेबलस्पून
तेल - २ टेबलस्पून
सॉस मिश्रण
सोया सॉस - 1½ चम्मच
लाल चिली सॉस - 1½ चम्मच
टमाटर केचप - 1 चम्मच
सिरका - 1 छोटा चम्मच
नमक - स्वादानुसार
काली मिर्च - ½ छोटा चम्मच
विधिः कढ़ाही या बड़े तवे पर तेज़ आंच में तेल गरम करें। हरी मिर्च और प्याज़ डालकर तेज़ी से चलाएँ। पत्ता गोभी, गाजर और शिमला मिर्च डालें–सब्ज़ियाँ कुरकुरी रहनी चाहिए, गलानी नहीं। अब उबली नूडल्स डालकर तेज़ हाथ से मिलाएँ। सारी सॉस, नमक और काली मिर्च डालें। १ मिनट तेज़ आंच पर चलाकर गैस बंद करें। आखिर में तले हुए नूडल्स और हरा प्याज़ मिलाएँ। ऊपर से थोड़ा और चिली सॉस, चाहें तो नींबू की २-३ बूंदें, पेपर प्लेट या कटोरी में परोसे

'आस्था, साधना और जागरण की पावन रात्रिः महाशिवरात्रि

भारत में त्योहार केवल परंपरा नहीं होते, वे समाज की आत्मा होते हैं। महाशिवरात्रि ऐसा ही पर्व है, जहाँ आस्था और अनुशासन एक साथ दिखाई देते हैं। फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को मनाया जाने वाला यह पर्व भगवान शिव की आराधना के लिए समर्पित है। इस दिन लाखों श्रद्धालु उपवास रखते हैं, शिवलिंग का अभिषेक करते हैं और पूरी रात जागरण कर अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन की कामना करते हैं।

जब पूरी दुनिया रात के अंधकार में डूबी होती है, तब शिवभक्त जागरण में लीन होते हैं। जब सामान्य रात नींद के लिए होती है, तब महाशिवरात्रि आत्मजागरण की रात बन जाती है। महाशिवरात्रि केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि संयम, साधना और आत्मचिंतन का प्रतीक है। यह वह पावन रात्रि मानी जाती है जब भगवान शिव ने तांडव कर सृष्टि को संतुलन का संदेश दिया और शिव-शक्ति के मिलन से जीवन में ऊर्जा का संचार हुआ।

भारत में यह पर्व सदियों से श्रद्धा और अनुशासन के साथ मनाया जाता रहा है। फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को मनाई जाने वाली महाशिवरात्रि पर देशभर के शिवालयों में विशेष पूजा, अभिषेक और रात्रि जागरण का आयोजन होता है। श्रद्धालु उपवास रखकर शिवलिंग पर

जल, दूध, बेलपत्र और धतूरा अर्पित करते हैं तथा 'ॐ नमः शिवाय' के मंत्रोच्चार से वातावरण को भक्तिमय बना देते हैं।

वर्ष २०२६ में महाशिवरात्रि एक बार फिर करोड़ों लोगों को आत्मसंयम, आस्था और आध्यात्मिक शुद्धि का अवसर प्रदान कर रही है। इस विशेष अवसर पर पूजा-विधि, शुभ मुहूर्त और व्रत के नियमों को जानना न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक परंपरा को समझने का माध्यम भी है। महाशिवरात्रि हमें यह सिखाती है कि भक्ति केवल मंदिर तक सीमित नहीं, बल्कि जीवन को संतुलित और अनुशासित बनाने का मार्ग है।

महाशिवरात्रि २०२६ – तिथि और दिन

महाशिवरात्रि २०२६ हिन्दी पंचांग के अनुसार फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि पर आती है। चतुर्दशी तिथि प्रारंभः १५ फरवरी २०२६ (रविवार) शाम ।०५:०४

चतुर्दशी तिथि समाप्तः १६ फरवरी २०२६ (सोमवार) शाम ।०५:३४

इसलिए महाशिवरात्रि मुख्य रूप से १५ फरवरी २०२६ को मनाई जाती है, क्योंकि तिथि का निशीथ काल (मध्यरात्रि) इसी दिन पड़ता है।

पूजा का शुभ मुहूर्त

निशीथ-काल (सबसे शुभ समय)

१५ फरवरी २०२६ रातः लगभग ११:५५ PM से १२:५६ AM तक (यह वह काल है जब पूजा अत्यंत फलदायी मानी जाती है)

चार प्रहर पूजा-समय

पूजा को रातभर चार प्रहर (चौथाई रात) में बांटकर विधि-विधान से करने से शुभ माना जाता हैः

प्रथम प्रहरः १५ फर. शाम ।०६:१० से ।०९:२० तक

द्वितीय प्रहरः १५ फर. ।०९:२० से १२:३६ तक , तृतीय प्रहरः १६ फर. ।१२:३६ से ।०३:४७ तक चतुर्थ प्रहरः १६ फर. ।०३:४७ से ।०६:५९ तक

(ये समय पंचांग/ज्योतिष आधारित अनुमानों पर आधारित हैं – स्थानीय पंचांग के अनुसार थोड़ा बदल सकते हैं)

पारण (व्रत तोड़ने) का समय

१६ फरवरी २०२६ सुबहः लगभग ०६:४० से ०३:१० बजे तक पारण किया जा सकता है।

धार्मिक महत्व और पौराणिक कथाएँ

महाशिवरात्रि का महत्व कई दृष्टिकोणों से समझा जाता हैः

लॉर्ड शिव का तांडव (ब्रह्मांडीय नृत्य):

धार्मिक मान्यता के अनुसार इस रात भगवान शिव ने तांडव किया था, जो जीवन-मृत्यु, सृजन-संहार का प्रतीक है।

शिव-पार्वती विवाहः

कुछ मान्यताओं में यह रात शिव और पार्वती के विवाह का समय भी माना जाता है – शक्ति और शिव का ऐक्य।

शिव की उपासना का श्रेष्ठ कालः

निशीथ काल में भगवान शिव की आराधना करने से मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं तथा मानसिक-आध्यात्मिक शुद्धि प्राप्त होती है।

पूजा-विधि –

महाशिवरात्रि पूजा में मुख्य रूप से ये विधियाँ शामिल होती हैंः सुबह स्नान के बाद व्रत का संकल्प लें।

शिवलिंग या शिव मूर्ति का पंचामृत से अभिषेक करें – दूध, दही, घी, शहद, गंगाजल से। धूप-दीप, बेलपत्र, धतूरा, फल आदि अर्पित करें। शिव मंत्र 'ॐ नमः शिवाय' का जाप/जप रातभर करें–जितना अधिक संयम और मनोयोग, उतना अधिक फलदायी माना जाता है। चार प्रहर में आरती-पूजा और ध्यान निधि चित्त से करें।

व्रत के नियम (आम धार्मिक मान्यता)

दिनभर निराहार या फलाहार रखा जाता है (स्थानीय रीति-रिवाज के अनुसार)।

निर्जल व्रत या हल्का उपवास रखा जाता है, जैसे फैलाहार/फलाहार पर कुछ ब्राह्मण परंपराएँ ज़ोर देती हैं। रातभर जागरण, शिवलिंग पर जलाभिषेक और भजन-कीर्तन करना शुभ माना जाता है। ■

- संगीता सैनी

युवाओं का हार्ट अटैक!

आने वाले १० सालों में भारत 'युवा आबादी' नहीं, 'युवा मरीजों का देश' बन जाएगा।

भारत में हार्ट अटैक अब 'बुज़ुर्गों की बीमारी' नहीं रहा। पिछले कुछ वर्षों में २५ से ४० वर्ष के युवाओं में अचानक दिल का दौरा पड़ने की घटनाएं तेज़ी से बढ़ी हैं। जिम में वर्कआउट करते हुए, क्रिकेट खेलते समय, डांस करते हुए या ऑफिस में बैठ-बैठे गिरकर मर जाने की खबरें अब चौंकाती नहीं – यही सबसे खतरनाक संकेत है। यह ट्रेंड कोई रहस्यमयी बीमारी नहीं, बल्कि हमारी जीवनशैली, खान-पान और सिस्टमेटिक लापरवाही का सीधा नतीजा है। एक रिपोर्ट के अनुसार हृदय रोग के मामलों की बढ़ती संख्या के पीछे सबसे महत्वपूर्ण जीवनशैली कारकों में से एक के रूप में तनाव की पहचान की है.

हम तनाव को चिंता, तनाव या थकान के रूप में देखते हैं। लेकिन मेडिकल साइंस के मुताबिक शरीर पर इसका गंभीर असर पड़ता है। भावनात्मक तनाव शरीर में 'उत्तरजीविता प्रतिक्रिया' को सक्रिय करता है। यह एड्रेनालाईन और कोर्टिसोल जैसे हार्मोन को रक्तप्रवाह में तेजी से मिश्रण करने का कारण बनता है, दिल की धड़कन बढ़ाता है, रक्तचाप बढ़ाता है, रक्त वाहिकाओं को संकुचित करता है और हृदय की विद्युत लय को अस्थिर करता है। नतीजतन, रक्त में थक्के बनने की संभावना बढ़ जाती है।

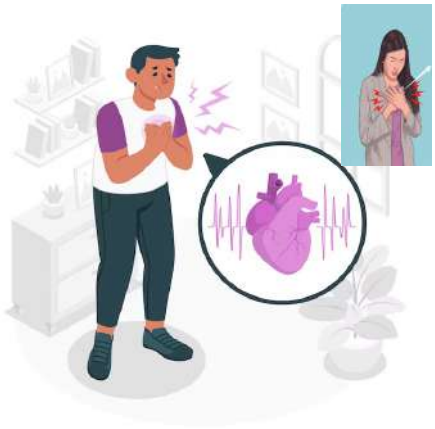

ये परिवर्तन शरीर में भावनात्मक सदमे, दुः ख, भय, क्रोध या लंबे समय तक मांसपेशियों में खिंचाव के मिनटों या घंटों के भीतर हो सकते हैं। संवेदनशील व्यक्तियों में, इन परिवर्तनों से दिल का दौरा, जीवन-धमकाने वाला अतालता या स्ट्रोक हो सकता है। यहां तक कि जब वे आराम कर रहे हों या सो रहे हों, तब भी उन्हें दिल का दौरा पड़ सकता है। तनाव कार्डियोमायोपैथी जैसी स्थिति को अक्सर 'ब्रोकन हार्ट सिंड्रोम एम' के रूप में जाना जाता है। इसे गंभीर मानसिक तनाव के कारण अस्थायी कमजोर उच्च रक्तचाप और हृदय ताल की हानि से जोड़ा गया है। विशेषज्ञों का यह भी कहना है कि इसके लक्षण आमतौर पर देखने को नहीं मिलते। हार्वर्ड से संबद्ध मास जनरल ब्रिघम द्वारा १८ दिसंबर, २०२५ को प्रकाशित शोध के अनुसार, चिंता और अवसाद से पीड़ित रोगियों में हृदय रोग का खतरा बढ़ जाता है। हार्वर्ड गजट में कहा गया है, 'यह बढ़ा हुआ जोखिम तनाव से संबंधित मस्तिष्क गतिविधि, तंत्रिका तंत्र की शिथिलता और सूजन के कारण होता है।

भारत में निवारक उपचार मुख्य रूप से शारीरिक लक्षणों के अनुसार किया जाता है। नियमित जांच रक्तचाप, कोलेस्ट्रॉल, रक्त शर्करा, वजन, ईसीजी और इमेजिंग पर ध्यान केंद्रित करती है। हालांकि, मानसिक तनाव, तंत्रिका तंत्र के असंतुलन को मापने के लिए कोई मानक तरीका नहीं है। भारतीयों को अधिक खतरा क्यों है? ब्लड प्रेशर की समस्या है। बहुत से लोग, विशेष रूप से ३० से ४० वर्ष की आयु के बीच, यह भी नहीं जानते हैं कि उन्हें उच्च रक्तचाप है। ऐसे में तनाव ब्लड प्रेशर को खतरनाक स्तर तक ले जा सकता है। मुख्य बात यह है कि हमारे पास तनाव का सामान्यीकरण है। लंबे समय

तक काम करना, वित्तीय बोझ और पारिवारिक जिम्मेदारियों को स्वास्थ्य के लिए खतरा नहीं माना जाता है, बल्कि इसे जीवन का एक हिस्सा माना जाता है। विशेष रूप से पुरुषों के बीच, तनाव के लिए मदद मांगना अभी भी कम माना जाता है। दिल के दौरे के अन्य कारण भारतीय आहार में परिष्कृत कार्बोहाइड्रेट, चीनी और ट्रांस वसा की मात्रा अधिक होती है; फल, सब्जियां और ड्राई फ्रूट्स का सेवन कम मात्रा में किया जाता है। शहरों में प्रोसेस्ड फूड्स का सेवन बड़ी मात्रा में किया जाता है। यही वजह है कि ज्यादातर लोगों के शरीर में कैलोरी की मात्रा बढ़ रही है और नमक का सेवन जूस की सीमा से दोगुने से भी ज्यादा हो जाता है। यह आहार पैटर्न मोटापे और मधुमेह में वृद्धि का कारण बन रहा है, खासकर युवा लोगों में।

असली कारण क्या हैं?

१. खराब लाइफस्टाइल, परफेक्ट सेल्फ-डिस्ट्रक्शन

१०-१२ घंटे बैठकर काम, नींद ५-६ घंटे

फिजिकल एक्टिविटी नाममात्र

मोबाइल, स्क्रीन और तनाव २४×७

दिल मशीन नहीं है, लेकिन हम उसे मशीन की तरह रगड़ रहे हैं।

२. जंक फूड, प्रोसेस्ड खाना मतलब स्लो पॉयज़न

आज का युवा बाहर का खाना 'नॉर्मल' मानता है। कोल्ड ड्रिंक, एनर्जी ड्रिंक, प्रोटीन पाउडर पर ज़िंदा है। नमक, शुगर और ट्रांस-फैट का हिसाब नहीं रखता। धमनियाँ चुपचाप जाम होती रहती हैं – और एक दिन अचानक ब्लॉक।

३. जिम कल्चर की अंधी नकल

यह कड़वी सच्चाई है बिना मेडिकल चेक-अप के हैवी वेट, स्टेरॉइड, सप्लीमेंट और 'फैट बर्नर' का दुरुपयोग। सोशल मीडिया फिटनेस इन्फ्लुएंसर्स पर आँख बंद भरोसा। दिल मजबूत नहीं होता, ओवरलोड होकर फेल होता है।

४. स्मोकिंग, वेपिंग और शराब – 'मैं कंट्रोल में हूँ' का भ्रम

कभी-कभार स्मोकिंग ही रोज़ की आदत बन जाती है। वीकेंड ड्रिंकिंग, हेवी ड्रिंकिंग। वेपिंग को 'सेफ' समझना खुद को धोखा देने जैसा है। हार्ट अटैक कोई नोटिस देकर नहीं आता।

५. मानसिक तनावः सबसे अनदेखा किलर

जॉब प्रेशर, पैसों की चिंता

रिलेशनशिप स्ट्रेस

सोशल तुलना (Instagram syndrome)

तनाव सीधे ब्लड प्रेशर, हार्ट रेट और हार्मोन सिस्टम पर हमला करता है। लेकिन भारत में मानसिक स्वास्थ्य को अब भी मज़ाक समझा जाता है।

क्या कोविड और वैक्सीन जिम्मेदार हैं?

कुछ मामलों में कोविड के बाद हार्ट से जुड़ी जटिलताएँ देखी गईं, लेकिन हर हार्ट अटैक को वैक्सीन से जोड़ना न वैज्ञानिक है, न ईमानदारी असल वजहें ज़्यादातर पहले से मौजूद थीं – कोविड ने सिर्फ़ परदा हटाया।

चेतावनियों को नज़रअंदाज़ करना

युवा अक्सर इन संकेतों को इग्नोर करते हैंः

सीने में जलन या भारीपन

सांस फूलना, अचानक पसीना

बाएँ हाथ या जबड़े में दर्द

क्यों? 'मैं तो जवान हूँ, मुझे कुछ नहीं होगा' – यही आखरिी सोच बन जाती है।

समाधान क्या है?

३० के बाद नहीं, २५ से ही हार्ट चेक-अप, BP, शुगर, लिपिड प्रोफाइल ECG (ज़रूरत हो तो)

☐ जिम से पहले डॉक्टर, ट्रेनर बाद में

☐ ७-८ घंटे की नींद

☐ तनाव को 'मर्दानगी' से नहीं, इलाज से देखें

☐ फिट दिखना नहीं, फिट रहना लक्ष्य

बनाएं यह युवाओं की व्यक्तिगत समस्या नहीं, राष्ट्रीय स्वास्थ्य संकट है। अगर अभी नहीं चेते, तो आने वाले १० सालों में भारत 'युवा आबादी' नहीं, 'युवा मरीजों का देश' बन जाएगा। दिल मजबूत तभी रहेगा, जब ज़िंदगी समझदारी से जियोगे – लापरवाही से नहीं। ■

मेष (Aries)

फरवरी का महीना आपके लिए ऊर्जा और निर्णय का समय है। करियर में नई जिम्मेदारियाँ मिल सकती हैं। वरिष्ठ अधिकारियों से मतभेद हो सकते हैं, इसलिए वाणी पर नियंत्रण रखें। व्यापारियों के लिए नए सौदे लाभदायक रहेंगे। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी, लेकिन अचानक खर्च बढ़ सकते हैं। निवेश सोच-समझकर करें। प्रेम जीवन में भावनात्मक उतार-चढ़ाव रहेगा। जीवनसाथी से संवाद की कमी विवाद का कारण बन सकती है। अविवाहितों को नया रिश्ता मिल सकता है। स्वास्थ्य में सिरदर्द, थकान और अनिद्रा की समस्या हो सकती है। योग और नियमित दिनचर्या जरूरी है।

लकी कलरः लाल

लकी डेटः ५, १४, २३

उपायः मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करें और गुड़-चना दान करें। करियर में उन्नति, लेकिन क्रोध पर नियंत्रण जरूरी।

वृषभ (Taurus)

यह महीना स्थिरता और धैर्य की परीक्षा लेगा। नौकरी में परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, लेकिन परिणाम सकारात्मक मिलेंगे। व्यवसाय में पुराने ग्राहक लाभ दिलाएंगे। धन के मामले में बचत पर ध्यान दें। उधार दिया पैसा वापस मिलने की संभावना है। परिवार में सुख-शांति रहेगी। दांपत्य जीवन में मधुरता आएगी। प्रेम संबंधों में विश्वास बढ़ेगा। स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, लेकिन खानपान में लापरवाही से पेट संबंधी समस्या हो सकती है।

लकी कलरः सफेद

लकी डेटः ६, १५, २४

उपायः शुक्रवार को लक्ष्मी माता को खीर या सफेद मिठाई अर्पित करें। धन लाभ के योग, पारिवारिक सुख बढ़ेगा।

मिथुन (Gemini)

फरवरी आपके लिए संवाद और संपर्क का महीना है। नौकरी में नए अवसर मिल सकते हैं। मीडिया, लेखन और शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोगों को विशेष लाभ होगा। आर्थिक रूप से समय मध्यम है। अनावश्यक खर्च से बचें। प्रेम संबंधों में नयापन आएगा। पुराने विवाद सुलझ सकते हैं। परिवार में किसी शुभ कार्य की योजना बनेगी। मानसिक तनाव बढ़ सकता है। ध्यान और संगीत आपको राहत देंगे।

लकी कलरः हरा

लकी डेटः ७, १६, २५

उपायः बुधवार को गणेश जी को दूर्वा अर्पित करें। शिक्षा और संचार क्षेत्र में सफलता।

कर्क (Cancer)

इस महीने भावनात्मक संतुलन जरूरी है। कार्यक्षेत्र में मेहनत का फल मिलेगा, लेकिन आलोचना का सामना भी करना पड़ सकता है। धन के मामलों में सतर्कता रखें। किसी मित्र से आर्थिक मदद मिल सकती है। परिवार में सामंजस्य रहेगा। प्रेम जीवन में संवेदनशीलता बढ़ेगी। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। स्वास्थ्य में नींद की कमी और ब्लड प्रेशर की समस्या हो सकती है।

लकी कलरः दूधिया सफेद

लकी डेटः ४, १३, २२

उपायः सोमवार को शिवलिंग पर दूध अर्पित करें। मानसिक शांति और पारिवारिक संतुलन मिलेगा।

सिंह (Leo)

फरवरी आपके आत्मविश्वास को बढ़ाएगा। नौकरी में पदोन्नति या सम्मान मिल सकता है। राजनीति और प्रशासन से जुड़े लोगों के लिए समय अच्छा है। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। नई योजनाओं में निवेश हो सकता है। प्रेम जीवन में अहंकार से बचें। जीवनसाथी के साथ मतभेद संभव हैं, लेकिन संवाद

से हल निकल आएगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, लेकिन हृदय और तनाव से जुड़ी समस्या पर ध्यान दें।

लकी कलरः सुनहरा (गोल्डन)

लकी डेटः १, १०, १९

उपायः रविवार को सूर्य को जल अर्पित करें और आदित्य हृदय स्तोत्र पढ़ें। मान-सम्मान और पद में वृद्धि।

कन्या (Virgo)

यह महीना अनुशासन और योजना का है। नौकरी में आपकी कार्यकुशलता की सराहना होगी। व्यापार में विस्तार के योग हैं। आर्थिक लाभ मिलेगा, लेकिन खर्च भी बढ़ेंगे। संतुलन जरूरी है। प्रेम जीवन में स्थिरता आएगी। परिवार में बुजुर्गों का आशीर्वाद मिलेगा। स्वास्थ्य में पेट और त्वचा से जुड़ी समस्या हो सकती है।

लकी कलरः हल्का हरा

लकी डेटः ८, १७, २६

उपायः बुधवार को गाय को हरा चारा खिलाएं। नौकरी और व्यापार में स्थिरता।

तुला (Libra)

फरवरी संतुलन का महीना है। नौकरी में स्थान परिवर्तन या नई जिम्मेदारी मिल सकती है। साझेदारी में काम करने वालों को सावधानी रखनी होगी। आर्थिक स्थिति सामान्य रहेगी। अनावश्यक खर्च से बचें। प्रेम जीवन में मधुरता आएगी। विवाह योग्य लोगों के लिए शुभ समाचार मिल सकता है। स्वास्थ्य में थकान और कमजोरी महसूस हो सकती है।

लकी कलरः गुलाबी

लकी डेटः ९, १८, २७

उपायः शुक्रवार को कन्याओं को मिठाई दान करें। प्रेम और विवाह के योग मजबूत।

वृश्चिक (Scorpio)

यह महीना परिवर्तन का संकेत देता है। करियर में नई दिशा मिलेगी। शोध और तकनीकी क्षेत्र से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी। धन के मामलों में सतर्क रहें। जोखिम भरे निवेश से बचें। प्रेम संबंधों में गहराई आएगी। परिवार में किसी बात को लेकर तनाव हो सकता है। स्वास्थ्य में पेट और रक्तचाप से जुड़ी समस्या संभव है।

लकी कलरः मरून

लकी डेटः २, ११, २०

उपायः मंगलवार को लाल मसूर का दान करें। तनाव कम होगा और आत्मविश्वास बढ़ेगा।

धनु (Sagittarius)

फरवरी में यात्रा और शिक्षा के योग हैं। नौकरी में नए अवसर मिलेंगे। विदेश से जुड़े कामों में लाभ होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। पुराने रुके पैसे मिलने की संभावना है। प्रेम जीवन में रोमांच रहेगा। दांपत्य जीवन सुखद रहेगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, लेकिन वाहन चलाते समय सावधानी रखें।

लकी कलरः पीला

लकी डेटः ३, १२, २१

उपायः गुरुवार को केले के पेड़ में जल चढ़ाएं और पीली दाल दान करें। शिक्षा और यात्रा में लाभ।

मकर (Capricorn)

मेहनत का फल मिलने का समय है। नौकरी में स्थायित्व आएगा। व्यापार में धीरे-धीरे उन्नति होगी। आर्थिक रूप से समय मजबूत रहेगा। बचत बढ़ेगी। परिवार में सामंजस्य रहेगा। प्रेम जीवन में भरोसा बढ़ेगा। स्वास्थ्य में हड्डियों और जोड़ों की समस्या हो सकती है।

लकी कलरः नीला

लकी डेटः ६, १५, २८

उपायः शनिवार को शनि मंदिर में सरसों का तेल चढ़ाएं। करियर में स्थिरता और धन वृद्धि।

कुंभ (Aquarius)

यह महीना नई शुरुआत का है। नौकरी में बदलाव या प्रमोशन संभव है। तकनीक और नवाचार से जुड़े लोगों को लाभ मिलेगा। धन के मामलों में समझदारी जरूरी है। निवेश लंबी अवधि के लिए करें। प्रेम जीवन में नया मोड़ आएगा। विवाह की बात आगे बढ़ सकती है। स्वास्थ्य में मानसिक तनाव से बचें।

लकी कलरः बैंगनी

लकी डेटः ७, १६, २५

उपायः शनिवार को काले तिल का दान करें। नए अवसर और परिवर्तन के योग।

मीन (Pisces)

फरवरी आत्मचिंतन और रचनात्मकता का महीना है। नौकरी में आपकी प्रतिभा पहचानी जाएगी। कला और साहित्य से जुड़े लोगों को सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी। प्रेम जीवन में भावनात्मक जुड़ाव बढ़ेगा। परिवार में सुख-शांति रहेगी। स्वास्थ्य में पानी और नींद का ध्यान रखें।

लकी कलरः हल्का पीला

लकी डेटः ५, १४, २३

उपायः गुरुवार को विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें। प्रेम जीवन और रचनात्मकता में सफलता ■

चारमीनार का इतिहास

चारमीनार, भारत की प्रमुख ऐतिहासिक और सांस्कृतिक इमारतों में से एक है, जो कि भारत का प्रमुख आर्कषण भी है और हैदराबाद में पर्यटन की लिहाज से भी काफी महत्वपूर्ण है। चारमीनार से ही हैदराबाद की अपनी एक अलग पहचान है।

हैदराबाद में मुसी नदी के किनारे स्थित इस भव्य चारमीनार को भारत की १० प्रमुख ऐतिहासिक स्मारकों का दर्जा दिया गया है। चार मीनार एक बेहद प्राचीन और उत्कृष्ट वास्तुशिल्प का नायाब नमूना है। हैदराबाद में स्थित इस विशाल और प्रभावशाली ऐतिहासिक स्मारक का निर्माण १५९१ ईसवी में कुतुब शाही राजवंश के पांचवे शासक सुल्तान मोहम्मद कुली कुतुब शाह द्वारा करवाया गया था। मुहम्मद कुली कुतुब शाह इब्राहिम कुली कुतुब शाह के तीसरे पुत्र थे, उन्होंने गोलकोंडा पर करीब ३१सालों तक राज किया था।

आपको बता दें कि जब कुतुब शाह ने अपनी राजधानी को गोलकुंडा से हैदराबाद शिफ़्ट कर दिया था, जब इस भव्य इमारत और प्राचीन काल की सबसे उत्कृष्ट कृति का निर्माण किया गया था। ऐसा भी कहा जाता है कि कुतुब शाह द्धारा इसका निर्माण इसलिए किया गया था, ताकि गोलकोंडा और पोर्ट शहर मछलीपट्टनम के व्यापार मार्ग को एक साथ जोड़ा जा सके। चारमीनार के निर्माण के पीछे कई ऐतिहासिक कथाएं भी जुड़ी हुई हैं।

हैदराबाद में स्थित यह ऐतिहासिक स्मारक चारमीनार दो शब्दों से मिलकर बना है, जो कि 'चार' और ' मीनार' दो शब्दों से मिलकर बनी हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ है - 'चार खंभे'। वहीं उर्दू में चार का अर्थ - संख्या से है जबकि मीनार का अर्थ टॉवर से है। वहीं जनरल तौर पर चारमीनार का अर्थ चार मीनारों या फिर टॉवर से लिया गया है।

इस प्राचीन टॉवर में चार चमक-दमक वाली मीनारें भी हैं, जो कि चार मेहराबों से जुड़ी हुई हैं, और यह मेहराब मीनार को सहारा भी देता है। इस भव्य इमारत का ऐतिहासिक महत्व होने के साथ-

हैदराबाद में स्थित इस ऐतिहासिक और भव्य स्मारक चार मीनार के आसपास अलग-अलग बाजार स्थित हैं। इसके पास स्थित लाड बाजार लाख की सुंदर चूड़ियां, कलामकारी चित्रों, हैदराबादी कांजीवरम साड़ियों, शानदार दुपट्टे, आर्कषक गहनों, बिद्री वर्क, गोलकोंडा पेंटिंग, और गोंगुरा अचार के लिए मशहूर हैं। जबकि इस अनूठी मीनार के पास स्थित पथेर गट्टी बाजार खास तरह के मोतियों के लिए मशहूर है, यहां देश से ही नहीं, बल्कि विदेश से भी लोग मोती खरीदने के लिए पहुंचते हैं। चार मीनार के चारों तरफ विशाल मार्केट है, जहां करीब १४ हजार से भी ज्यादा दुकानें सजी हुई हैं। आपको बता दें कि यह ऐतिहासिक स्मारक खाद्य पदार्थों के लिए भी प्रसिद्ध है, यहां पर्यटक हैदराबादी व्यंजन जैसे, हैदराबादी बिरयानी, हलीम, मिर्ची का सालन आदि का लजीज स्वाद चख सकते हैं इसके अलावा यहां मशहूर ईरानी चाय भी काफी मशहूर है।

साथ धार्मिक महत्व भी है। इसके साथ ही भारतीय-इस्लामी वास्तुकला की सर्वश्रेष्ठ नमूना माने जानी वाली यह चारमीनार कुतुबशाह और भागमती के अटूट प्रेम का भी प्रतीत मानी जाती है। इस भव्य और ऐतिहासिक चारमीनार की वजह से हैदराबाद शहर को अंतराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है। इस अनूठी ऐतिहासिक विरासत के निर्माण को लेकर कई इतिहासकारों द्वारा यह भी तर्क दिया जाता है कि, मोहम्मद कुली कुतुब शाह की राजधानी गोलकुंडा में पानी की कमी की वजह से जब प्लेग / हैजा रोग बुरी तरह फैल गया था, तब उन्होंने इस बीमारी को जड़ से खत्म करने और लोगों की पीड़ा को कम करने को लेकर रब से इबादत की थी और एक मस्जिद बनाने का संकल्प लिया था।

वहीं जब उनके शहर में प्लेग/हैजा जैसी बीमारी पर पूरी तरह काबू पा लिया गया था तब मोहम्मद कुली कुतुब शाह ने इसकी खुशी में इस अनूठी और ऐतिहासिक स्मारक चारमीनार का निर्माण हैदराबाद में करवाया था। आपको बता दें कि चारमीनार का निर्माण एक मस्जिद और मदरसा के रुप में सेवा करने के मकसद से किया गया था। चारमीनार के निर्माण के पीछे एक दिलचस्प कहानी यह भी जुड़ी हुई है कि कुतुब शाही राजवंश के पांचवे शासक सुल्तान मोहम्मद कुली कुतुब शाह ने अपनी खूबसूरत पत्नी भागमती को इस जगह पर ही पहली बार देखा था और रानी के द्वारा इस्लाम धर्म अपनाने के बाद उन्होंने इस शहर का नाम हैदराबाद रख दिया था। इसके साथ ही उन्होंने अपने अटूट और शाश्वत प्रेम के प्रतीक के रुप में और इस विशाल और प्रभावशाली ऐतिहासिक स्मारक का निर्माण किया था।

हैदराबाद में ऐतिहासिक व्यापार मार्ग के चौराहे पर स्थित भारत की इस भव्य और विशाल मीनार का निर्माण ग्रेनाइट, संगमरमर और मोर्टार के चूना पत्थरों को मिलाकर किया गया है, जिसमें भारत-इस्लामी काजिया शैली की अनूठी वास्तुकला का इस्तेमाल किया गया है।

वर्गाकार आकार में बनी यह ऐतिहासिक और भव्य मीनार के हर कोने में महराबनुमा शाही दरवाजे बने हुए हैं। यह शानदार स्मारक चौकोर खम□भों से बना हुआ है, चार मीनार के भव्य मेहराब चार अलग-अलग सड़कों पर खुलते हैं, जिसकी चौड़ाई करीब ११ मीटर है और उंचाई करीब २० मीटर हैं। इसके साथ ही इस विशाल मीनार की हर मेहराबों में दीवार घड़ी लगी हुई है जिन्हें यहाँ साल १८८९ में लगाया गया था।

करीब ४८ मीटर ऊंची इस भव्य स्मारक में दो बालकनियां भी बनी हुई है, जिससे आसपास शहर का बेहद सुंदर और आर्कषण दृश्य दिखाई देता है, और इसके शीर्ष पर बने छोटे-छोटे गुंबद इसकी शोभा को दो गुना बढ़ा देते हैं। इस भव्य मीनार के अंदर १४९ बेहद घुमावदार सीढ़ियां बनी हुई है।

विश्व धरोहर की लिस्ट में इस ऐतिहासिक

स्मारक की मुख्य गैलरी में करीब ४५ प्रार्थना स्थल है। यहां नमाज अदा करने के लिए काफी खुला स्थान है, जहां अधिकतर शुक्रवार के दिन इस्लाम समुदाय के लोग आकर अल्लाह की इबादत करते हैं। यहां एक छोटा फव्वारा भी है, जो इस मीनार के आर्कषण को और अधिक बढ़ाता है।

इसके साथ ही इस ऐतिहासिक इमारत के ऊपरी हिस्से में पश्चिम की तरफ, इस्लाम के पवित्र तीर्थ स्थल की तरफ मुंह किए हुए एक मस्जिद भी बनी हुई है, जिसका अपना एक अलग धार्मिक महत्व है। वहीं पहले चार मीनार के बाकी के हिस्से में कुतुब शाही दरबार भी हुआ करता था। यह अपनी अनूठी वास्तुशिल्प और शाही बनावट के लिए पूरी दुनिया भर में जाना जाता है।

इस चौकोर संरचना के हर कोने पर एक छोटी-छोटी मीनार बनी हुई है जिसकी ऊंचाई करीब २४ मी. की है, इस तरह यह पूरा भवन करीब ५४ मीटर ऊंचा बन जाता है। वहीं इस भव्य इमारत में चार मीनारें बनी होने की वजह से इसे चार मीनार नाम दिया गया है। कमल की पत्तियों के आधार की संरचना पर खड़ी हर मीनार बेहद आर्कषक लगती है। इस चारमीनार की दीवारों पर बेहद आर्कषक और सुंदर नक्काशी की गई है।

इंडो-इस्लामिक वास्तुशैली से निर्मित इस भव्य मीनार के निर्माण के लिए एक पर्शियन वास्तुकार को बुलाया गया था। चार मीनार की घुमावदार सीढ़ियां हैदराबाद में स्थित इस भव्य और ऐतिहासिक इमारत में कुल १४९ घुमावदार

सीढ़िया बनी हुई है, वहीं मीनार के शीर्ष तक पर्यटक इन घुमावदार सीढ़ियों के माध्यम से पहुंचते हैं, और ऊपर से हैदराबाद शहर के शानदार दृश्य का आनंद लेते हैं।

इस बेहद खूबसूरत चारमीनार के नीचे मोहम्मद कुल कुतुब शाह के शासनकाल के समय एक गुप्त सुरंग बनाई गई थी, जो कि हैदराबाद के इस प्रसिद्ध मीनार को गोलकुंडा किले से जोड़ती है। आपको बता दें इस गुप्त सुरंग बनाने के पीछे यह तर्क दिया जाता है कि इस ऐतिहासिक सुरंग को शाही सम्राटों के आपातकालीन निकासी के लिए बनाया गया था, लेकिन इसकी जानकारी बेहद खास लोगों को ही थी,कि इस सुरंग के मुख किस कोने पर खुला हुआ है।

इस चार मंजिला ऐतिहासिक स्मारक के सबसे ऊपरी हिस्से में पश्चिम की तरफ यह मस्जिद बनी हुई हैं। ऐसा कहा जाता है, कि इस मस्जिद के निर्माण के लिए कुतुब शाही राजवंश के पांचवे सुल्तान मोहम्मद कुली कुतुब शाह ने पत्थर, इस्लाम समुदाय के पवित्र तीर्थस्थल मक्का से मंगवाए थे। मोहम्मद कुली कुतुब शाह के द्वारा बनवाई गई इस भव्य इमारत की चारों मीनारों को एक बेहद विशिष्ट रिंग से चिंन्हित किया गया है, जिसे पर्यटक बाहर से देख सकते हैं। कुछ इतिहासकारों के मुताबिक इस ऐतिहासिक विरासत की चार मीनारें, इस्लाम के पहले चार खलीफों का प्रतीक थीं। चार मीनार, भले ही प्रमुख इस्लामिक स्थलों में गिना जाता है, लेकिन भारत की इस ऐतिहासिक धरोहर के सबसे नीचे तल पर एक छोटा सा भाग्यलक्ष्मी जी का मंदिर भी बना हुआ है,जो कि काफी विवादों से भी जुड़ा रह चुका है।

हैदराबाद में स्थित इस ऐतिहासिक और भव्य स्मारक चार मीनार के आसपास अलग-अलग बाजार स्थित हैं। इसके पास स्थित लाड बाजार लाख की सुंदर चूड़ियां, कलामकारी चित्रों, हैदराबादी कांजीवरम साड़ियों, शानदार दुपट्टे, आर्कषक गहनों, बिद्री वर्क, गोलकोंडा पेंटिंग, और गोंगुरा अचार के लिए मशहूर हैं। जबकि इस अनूठी मीनार के पास स्थित पथेर गट्टी बाजार खास तरह के मोतियों के लिए मशहूर है, यहां देश से ही नहीं, बल्कि विदेश से भी लोग मोती खरीदने के लिए पहुंचते हैं। चार मीनार के चारों तरफ विशाल मार्केट हैं, जहां करीब १४ हजार से भी ज्यादा दुकानें सजी हुई हैं। आपको बता दें कि यह ऐतिहासिक स्मारक खाद्य पदार्थों के लिए भी प्रसिद्ध है, यहां पर्यटक हैदराबादी व्यंजन जैसे, हैदराबादी बिरयानी, हलीम, मिर्ची का सालन आदि का लजीज स्वाद चख सकते हैं इसके अलावा यहां मशहूर ईरानी चाय भी काफी मशहूर है। वहीं ईद, दीपावली और अन्य मौकों पर इसकी शोभा और अधिक बढ़ जाती है। यह मार्केट पर्यटकों को अपनी तरफ खींचता है।

हालांकि, इस मार्केट में मोतियों की शॉपिंग करते समय खरीददारों को सतर्क रहने की जरूरत है, क्योंकि यहां कई दुकानें ऐसी भी है जहां नकली मोती का सामान बिकता है, इसलिए सरकार की तरफ से मान्यता प्राप्त दुकान से ही मोती खरीदें ताकि ठगी से बचा जा सकें एवं उचित गुणवत्ता वाले मोतियों की खरीददारी की जा सके।

इसके अलावा चार मीनार में लगने वाला रविवार बाजार भी काफी मशहूर है। यहां पर्यटक अपनी किचन के सामान के साथ घरेलू साज-सजावट का सामान खरीद सकते हैं। वहीं पुराने सिक्कों के अच्छे कलेक्शन के लिए चार मीनार का संडे मार्केट भी मशहूर है। कुतुब शाही वास्तुकला के कुछ अनूठे नमूनों को प्रदर्शित करता है, जिनमें से मक्का मस्जिद, तौली मस्जिद, चार मीनार, जामी मस्जिद, बेशक हैदराबाद का प्रभावशाली चिन्ह शामिल हैं। भारत की इस मशहूर इमारत की चार मीनारें, इस्लाम के पहले चार खलीफों का प्रतीक मानी जाती हैं। विश्क की यह प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्मारक, चारमीनार पुराने हैदराबाद शहर में स्थित है, ये कुतुब शाही युग का हॉल मार्क भी है। यह विशाल और ऐतिहासिक इमारत की वजह से ही हैदराबाद के शहर को अपनी एक अलग पहचान मिली है। ■

फिल्म फ्लॉप... और फीस पर टकराव!

'अक्षय पहले बिजनेसमैन हैं, फिर अभिनेता': प्रोड्यूसर शैलेन्द्र

बॉलीवुड अभिनेता अक्षय कुमार को लेकर फिल्ममेकर शैलेन्द्र सिंह का एक बयान इन दिनों चर्चा में है। शैलेन्द्र सिंह ने कहा है कि अक्षय कुमार पैसों के मामले में बेहद व्यावहारिक और रणनीतिक सोच रखते हैं। उनके अनुसार, अक्षय पहले एक व्यवसायी की तरह सोचते हैं और उसके बाद अभिनेता की भूमिका निभाते हैं। यह बयान शैलेन्द्र सिंह ने हाल ही में फिल्म पत्रकार सिद्धार्थ कन्नन को दिए एक इंटरव्यू में दिया, जिसमें उन्होंने साल २००९ में आई फिल्म '८×१० तस्वीर' से जुड़ा अपना अनुभव साझा किया। शैलेन्द्र सिंह ने स्पष्ट किया कि उनका यह बयान किसी निजी नाराज़गी से प्रेरित नहीं है। उन्होंने कहा कि अक्षय कुमार एक अच्छे इंसान हैं और उनके साथ उनके रिश्ते हमेशा सामान्य रहे। शैलेन्द्र ने बताया कि जब उन्हें अक्षय के साथ फिल्म बनाने का अवसर मिला था, तब वे बेहद उत्साहित थे।

उस समय अक्षय कुमार और निर्देशक नागेश कुकुनूर दोनों ही अपने करियर के शिखर पर थे। फिल्म का शुरुआती बजट करीब ३० से ३५ करोड़ रुपये तय किया गया था और शूटिंग के लिए मुनार को चुना गया था। लेकिन अक्षय के व्यस्त शेड्यूल के चलते बार-बार शूटिंग लोकेशन बदली गई – मुनार से कैलगरी, फिर केप टाउन और उसके बाद अन्य जगहों पर शूटिंग करनी पड़ी। लोकेशन बदलने की वजह से फिल्म का बजट लगातार बढ़ता चला गया। इसके बावजूद बॉक्स ऑफिस पर यह फिल्म पूरी तरह असफल रही।

फिल्म की असफलता के बाद शैलेन्द्र सिंह ने अक्षय कुमार से उनकी फीस का एक हिस्सा वापस करने का अनुरोध किया। उनसे कहा कि फिल्म देखने कोई नहीं आया। इसमें मेरी ही नहीं, आपकी भी जिम्मेदारी बनती है। आपने मुझसे बड़ी रकम ली है।' लेकिन अक्षय कुमार ने पैसे लौटाने से इनकार कर दिया।

जॉनी लीवरः हंसी की दुनिया का बेमिसाल कलाकार

उनकी आंखों में छिपी शरारत और चेहरे पर तैरती मुस्कान आज भी दर्शकों को उसी तरह हंसा देती है, जैसे वर्षों पहले हंसाया करती थी। उनका अंदाज़ ऐसा है कि उदासी से भरे माहौल में भी हंसी की रोशनी फैल जाती है। करीब तीन सौ से अधिक फिल्मों में काम कर चुके जॉनी लीवर ने अपने फिल्मी करियर की शुरुआत संघर्ष के दौर से की। शुरुआती वर्षों में उन्हें पहचान पाने के लिए लंबा इंतजार करना पड़ा। मंच पर की गई स्टैंड-अप कॉमेडी ने उन्हें अभिनय की बारीकियां सिखाईं और वही अनुभव बाद में उनके फिल्मी किरदारों में झलकता रहा। सफलता उनके लिए अचानक नहीं आई, बल्कि निरंतर मेहनत और अपने अलग अंदाज़ का परिणाम थी।

जॉन प्रकाश राव, जिन्हें दुनिया जॉनी लीवर के नाम से जानती है, हिंदी सिनेमा के पहले लोकप्रिय स्टैंड-अप कॉमेडियन माने जाते हैं। उन्होंने हर तरह के किरदार निभाए–दक्षिण भारतीय मालिश वाला, भोला-भाला नौकर, चालाक दलाल या मासूम दर्शक। हर भूमिका में वे इतने स्वाभाविक लगते थे कि दर्शक उन्हें किरदार नहीं, असली इंसान समझ बैठते थे। जॉनी लीवर की सबसे बड़ी ताकत उनकी कॉमिक टाइमिंग रही है। संवाद कहने का उनका तरीका, चेहरे के भाव और शरीर की भाषा मिलकर ऐसा हास्य रचते थे जो लंबे समय तक याद रहता है। यही कारण है कि उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों और नामांकनों से सम्मान मिला।

आज जब फिल्मों में हास्य अक्सर शोर और अतिशयोक्ति तक सीमित हो गया है, जॉनी लीवर का अभिनय याद दिलाता है कि सच्ची कॉमेडी सादगी और संवेदना से जन्म लेती है। वे सिर्फ अभिनेता नहीं, बल्कि हंसी की दुनिया के एक युग हैं, जिनकी मुस्कान आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरणा देती रहेगी।

चेन्नई में सैकड़ों कौवों की मौत से हड़कंप, खतरनाक H5N1 वायरस की पुष्टि

शुक्रवार को चेन्नई में सैकड़ों कौवे मरे हुए पाए गए, लैब टेस्ट में H5N1 वायरस की पुष्टि हुई है, जिससे इलाके में बर्ड फ्लू फैलने का संकेत मिला है। स्वास्थ्य अधिकारियों ने इस बीमारी को फैलने से रोकने के लिए आम जनता के लिए एक एडवाइजरी जारी की है। अधिकारियों ने निर्देश दिया है कि आगे संक्रमण को रोकने के लिए कौवों और पोल्ट्री के सभी शवों को बायोसिक्योरिटी प्रोटोकॉल के अनुसार या तो जला दिया जाए या गहरे गड्ढे में दफना दिया जाए। लोगों को मरे हुए पक्षियों को छूने या संभालने से बचने की सख्त सलाह दी गई है और किसी भी नए मामले की जानकारी तुरंत स्थानीय अधिकारियों को देने का आग्रह किया गया है। इन नतीजों के बाद, केंद्रीय पशुपालन मंत्रालय ने तमिलनाडु के मुख्य सचिव को पत्र लिखकर इस बीमारी को फैलने से रोकने के लिए तत्काल और

व्यापक फील्ड निगरानी करने को कहा है।

H5N1 इन्फ्लूएंजा ए वायरस का एक प्रकार है, जिसे आमतौर पर बर्ड फ्लू या एवियन इन्फ्लूएंजा के नाम से जाना जाता है, जो मुख्य रूप से पक्षियों, खासकर पोल्ट्री को संक्रमित करता है। हालांकि H5N1 मुख्य रूप से पक्षियों को प्रभावित करता है, लेकिन यह इंसानों को भी संक्रमित कर सकता है, आमतौर पर संक्रमित पक्षियों, उनके मल, लार या दूषित सतहों के सीधे संपर्क में आने से। इंसान से इंसान में संक्रमण दुर्लभ है, लेकिन जब संक्रमण होता है, तो यह गंभीर हो सकता है और निमोनिया या सांस लेने में दिक्कत हो सकती है।

H5N1 को बहुत खतरनाक माना जाता है, लेकिन मुख्य रूप से आम जनता के लिए नहीं, बल्कि खास स्थितियों में। पक्षियों में, यह तेजी से फैल सकता है और पोल्ट्री में बहुत अधिक मृत्यु दर के साथ बड़े पैमाने पर बीमारी फैला सकता है। इंसानों में, संक्रमण दुर्लभ हैं, लेकिन जब वे होते हैं, तो वे गंभीर हो सकते हैं। कई पुष्ट मानव मामलों में निमोनिया जैसी गंभीर श्वसन संबंधी बीमारियां शामिल हैं, और पिछले प्रकोपों में बताई गई मृत्यु दर मौसमी फ्लू की तुलना में काफी अधिक रही है।

अंतरराष्ट्रीय अदालत के आदेश को मानने से पाकिस्तान का इनकार, सिंधु जल संधि पर भारत ने दिखाया कड़ा रुख

सिंधु जल संधि को लेकर भारत और पाकिस्तान के बीच एक बार फिर तनाव बढ़ गया है। अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता अदालत (Court of ARitration) के हालिया आदेश को मानने से पाकिस्तान ने साफ इनकार कर दिया है। इसके जवाब में भारत ने कड़ा रुख अपनाते हुए कहा है कि सिंधु जल संधि अब पुराने ढर्रे पर नहीं चलेगी और राष्ट्रीय हित सर्वोपरि रहेगा। विदेश मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार, पाकिस्तान ने इस मामले को अंतरराष्ट्रीय मंच पर ले जाकर भारत पर दबाव बनाने की कोशिश की, लेकिन भारत ने स्पष्ट कर दिया कि वह किसी एकतरफा अंतरराष्ट्रीय आदेश को स्वीकार नहीं करेगा।

भारत सरकार का कहना है कि सिंधु जल संधि १९६० में बनी थी और तब की परिस्थितियां आज से बिल्कुल अलग थीं। आज पाकिस्तान लगातार आतंकवाद को बढ़ावा दे रहा है और फिर भी भारत से पानी की मांग करता है, जो व्यावहारिक और नैतिक दोनों दृष्टि से गलत है।

सरकारी बयान में कहा गया 'भारत किसी भी ऐसे आदेश को नहीं मानेगा जो उसके संप्रभु अधिकारों और राष्ट्रीय सुरक्षा के खिलाफ हो।' पाकिस्तान ने इस मामले को अंतरराष्ट्रीय अदालत में ले जाकर यह दिखाने की कोशिश की कि भारत संधि का उल्लंघन कर रहा है। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि यह कदम पाकिस्तान की कूटनीतिक कमजोरी को उजागर करता है, क्योंकि उसके पास ठोस कानूनी आधार नहीं है। जल नीति विशेषज्ञों के अनुसार, भारत ने अभी तक सिंधु जल संधि का पालन किया है, लेकिन अब वह संधि की समीक्षा करने के मूड में है।

वरिष्ठ रणनीतिक विश्लेषक का कहना है 'पाकिस्तान वर्षों से आतंकवाद और अंतरराष्ट्रीय दबाव की आड़ में जल संधि को हथियार बनाता रहा है। भारत का यह सख्त रुख राजनीतिक और कूटनीतिक दोनों दृष्टि से जरूरी था।' भारत सरकार सिंधु जल संधि पर पुनर्विचार की प्रक्रिया तेज कर सकती है।संभावना है कि भविष्य में जल बंटवारे के मुद्दे पर नई शर्तें तय हों या संधि में संशोधन किया जाए। यह मामला सिर्फ पानी का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा, कूटनीति और संप्रभुता से जुड़ा हुआ है। भारत ने साफ संकेत दे दिया है कि वह अब पुराने समझौतों को आंख मूंदकर स्वीकार नहीं करेगा।

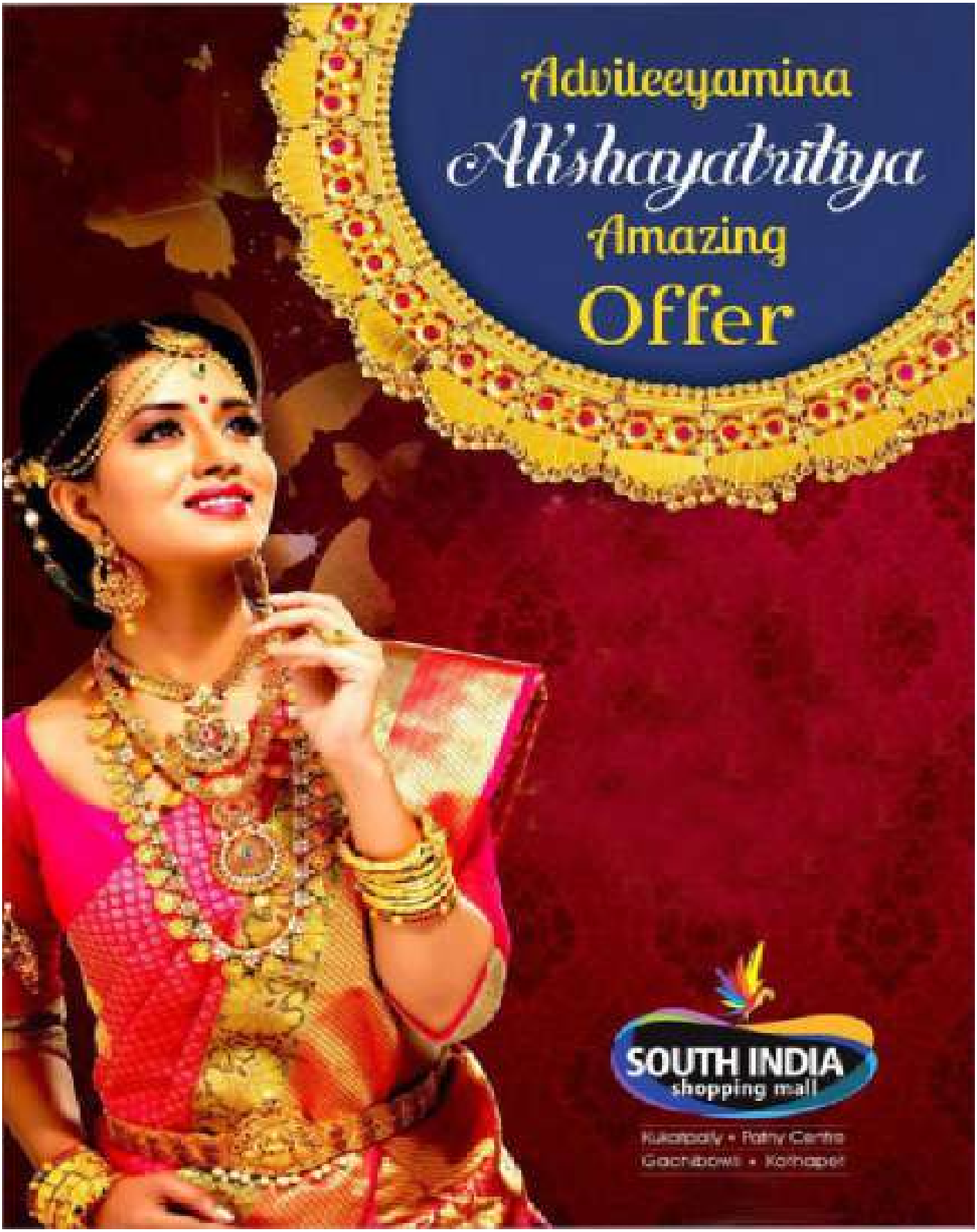

Adviteeyamina
Akshayatritiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall

कीस में ६६वें अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलन का हुआ शुभारंभ...

इंडियन एडल्ट एजुकेशन एसोसिएशन का उद्देश्य लोगों के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना, निरक्षरता और अज्ञानता के उन्मूलन के लिए कार्य करना, अंतर-राज्यीय सहयोग को प्रोत्साहित करना, आम जन के लिए साहित्य का निर्माण एवं वितरण करना तथा विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों को प्रौढ़ शिक्षा से सक्रिय रूप से जोड़ना है।

कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज़ (कीस) में बुधवार को ६६वें अखिल भारतीय प्रौढ़ शिक्षा सम्मेलन का शानदार शुभारंभ हुआ। इस सम्मेलन में देशभर से शिक्षा विशेषज्ञों, नीति-निर्माताओं और प्रौढ़ शिक्षा से जुड़े कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और समावेशी राष्ट्रीय विकास में प्रौढ़ शिक्षा की भूमिका पर विचार-विमर्श किया। इस सम्मेलन का संयुक्त आयोजन इंडियन एडल्ट एजुकेशन एसोसिएशन (IAEA) और कीस द्वारा किया जा रहा है। इस अवसर पर इंडियन एडल्ट एजुकेशन एसोसिएशन ने प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए कीट-कीस और कीम्स के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत को विशेष सम्मान से सम्मानित किया।

मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ. सामंत ने कहा कि वे पिछले तीन दशकों से शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं और उनका मुख्य उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाना है। उन्होंने कहा कि कीट-कीस जैसे संस्थान मुख्यधारा की शिक्षा के साथ-साथ प्रौढ़ शिक्षा में भी महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। डॉ. सामंत ने कीस में अपनाए जा रहे विशिष्ट मॉडल पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'जब हमारे छात्र छुट्टियों में अपने गांव लौटते हैं, तो उन्हें कम से कम दस लोगों को साक्षर बनाने के लिए प्रेरित किया जाता है। शिक्षा तभी सार्थक होती है जब वह जमीनी स्तर तक पहुंचकर कई गुना बढ़े।' उन्होंने जनजातीय शिक्षा, कौशल विकास, स्वास्थ्य सेवा और व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में कीट और कीस के व्यापक योगदान की चर्चा करते हुए प्रौढ़ शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख माध्यम बताया। उद्घाटन समारोह में प्रो. एल. राजा, इंडियन एडल्ट एजुकेशन एसोसिएशन के अध्यक्ष; प्रो. राजेश, IAEA के निदेशक; प्रो. सरनजीत सिंह, कीट और कीस के कुलपति; तथा सुरेश खंडेलवाल, IAEA के महासचिव सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

रोमानिया में आदिवासी भाषाओं में शेक्सपीयर के नाटक प्रस्तुत करेंगे कीस के छात्र

कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (कीस) के दस छात्र रोमानिया में आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव में भाग लेने जा रहे हैं जहाँ वे ओडिशा की आदिवासी भाषाओं में महान नाटककार विलियम शेक्सपीयर के नाटकों का मंचन करेंगे। इस अवसर को लेकर छात्र अत्यंत उत्साहित हैं और जोर-शोर से तैयारियों में जुटे हुए हैं। इस दल में पीएच.डी, स्नातक, स्नातकोत्तर तथा बीबीए पाठ्यक्रमों के छात्र शामिल हैं। आगामी मई माह में ये छात्र रोमानिया के क्रायोवा विश्वविद्यालय में आयोजित होने वाले विश्व शेक्सपीयर महोत्सव

में भाग लेंगे जहाँ वे शेक्सपीयर के नाटकों का मंचन करेंगे। वैश्विक मंच पर कीस के छात्र अपनी आदिवासी मातृ भाषाओं में शेक्सपीयर के तीन नाटकों की प्रस्तुति देंगे।

इसे कीस, आदिवासी समाज तथा पूरे ओडिशा राज्य के लिए गर्व और गौरव की बात बताया जा रहा है। छात्र पहले ही अभ्यास शुरू कर दिये हैं और वे लगभग दो माह तक रोमानिया में रहेंगे। यह भारत में पहली बार है जब किसी शैक्षणिक संस्थान के छात्र अंतर्राष्ट्रीय मंच पर आदिवासी भाषाओं में शेक्सपीयर के नाटकों का मंचन करेंगे। इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कीट और कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने सभी छात्रों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि कीस के छात्र पहले भी खेल और शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर देश और राज्य का नाम रोशन कर चुके हैं। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से अब वे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान बनाएंगे। यह हम सभी के लिए अत्यंत हर्ष का क्षण है।

महेश नाम स्वयं ब्रह्माजी ने भगवान शिव-शंकर को दिया

महाशिवरात्रि पर जो शिवजी नागों की माला धारण करते हैं, जो तीन आंखवाले हैं, जो भस्म से सुशोभित हैं, जो शाश्वत हैं, जो महेश्वर हैं, जो रसेश्वर हैं, जो शुद्ध और दिगबर हैं, ऐसे भगवान महेश को समस्त शिवभक्तों की ओर से कोटिशः नमन है।

सृष्टि में भगवान शिव-शंकर और आदिशक्ति देवी पार्वती के शुभ विवाहोत्सव दिवस को महाशिवरात्रि कहते हैं। ओड़िशा की राजधानी भुवनेश्वर के महाप्रभु लिंगराज मंदिर समेत पूरे राज्य में फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को महाशिवरात्रि हर्षोल्लास के साथ मनाई जाएगी। महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव-शंकर की आराधना के साथ-साथ शिव-भक्तों की आत्मशुद्धि, आत्म-कल्याण तथा आत्मबोध की साधना का पवित्र दिवस है। भगवान भोलेनाथ त्रिनेत्रधारी हैं जिनका तीसरा नेत्र हमारे भक्त-जीवन के विवेक, चेतना और दूरदर्शिता को स्पष्ट करता है। महाशिवरात्रि के दिन भगवान महेश के विधिवत पूजन-अर्चन से सभी शिवभक्तों की मनोकामना पूर्ण हो जाती है। महाशिवरात्रि पर जो शिवजी नागों की माला धारण करते हैं, जो तीन आंखवाले हैं, जो भस्म से सुशोभित हैं, जो शाश्वत हैं, जो महेश्वर हैं, जो रसेश्वर हैं, जो शुद्ध और दिगबर हैं, ऐसे भगवान महेश को समस्त शिवभक्तों की ओर से कोटिशः नमन है।

कहते हैं कि सृष्टि के आरंभ में जब चारों तरफ अंधकार ही अंधकार था उस समय भगवान विष्णुजी की नाभि से कमल प्रकट हुआ जिससे ब्रह्माजी उत्पन्न हुए। भगवान विष्णुजी के आदेश पर उन्होंने सृष्टि की रचना आरंभ की। पंच तत्वःपृथ्वी, आकाश, जल, वायु और अग्नि की उत्पति की। उसके उपरांत समस्त जीवों की रचना की जिसके संतुलन के लिए संहारक शक्ति की आवश्यकता पड़ी। इसके लिए ब्रह्माजी ने कठोर तपस्या की और कहते हैं कि उन्हीं की कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव-शंकर प्रकट हुए जिनकी जटाओं में गंगा प्रवाहित थीं, मस्तक पर चन्द्रमा सुशोभित थे, गले में सर्पों की माला थी, उनके हाथ में त्रिशूल और डमरु था तथा पूरे शरीर में भस्म था और ये सब मिलकर भगवान भोलेनाथ के संहारक स्वरुप का परिचय दिये। ब्रह्माजी ने स्वयं भगवान शिवशंकर की स्तुतिकर यह कहा कि भगवान शिव-शंकर स्वयं ही संहार ओर पुनर्निर्माण के अधिपति हैं। इसलिए मैं अर्थात् स्वयं ब्रह्माजी भगवान शिव-शंकर, आपको महेश नाम से संबोधित करता हूं।

वास्तव में संस्कृत में महेश शब्द दो शब्दों से मिलकर बना हैः महा और ईश और जिसका अर्थ है- महानतम ईश्वर। भगवान महेश त्रिगुणात्मक शक्तिःसत्व गुण, रजोगुण और तमोगुण से युक्त भगवान महेश हैं। महेश रुप में ये महाकाल हैं। ये स्वयं काल से भी परे हैं। योगी और संन्यासियों के सबसे प्रिय देव हैं-महेश। भगवान महेश का अघोरी और तांत्रिक स्वरुप उनके अघोरी तथा तांत्रिक सम्प्रदाय को स्पष्ट करता है। भगवान महेश योग और तपस्या के भी प्रतीक हैं। भगवान महेश कभी अकेले नहीं होते अपितु वे अपनी पत्नी पार्वती, शक्ति के संग होते हैं। इस सृष्टि के चर और अचर जीवों के ईश्वर भगवान महेश ही हैं। वे त्रिलोकीनाथ हैं। जिस गंगा ने १२ ज्योतिर्लिंगों की रचना की उन १२वों ज्योतिर्लिंगों पर महाशिवरात्रि के पवित्रतम दिवस पर भगवान महेश की विधिवत पूजा करने से समस्त शिवभक्तों का जीवन सार्थक हो जाता है। महाशिवरात्रि के दिन भगवान महेश आदिगुरु के रुप में पूजे जाते हैं।

महाशिवरात्रि के दिन भगवान महेश ने अपनी पत्नी आदिशक्ति माता पार्वती से पूछा कि भार्या आज तुम ही बताओ कि जितने भी शिवभक्त मेरी पूजा कर रहे हैं क्या मैं उनसभी की मनोकामना पूर्ण कर दूं। तब आदिशक्ति देवी पार्वती ने कहा कि स्वामी आज आप अपने सभी भक्तों की मनोकामना पूर्ण कर दीजिए और भगवान महेश ने वैसा ही किया। मिली जानकारी के अनुसार भुवनेश्वर महाप्रभु लिंगराज मंदिर में महादीपदान तथा संगीत समारोह आदि की सभी तैयारियां पूरी कर लीं गई हैं।

-अशोक पाण्डेय

एएपीआई ग्लोबल समिट का कीम्स में हुआ उद्घाटन

ओडिशा में पहली बार हुआ यह आयोजन

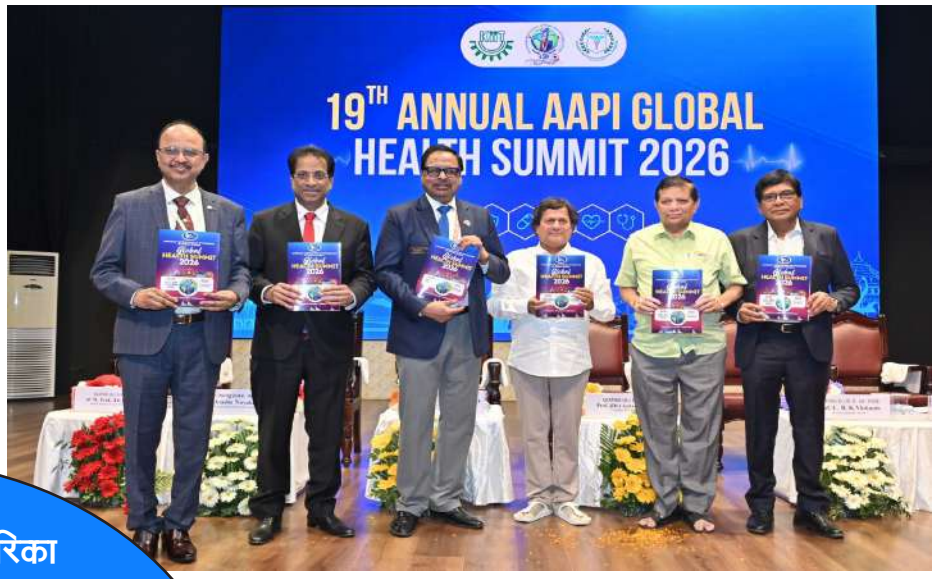

भुवनेश्वर, १० जनवरीः केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जे. पी. नड्डा ने शनिवार को कीम्स, कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (केआईएमएस) में आयोजित अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ फिजिशियंस ऑफ इंडियन ओरिजिन (एएपीआई) के १९वें वार्षिक ग्लोबल समिट के अवसर पर वैश्विक भारतीय मेडिकल प्रवासी समुदाय के आधुनिक स्वास्थ्य सेवा में योगदान की सराहना की। ओडिशा में पहली बार आयोजित हो रहा यह तीन दिवसीय वैश्विक स्वास्थ्य शिखर सम्मेलन रविवार को संपन्न हुआ। इसमें भारत और विदेशों से आए वरिष्ठ चिकित्सक, शिक्षाविद और स्वास्थ्य क्षेत्र के नेता भाग लिया,

भारतीय मूल के चिकित्सकों ने अमेरिका में आधुनिक स्वास्थ्य सेवा को आकार दिया है और करुणा, अनुशासन तथा पेशेवर उत्कृष्टता के माध्यम से वैश्विक स्तर पर गहरा और स्थायी प्रभाव डाला है। कीट-कीस और कीम्स के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने इसे ओडिशा के लिए गर्व का क्षण बताते हुए कहा कि राज्य को डॉक्टरों के इस वैश्विक समागम की मेजबानी का अवसर मिला है।

प्रतिनिधि ६ जनवरी से राज्य में हैं और शैक्षणिक, क्लिनिकल तथा सामुदायिक आउटरीच गतिविधियों में हिस्सा लिया।

सम्मेलन को वर्चुअली संबोधित करते हुए केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि यह सम्मेलन अंतरराष्ट्रीय चिकित्सा सहयोग और ज्ञान-विनिमय को आगे बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में परिकल्पित किया गया है। उन्होंने कहा कि भारतीय मूल के चिकित्सकों ने अमेरिका में आधुनिक स्वास्थ्य सेवा को आकार दिया है और करुणा, अनुशासन तथा पेशेवर उत्कृष्टता के माध्यम से वैश्विक स्तर पर गहरा और स्थायी प्रभाव डाला है। कीट-कीस और कीम्स के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने इसे ओडिशा के लिए गर्व का क्षण बताते हुए कहा कि राज्य को डॉक्टरों के इस वैश्विक समागम की मेजबानी का अवसर मिला है। उन्होंने यह भी कहा कि एएपीआई अमेरिका में कार्यरत भारतीय मूल के एक लाख से अधिक चिकित्सकों का प्रतिनिधित्व करता है और मानवता की सेवा में वैश्विक नेतृत्व का सशक्त प्रतीक है। डॉ. सामंत ने भारत और अमेरिका के बीच सतत शैक्षणिक सहयोग, अनुसंधान, ज्ञान-विनिमय और क्षमता निर्माण में एएपीआई की भूमिका को रेखांकित किया। इस अवसर पर उन्हें सम्मानित भी किया गया। एएपीआई के अध्यक्ष और एएपीआई ग्लोबल हेल्थ समिट के चेयरमैन डॉ. अमित चक्रवर्ती ने कहा कि एएपीआई अमेरिका का दूसरा सबसे बड़ा मेडिकल संगठन है। उन्होंने बताया कि समिट के लिए लगभग ११० प्रतिनिधियों ने पंजीकरण कराया है, जिनमें से कई पहली बार ओडिशा आए हैं। उन्होंने कहा कि कीट और कीस को आयोजन स्थल के रूप में चुनने का उद्देश्य संस्थान के विश्वस्तरीय शैक्षणिक और स्वास्थ्य सेवा पारिस्थितिकी तंत्र को प्रदर्शित करना है, साथ ही प्रतिनिधियों को ओडिशा की समृद्ध संस्कृति और विरासत से परिचित कराने का अवसर भी देना है।

समिट को संबोधित करते हुए ओडिशा फिजिशियंस ऑफ अमेरिका के अध्यक्ष डॉ. अताशु नायक ने कहा कि यह मंच आधुनिक चिकित्सा पद्धतियों, रोग निवारण, मधुमेह और मेटाबॉलिज्म पर चर्चा के लिए अग्रणी चिकित्सकों को एक साथ लाया है। उन्होंने कहा कि भले ही अमेरिका प्रवासी समुदाय का घर हो, लेकिन ओडिशा उनकी मातृभूमि है, और एएपीआई सामूहिक रूप से अपने सदस्यों की संस्था है। कीम्स के डीन एवं प्रिंसिपल प्रो. (डॉ.) आर. सी. दास और कीट (केआईएमएस) के प्रो-वाइस चांसलर प्रो. सी. बी. के. मोहंती ने भी प्रतिनिधियों को संबोधित किया। कीस के डायरेक्टर जनरल प्रो. अजीत कुमार मोहंती ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कार्यक्रम के दौरान एक स्टेम सेल प्रतिज्ञा अभियान भी आयोजित किया गया। तीन दिवसीय इस शिखर सम्मेलन में कंटीन्यूइंग मेडिकल एजुकेशन (सीएमई) सत्र, हैंड्स-ऑन कार्यशालाएं, वैश्विक स्वास्थ्य पैनल, सर्जिकल डेमोंस्ट्रेशन, सामुदायिक आउटरीच कार्यक्रम और युवा सहभागिता गतिविधियां शामिल हैं।

विश्व भारत की एसडीजी स्थानीयकरण की कहानी की कर रहा सराहनाः नीति आयोग के उपाध्यक्ष

कीस, भुवनेश्वर में एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

भुवनेश्वर, २४ जनवरीः संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के स्थानीयकरण के प्रति भारत के दृष्टिकोण को विश्व स्तर पर सराहना मिल रही है। यह बात नीति आयोग के उपाध्यक्ष सुमन बेरी ने शनिवार को कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (कीस) में आयोजित एसडीजी पर एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में कही। उन्होंने कहा कि भारत ने 'एक ही मॉडल सब पर लागू' करने की सोच से आगे बढ़ते हुए वैश्विक एसडीजी लक्ष्यों को स्थानीय परिस्थितियों और आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने का सफल प्रयास किया है। 'कीस बनाम सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी)ः परिवर्तनकारी शिक्षा, स्वयंसेवकता और समुदाय-केंद्रित कार्रवाई के माध्यम से भारत के एसडीजी एजेंडा को आगे बढ़ाना' विषयक इस संगोष्ठी में ऐसे संस्थागत मॉडलों पर चर्चा हुई जो वैश्विक विकास लक्ष्यों को स्थानीय स्तर पर मापनीय और प्रभावी कार्रवाई में बदलते हैं।

ओडिशा से अपने जुड़ाव को याद करते हुए श्री बेरी ने कहा कि यह यात्रा उनके लिए विशेष रूप से स्मरणीय रहेगी। उन्होंने केआईआईटी,कीट और कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा-आधारित विकास मॉडल के माध्यम से उन्होंने ओडिशा सहित देशभर के आदिवासी बच्चों के जीवन में व्यापक परिवर्तन लाया है। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि एसडीजी का स्थानीयकरण 'विकसित भारत' के विज़न का एक केंद्रीय तत्व है। आज कई राज्य जिला और ब्लॉक स्तर की योजनाओं को एसडीजी लक्ष्यों से जोड़ रहे हैं। एक नया शासन मॉडल उभर रहा है जिसमें मुख्यमंत्री, राज्य योजना निकाय और स्थानीय संस्थान परिणाम-आधारित लक्ष्य तय कर क्षेत्र-विशिष्ट चुनौतियों के समाधान हेतु प्रभावी कार्यान्वयन तंत्र विकसित कर रहे हैं–जो राष्ट्रीय और वैश्विक प्राथमिकताओं से भी सुसंगत है।

नीति आयोग के सदस्य अरविंद विरमानी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकसित भारत' के दृष्टिकोण पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति में प्रत्येक व्यक्ति, संस्था, समाज और राज्य की भूमिका है। नई शिक्षा नीति (एनईपी) के महत्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने गुणवत्तापूर्ण बुनियादी शिक्षा और कौशल विकास की आवश्यकता पर बल दिया, जो आने वाले १०-१५ वर्षों के लिए निर्णायक हैं और अन्य कई कारकों से जुड़े हुए हैं।

नीति आयोग के कार्यक्रम निदेशक डॉ. प्रवाकर साहू ने कहा कि कीस एक सतत और अनुकरणीय मॉडल का प्रतिनिधित्व करता है। 'हमारे अनुकूल जनसांख्यिकीय लाभ विकसित भारत की नींव रखते हैं और कीस इस लक्ष्य में प्रभावी योगदान दे रहा है,' उन्होंने कहा। एसडीजी का उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ और कौशल विकास है–जिन पर केआईआईटी, कीट और कीस सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं।

इस अवसर पर सुश्री अभा मिश्रा (यूएनडीपी ओडिशा की राज्य प्रमुख), डॉ. एमडी नदीम नूर (यूएनएफपीए, ओडिशा के कार्यालय प्रमुख), डॉ. सौला कायरियाकोस (फ्रांस स्थित इंटरनेशनल एग्जीक्यूटिव स्कूल की सह-संस्थापक एवं अध्यक्ष), सुश्री अरुषि राय (पूर्व यूएन प्रैक्टिशनर, यूएनएचसीआर) तथा श्री अशोक कुमार परिजा (कुलाधिपति, कीट डीम्ड यूनिवर्सिटी) सहित कई गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। डॉ. अच्युत सामंत ने अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया जबकि प्रो. सरनजीत सिंह, कुलपति, कीट डीम्ड यूनिवर्सिटी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

कीट विदेशी छात्रों को आकर्षित करने में देश का ५वाँ सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय

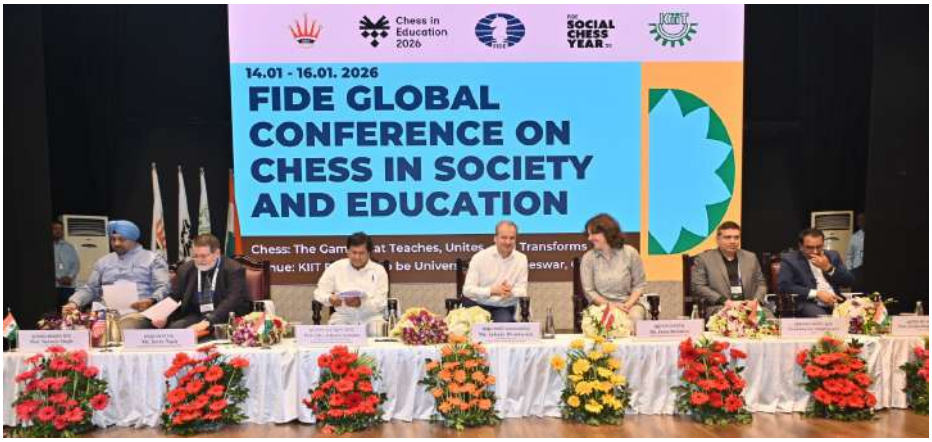

भुवनेश्वरः ओडिशा कीट उच्च शिक्षा के लिए विदेशी छात्रों का एक पसंदीदा केंद्र बनकर उभर रहा है। इसी प्रवृत्ति को दर्शाते हुए, केआईआईटी (KIIT) को विदेशी छात्रों को आकर्षित करने के मामले में देश का ५वाँ सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय घोषित किया गया है। यह जानकारी हाल ही में प्रकाशित नीति आयोग (NITI Aayog) की रिपोर्ट में सामने आई है। रिपोर्ट के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को आकर्षित करने के मामले में ओडिशा देश के शीर्ष १० राज्यों में शामिल है। इस संदर्भ में ओडिशा ने पश्चिम बंगाल, तेलंगाना और आंध्रप्रदेश जैसे पड़ोसी राज्यों को भी पीछे छोड़ दिया है। इसी तरह, भुवनेश्वर शहर ने कोलकाता और हैदराबाद से बेहतर प्रदर्शन किया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) २०२० के तहत उच्च शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। यद्यपि कीट ओडिशा के एक टियर-II शहर भुवनेश्वर में स्थित है, फिर भी वर्तमान में यहां ७० देशों से आए २,००० से अधिक अंतर्राष्ट्रीय छात्र अध्ययनरत हैं। यह संख्या पूर्वी भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत कुल २,३६२ विदेशी छात्रों में से सबसे अधिक है। इसके अलावा, कीट के ५,००० से अधिक अंतर्राष्ट्रीय पूर्व छात्र (एलुमनाई) विश्वभर में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

कीट की प्रमुख पहल 'इंडियाट्रेक (IndiaTrek)' के अंतर्गत वर्ष २०२५ में ३५० सदस्यों के अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधिमंडल ने भाग लिया।

वर्तमान शैक्षणिक सत्र के दौरान कीट ने हार्वर्ड विश्वविद्यालय, मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (MIT), यूनिवर्सिटी ऑफ वॉशिंगटन, सिटी यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क (CUNY), यूनिवर्सिटी ऑफ टुल्सा, यूनिवर्सिटी ऑफ वर्जीनिया, सिएटल यूनिवर्सिटी सहित विश्व के प्रतिष्ठित संस्थानों से लगभग ३५० अंतरराष्ट्रीय अतिथि संकाय सदस्यों और पीएच.

* विदेशी छात्रों की संख्या के आधार पर कीट देश का ५वाँ सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय
* नीति आयोग द्वारा प्रकाशित नवीनतम आंकड़े; NEP २०२० के अनुरूप उच्च शिक्षा का अंतरराष्ट्रीयकरण
* विदेशी छात्रों को आकर्षित करने में ओडिशा और भुवनेश्वर कई राज्यों और शहरों से आगे
* पूर्वी भारत के कुल २,३६२ विदेशी छात्रों में से २,००० से अधिक छात्र केवल कीट में
* अब तक ५,००० से अधिक विदेशी छात्र कीट से स्नातक हो चुके हैं

वर्तमान में यहां ७० देशों से आए २,००० से अधिक अंतर्राष्ट्रीय छात्र अध्ययनरत हैं। यह संख्या पूर्वी भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत कुल २,३६२ विदेशी छात्रों में से सबसे अधिक है। इसके अलावा, कीट के ५,००० से अधिक अंतर्राष्ट्रीय पूर्व छात्र (एलुमनाई) विश्वभर में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

डी. शोधार्थियों को आकर्षित किया है। इन विद्वानों ने १०-१५ दिनों तक परिसर में रहकर छात्रों से संवाद किया और साथ ही पर्यटन स्थलों का भी भ्रमण किया।

इंडियाट्रेक कीट की एक प्रमुख पहल है, जिसे सांस्कृतिक-शैक्षणिक समावेशन मंच के रूप में विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधियों, राजनयिकों, शिक्षाविदों और युवा नेतृत्व को भारत की शिक्षा प्रणाली, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक विकास मॉडल से परिचित कराना है।

कीट हर वर्ष १,००० से अधिक विदेशी प्रतिनिधियों को आकर्षित करता है; नोबेल पुरस्कार विजेताओं का निरंतर आगमन

कीट में प्रतिवर्ष १,००० से अधिक विदेशी प्रतिनिधि विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने आते हैं। उल्लेखनीय है कि अब तक देश-विदेश से ३.५ लाख से अधिक प्रतिनिधि कीट एवं कीस परिसर का दौरा कर चुके हैं। संस्थान में अब तक लगभग २५ नोबेल पुरस्कार विजेताओं के व्याख्यान आयोजित किए जा चुके हैं।

ये उपलब्धियाँ ईश्वर की कृपा, कीट एवं कीस की राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा, उत्कृष्ट रैंकिंग, विश्वस्तरीय अधोसंरचना एवं खेल सुविधाओं, तथा संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत के गहन सामाजिक योगदान का परिणाम हैं। कीट ने ग्लोबल फैकल्टी प्रोग्राम, ग्लोबल इमर्शन प्रोग्राम और क्रेडिट-आधारित स्टडी अब्रॉड प्रोग्राम के माध्यम से विश्वभर के विश्वविद्यालयों के साथ व्यापक अकादमिक आदान-प्रदान को भी सशक्त बनाया है।

कीट उत्कृष्ट खेल अवसंरचना के लिए राष्ट्रीय रैंकिंग पुरस्कार २०२६ से सम्मानित

भुवनेश्वर स्थित कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ इंडस्ट्रियल टेक्नोलॉजी (कीट) को प्रतिष्ठित ग्लोबल स्पोर्ट्स एजुकेशन कन्वेंशन (G-SEC) २०२६ के दौरान 'सर्वश्रेष्ठ समग्र खेल अवसंरचना के लिए राष्ट्रीय रैंकिंग पुरस्कार २०२६' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान १५ जनवरी २०२६ को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में प्रदान किया गया। यह पुरस्कार नेशनल रैंकिंग अवॉर्ड्स इन स्पोर्ट्स एंड फिजिकल एजुकेशन २०२६ के अंतर्गत प्रदान किया गया जिसे कन्फेडरेशन ऑफ स्पोर्ट्स एंड रिक्रिएशन इंडस्ट्री (CSRI) ने स्पोर्ट्स असेसमेंट एंड ऑडिट बोर्ड (SAAB) के सहयोग से स्थापित किया है। इस राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन को युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार का समर्थन प्राप्त था, जिसमें पूरे देश भर के प्रमुख विश्वविद्यालयों, नीति-निर्माताओं और खेल प्रशासकों ने भाग लिया।

यह सम्मान कीट द्वारा विकसित विश्वस्तरीय खेल अवसंरचना, खिलाड़ी-केंद्रित प्रशिक्षण पारिस्थितिकी तंत्र, तथा खेल शिक्षा और उत्कृष्टता के संवर्धन में इसके असाधारण योगदान को मान्यता देता है– चाहे वह जमीनी स्तर हो या उच्च प्रदर्शन का मंच। वर्षों से कीट ने शिक्षा, उच्च-स्तरीय प्रशिक्षण और अनुसंधान को एकीकृत करते हुए समग्र खेल विकास के क्षेत्र में भारत में एक मानक संस्थान के रूप में अपनी पहचान स्थापित की है। इस गौरवपूर्ण अवसर पर कीट -परिवार ने कीट कीस और कीम्स के संस्थापक प्रो. (डॉ.) अच्युत सामंत के प्रति गहरी कृतज्ञता व्यक्त की जिनकी दूरदर्शी नेतृत्व क्षमता और खेल व युवा विकास के प्रति अटूट प्रतिबद्धता ने संस्था की उल्लेखनीय उपलब्धियों को संभव बनाया है। समग्र शिक्षा, अनुशासन और खेलभावना पर उनका विशेष जोर कीट को देश के श्रेष्ठ खेल पारिस्थितिक तंत्रों में से एक बनाने में सहायक रहा है। यह राष्ट्रीय सम्मान भारत में खेल उत्कृष्टता के अग्रणी केंद्र के रूप में कीट की स्थिति को और सुदृढ़ करता है तथा भविष्य के चैंपियनों को गढ़ने और देश के खेल विकास एजेंडे में महत्वपूर्ण योगदान देने की उसकी प्रतिबद्धता को पुनः रेखांकित करता है।

> ***वर्षों से कीट ने शिक्षा, उच्च-स्तरीय प्रशिक्षण और अनुसंधान को एकीकृत करते हुए समग्र खेल विकास के क्षेत्र में भारत में एक मानक संस्थान के रूप में अपनी पहचान स्थापित की है।***

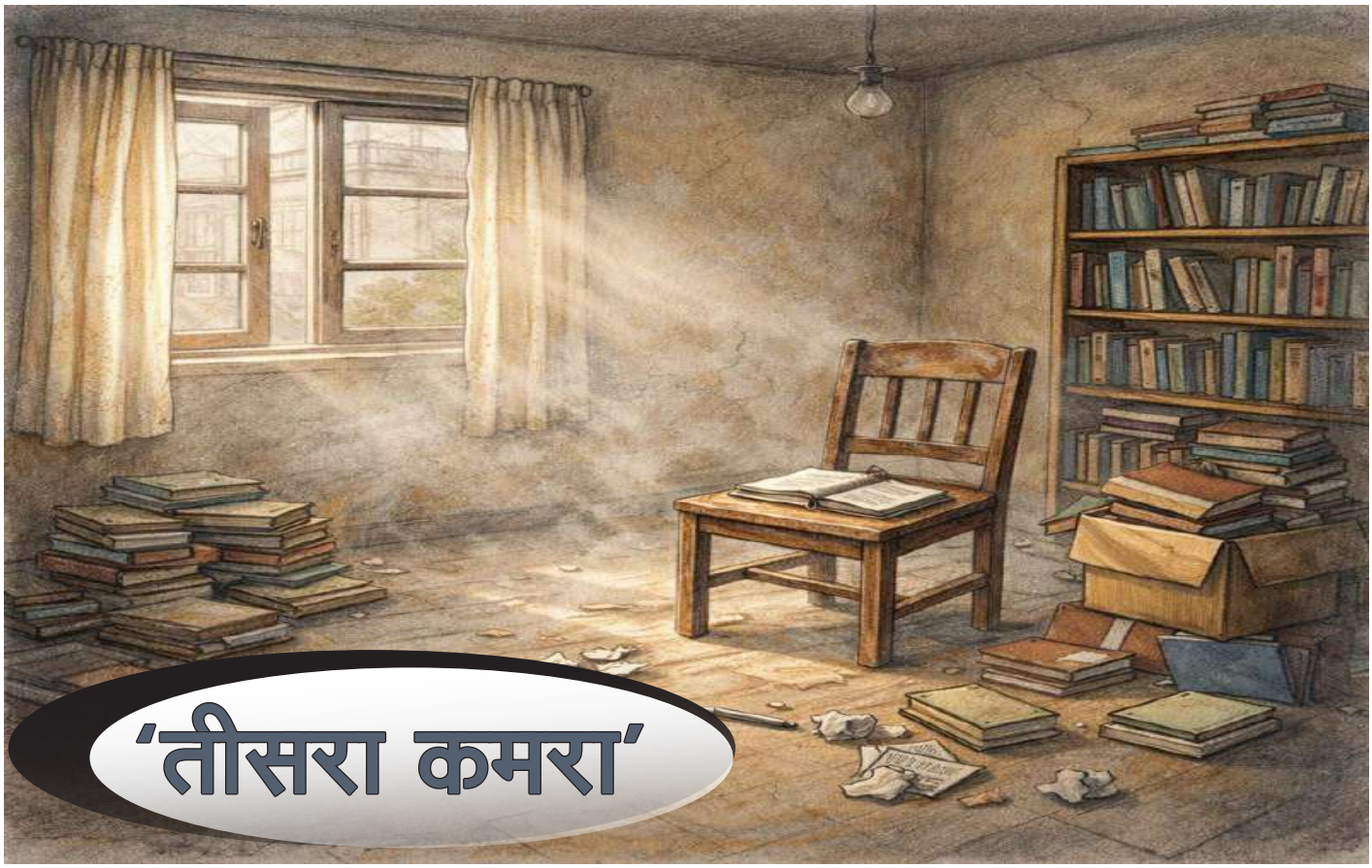

'तीसरा कमरा'

शोभा के घर में तीन कमरे थे।

एक में वह और उसका पति सोते थे।

दूसरे में उनका बेटा।

तीसरा कमरा हमेशा बंद रहता था।

उस कमरे में ताले नहीं थे, फिर भी कोई अंदर नहीं जाता।

वहाँ पुरानी किताबें थीं, धूल जमी अलमारी थी और एक टूटी कुर्सी।

वह कमरा शोभा का था–लेकिन अब नहीं।

शादी के बाद धीरे-धीरे वह कमरा गोदाम बन गया, और शोभा खुद एक चलती-फिरती मशीन।

सुबह पाँच बजे उठना।

चाय बनाना।

रवि का टिफ़िन।

रोहन की स्कूल बस।

सास की दवा।

फिर बाज़ार।

फिर दोपहर का खाना।

फिर शाम की थकान।

दिन ऐसे बीतते जैसे किसी ने उसे घड़ी के भीतर कैद कर दिया हो।

रवि अक्सर कहता,

'तुम हर बात को ज़्यादा सोचती हो। घर ठीक चल रहा है न? बस वही काफ़ी है।'

घर सच में ठीक चल रहा था।

पर शोभा ठीक नहीं थी।

उसे याद था–

वह कॉलेज में कविता लिखती थी।

मैगज़ीन में दो बार छपी थी।

उसके प्रोफ़ेसर ने कहा था,

'तुम्हारी भाषा में आग है।'

अब उसकी भाषा में बस चुप्पी थी।

एक दिन नगर पुस्तकालय में उसकी मुलाक़ात सुधीर से हुई।

वह पुरानी किताबें खोज रहा था।

उसने पूछा,

'क्या आपको 'निर्मल वर्मा' की किताब मिलेगी यहाँ?'

शोभा ने बिना देखे कहा,

'दूसरी अलमारी में।'

फिर रुकी।

किसी ने उससे सवाल पूछा था–काम का नहीं, किताब का।

सुधीर मुस्कराया,

'आप भी पढ़ती हैं?'

शोभा ने कहा,

मैं पत्नी नहीं, मैं केवल स्त्री नहीं, मैं एक अधूरी आवाज़ हूँ जो अब पूरी होना चाहती है।'

उसकी आँखों से आँसू गिरे। लेकिन वे कमज़ोरी के नहीं थे।वे जन्म के आँसू थे।

रवि ने दरवाज़े पर दस्तक दी। 'तुम क्या कर रही हो?' 'अपना कमरा वापस ले रही हूँ।' 'यह घर तो हमारा है।' 'और यह कमरा मेरा।' पहली बार दोनों के बीच दीवार खड़ी हुई– ईंट की नहीं, सच की। शोभा ने अखबार में कॉलम भेजा। पहली बार अपने नाम से।

'पहले लिखा करती थी।'
'अब?'
'अब समय नहीं मिलता।'
सुधीर बोला,
'समय नहीं मिलता या हम समय चुरा नहीं पाते?'
यह वाक्य उसे घर तक पीछा करता रहा।
उनकी मुलाक़ातें बढ़ीं।
हर हफ्ते लाइब्रेरी में।
वे कविता पर बात करते।
समाज पर।
औरत पर।
शोभा पहली बार खुलकर बोल रही थी।
कोई उसे बीच में टोकता नहीं था।
कोई नहीं कहता–'यह फ़ालतू है।'
एक दिन उसने कहा,
'मैं अपने ही घर में मेहमान हूँ।'
सुधीर ने जवाब नहीं दिया।
बस कहा,
'तुम्हारा तीसरा कमरा अभी ज़िंदा है।'
शोभा चौंकी,
'तुम्हें कैसे पता?'
'तुम्हारी आँखों से।'
घर में माहौल बदल रहा था।
रवि ने महसूस किया कि शोभा देर से आती है।
मोबाइल मुस्कराकर देखती है।
कभी-कभी चुपचाप लिखती है।
एक रात उसने कहा,
'तुम्हें कोई मिल गया है क्या?'
शोभा ने कहा,
'हाँ।'
रवि सन्न रह गया।
'कौन?'
'मैं खुद।'
यह जवाब रवि नहीं समझ सका।
समाज को समझ आ गया।
पड़ोसन बोली,
'अब लाइब्रेरी जाती है...
पढ़ी-लिखी औरतें ज़्यादा बिगड़ती हैं।'
सास ने कहा,
'औरत का असली धर्म घर है।'
माँ बोली फोन पर,
'सब सह लो, इज़्ज़त बची रहे।'
लेकिन किसी ने यह नहीं पूछा–
'तुम क्या चाहती हो?'
एक दिन सुधीर ने कहा,
'तुम भाग क्यों नहीं जाती?'
शोभा बोली,
'मैं किसी के पास नहीं भागना चाहती।
मैं अपने पास जाना चाहती हूँ।'
उस रात उसने तीसरा कमरा खोला।
धूल झाड़ी।
किताबें निकालीं।
कुर्सी ठीक की।
डायरी खोली।
पहली पंक्ति लिखीः
'मैं पत्नी नहीं, मैं केवल स्त्री नहीं,
मैं एक अधूरी आवाज़ हूँ जो अब पूरी होना चाहती है।'
उसकी आँखों से आँसू गिरे।
लेकिन वे कमज़ोरी के नहीं थे।
वे जन्म के आँसू थे।
रवि ने दरवाज़े पर दस्तक दी।
'तुम क्या कर रही हो?'
'अपना कमरा वापस ले रही हूँ।'
'यह घर तो हमारा है।'
'और यह कमरा मेरा।'
पहली बार दोनों के बीच दीवार खड़ी हुई–
ईंट की नहीं, सच की।
शोभा ने अखबार में कॉलम भेजा।
पहली बार अपने नाम से।

विषय थाः
'घर में रहते हुए बेघर स्त्री'
तीन दिन बाद फोन आया–
'आपका लेख प्रकाशित हो रहा है।'
उसने फोन काटकर छत पर जाकर आसमान देखा। उसे लगा जैसे तीसरा कमरा फैलकर पूरा शहर बन गया हो।
लेकिन यह शुरुआत थी, अंत नहीं।
क्योंकि असली लड़ाई बाहर नहीं,
अंदर थी– पति से,
माँ से, समाज से, और खुद से।
और सबसे कठिन सवाल यह थाः
क्या एक स्त्री अपने लिए जगह माँगे,
तो वह अपवित्र हो जाती है?
शोभा के लेख के छपते ही घर में
जैसे भूकंप आ गया।
रवि ने अखबार को मेज़ पर पटक दिया।
'यह सब क्या है? तुमने हमारे घर की
बातें अखबार में लिख दीं?'
शोभा ने शांत स्वर में कहा,
'मैंने अपने मन की बातें लिखी हैं।'
'मन की बातें? लोग पढ़ेंगे और समझेंगे कि मैं तुम्हें दबाता हूँ।'
'तुम दबाते नहीं, रवि... तुम देखते ही नहीं।'
यह वाक्य किसी थप्पड़ की तरह था।
सास बोली,
'हमारे खानदान की इज़्ज़त मिट्टी में
मिला दी।'
पड़ोस में कानाफूसी शुरू हो गई।
'यही है वह औरत जो अखबार में
लिखती है।'
'पति को छोड़ने वाली है।'
'किसी मर्द के चक्कर में होगी।'
शोभा हर फुसफुसाहट सुनती थी।
लेकिन अब चुप नहीं होती थी।
सुधीर ने कहा,
'तुम्हें यह सब सहने की ज़रूरत नहीं। मेरे साथ चलो।'
शोभा ने पहली बार कठोर स्वर में कहा, 'नहीं। तुम मेरी ज़रूरत नहीं हो।
अगर मैं किसी के सहारे खड़ी हुई,
तो फिर वही कहानी दोहराऊँगी।'
सुधीर चुप हो गया।
उसे पहली बार समझ आया कि यह
प्रेम कहानी नहीं, पहचान की कहानी है। रवि और शोभा के बीच अब झगड़े नहीं, पूछताछ होती थी।
'तुम क्या चाहती हो?'
'अपनी जगह।'
'किसके साथ?'
'खुद के साथ।'
एक रात रवि बोला,
'तो क्या तुम मुझे छोड़ दोगी?'
शोभा ने कहा,
'मैं तुम्हें छोड़ नहीं रही...
मैं उस औरत को छोड़ रही हूँ जो
सिर्फ़ तुम्हारी पत्नी थी।'
रवि पहली बार टूटा।
'मैंने तुम्हें कभी रोका नहीं।'
'तुमने रास्ता भी नहीं दिया।'
यह बात सच थी।
शोभा ने नौकरी के लिए आवेदन
किया – एक स्थानीय पत्रिका में।
वहाँ महिला स्तंभ लिखने लगी।
पहली तनख्वाह आई।
उसने अपने लिए मेज़ खरीदी।
और तीसरे कमरे में रख दी।
अब वह कमरा बंद नहीं था।
माँ मिलने आई।
बोली, 'लोग क्या कहेंगे?'
शोभा ने जवाब दिया,
'लोग हमेशा कुछ न कुछ कहते हैं।
पहले मैं मर रही थी, तब भी कहते थे –
अब मैं जी रही हूँ, तब भी कहेंगे।'
माँ की आँखें भर आईं।
एक दिन सास बीमार पड़ी।
शोभा ने पूरी सेवा की।
दवा, खाना, अस्पताल।
रवि ने चुपचाप देखा –
यह कोई विद्रोही औरत नहीं थी,
यह वही शोभा थी... बस अब टूटी नहीं थी।
सुधीर शहर छोड़ गया।
जाने से पहले बोला,
'तुम्हें किसी की ज़रूरत नहीं।
तुम खुद पूरी कहानी हो।'
शोभा मुस्कराई।
एक साल बाद उसकी किताब छपीः
'तीसरा कमरा'
पहले पन्ने पर लिखा थाः
'यह कहानी उस हर औरत की है
जो पत्नी बनने से पहले इंसान थी।'
रवि ने किताब पढ़ी।
पूरी रात।
सुबह बोला,
'मैंने तुम्हें समझा नहीं...
पर अब सीखना चाहता हूँ।'
शोभा ने कहा,
'समझने में देर नहीं होती,
अगर अहंकार मर जाए।'
तीसरा कमरा अब घर का सबसे रोशन कमरा था।
वहाँ किताबें थीं।
मेज़ थी।
खिड़की थी।
और एक औरत थी – जो अब खुद की थी।
शोभा अब पत्नी थी, लेकिन केवल पत्नी नहीं। माँ थी, लेकिन केवल माँ नहीं।
लेखिका थी,
और सबसे पहले –
एक स्वतंत्र मनुष्य थी।
तीसरा कमरा
अब दीवारों के भीतर नहीं था,
वह उसकी चेतना में था।
यह कहानी प्रेम की नहीं है।
यह कहानी पहचान की है।
औरत जब खुद की जगह माँगती है,
तो समाज उसे चरित्रहीन कहता है।
लेकिन सच यह है जो, स्त्री खुद को नहीं बचाती, वह किसी को नहीं बचा सकती। ■

- एम. पाठारे

डिजिटल करोड़पति

जब रमेश के मोबाइल पर संदेश चमका–

'बधाई हो! आपने एक करोड़ रुपये जीते हैं'

तो उसे सबसे पहले बिजली का बिल याद आया।

उसने आँखें मलीं।

फिर चश्मा लगाया।

फिर स्क्रीन पर उँगली फेरकर दोबारा पढ़ा।

तीसरी बार पढ़ते-पढ़ते उसकी धड़कन तेज़ हो गई।

'सीमा!' उसने रसोई की ओर आवाज़ दी,

'ज़रा इधर आना... जल्दी।'

सीमा गैस बंद कर आई।

'क्या हुआ? फिर से बैंक का मैसेज आया क्या?'

रमेश ने मोबाइल आगे बढ़ा दिया।

सीमा ने पढ़ा।

फिर बोली,

'किस ऐप में?'

'लॉटरी ऐप में... जो तुमने ही डाउनलोड करवाया था।'

सीमा चुप हो गई।

घर में अचानक एक अजीब-सी खामोशी फैल गई– जैसे दीवारें भी हिसाब लगाने लगी हों।

रमेश सरकारी दफ्तर में क्लर्क था।

तनख्वाह इतनी कि महीने का महीना चल जाए, ज़िंदगी नहीं।

हर महीने हिसाब ऐसा लगता जैसे जीवन कोई जोड़-घटाव का सवाल हो– जिसमें उत्तर हमेशा कम पड़ जाता हो।

अब मोबाइल में पड़ा वह 'एक करोड़' उसे काग़ज़ से ज़्यादा असली लग रहा था।

उस रात रमेश सो नहीं पाया।

उसने मन ही मन सूची बना ली–

पहला कामः

इस दो कमरे के मकान से छुटकारा।

दूसरा कामः

एक कार–सफ़ेद रंग की।

तीसरा कामः

बॉस से सीधे आँख मिलाकर बात करना।

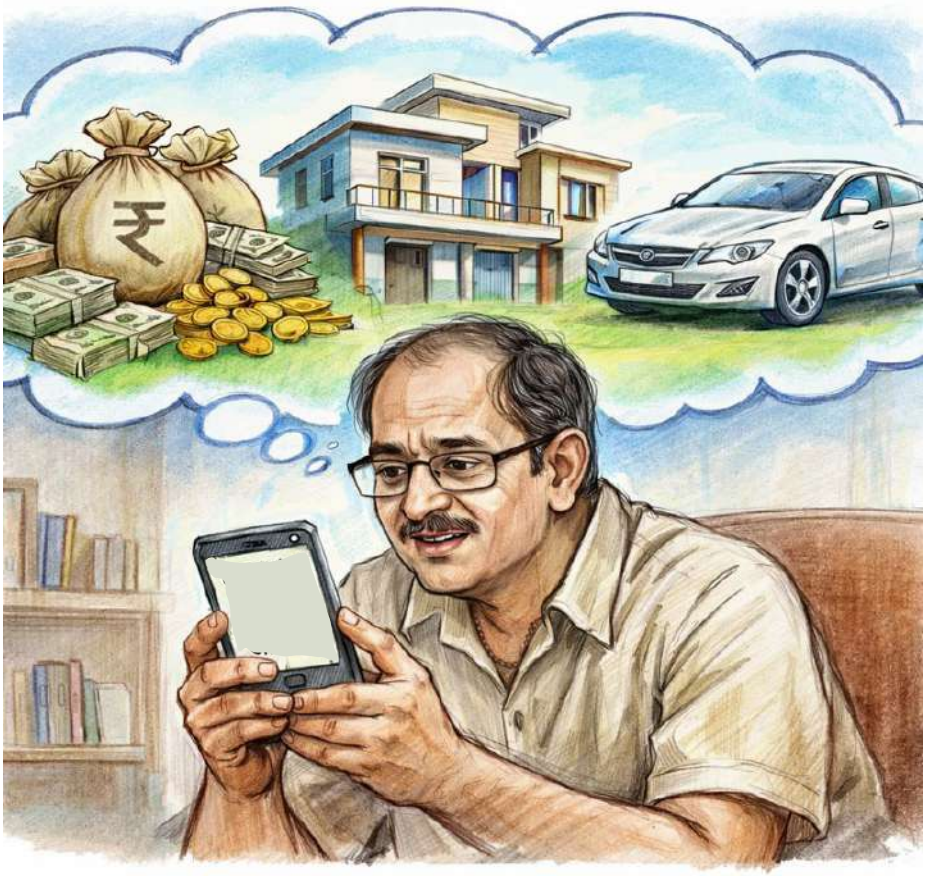

सुबह उसने व्हाट्सऐप स्टेटस लगायाः 'ईश्वर की कृपा से जीवन में नया मोड़।' उसने जानबूझकर 'करोड़' नहीं लिखा। रहस्य ज़्यादा तेज़ी से फैलता है। दस मिनट में पहला फोन आया–भाई का। 'क्या हुआ है? नया मोड़ मतलब?' रमेश ने गंभीर स्वर में कहा, 'कुछ खास बात है... बाद में बताऊँगा।' आधे घंटे में मौसी का फोन– 'तुम्हारे पापा की आत्मा खुश होगी।' दोपहर तक पड़ोसी शर्मा जी चाय लेकर आ पहुँचे। 'अरे रमेश जी, आज बड़े प्रसन्न लग रहे हो।' रमेश को पहली बार लगा कि उसकी ज़िंदगी में कोई खबर है। दफ्तर में बॉस ने उसे कुर्सी खिसकाकर बिठाया। 'अरे रमेश जी, आप तो छुपे रुस्तम निकले।' कल तक जो बॉस कहता था– 'फाइल कहाँ है?' आज पूछ रहा था– 'चाय लेंगे या कॉफी?' रमेश को यह बदलाव अच्छा भी लगा, और खतरनाक भी।

चौथा कामः
रिश्तेदारों को बताना कि अब हम भी कुछ हैं।
सुबह उसने व्हाट्सऐप स्टेटस लगायाः
'ईश्वर की कृपा से जीवन में नया मोड़।'
उसने जानबूझकर 'करोड़' नहीं लिखा।
रहस्य ज़्यादा तेज़ी से फैलता है।
दस मिनट में पहला फोन आया–
भाई का।
'क्या हुआ है? नया मोड़ मतलब?'
रमेश ने गंभीर स्वर में कहा,
'कुछ खास बात है... बाद में बताऊँगा।'
आधे घंटे में मौसी का फोन–
'तुम्हारे पापा की आत्मा खुश होगी।'
दोपहर तक पड़ोसी शर्मा जी चाय लेकर आ पहुँचे।
'अरे रमेश जी, आज बड़े प्रसन्न लग रहे हो।'
रमेश को पहली बार लगा कि उसकी ज़िंदगी में कोई खबर है।

दफ्तर में बॉस ने उसे कुर्सी खिसकाकर बिठाया।
'अरे रमेश जी, आप तो छुपे रुस्तम निकले।'
कल तक जो बॉस कहता था–
'फाइल कहाँ है?'
आज पूछ रहा था–
'चाय लेंगे या कॉफी?'
रमेश को यह बदलाव अच्छा भी लगा,
और खतरनाक भी।
दो दिन बाद दूसरा मेल आया–
'आपकी राशि प्रोसेस में है।
कृपया १० लाख रुपये प्रोसेसिंग फीस जमा करें।'
रमेश ने सीमा को दिखाया।
सीमा बोली,
'अगर करोड़ मिलेगा तो दस लाख
क्या चीज़ है?'
रमेश के भीतर एक आवाज़ बोली–
'अगर नहीं मिला तो?'
उसने उस आवाज़ को साइलेंट कर दिया।
उसने पीएफ तोड़ा।
दो दोस्तों से उधार लिया।
और दस लाख ट्रांसफर कर दिए।
उस दिन रमेश को लगा–
वह सचमुच करोड़पति बन चुका है।
अब रिश्तेदारों के फोन बदल गए थे।
'भैया, बच्चों की फीस...'
'जीजा जी, दुकान खोलनी है...'
'मामा, थोड़ा सा सहारा चाहिए...'
सीमा गर्व से कहती,
'देखो, अब लोग हमारी इज़्ज़त करते हैं।'
रमेश मन ही मन सोचता–
'यह इज़्ज़त नहीं, निवेश है।'
एक हफ्ता बीता।
कोई पैसा नहीं आया।
दूसरा मेल आया–
'आपके अकाउंट में तकनीकी समस्या है।
कृपया और ५ लाख भेजें।'
सीमा घबरा गई।
'यह सब सही है न?'
रमेश चुप रहा।
अब रिश्तेदारों के फोन बदल चुके थे–
'कितने दिन लगते हैं ट्रांसफर में?'
'हमने सबको बता दिया है।'
उसने मोबाइल साइलेंट कर दिया।

तीसरे हफ्ते वेबसाइट बंद हो गई।
न ऐप खुला।
न कस्टमर केयर।
रमेश कुर्सी पर बैठ गया।
उसकी आँखों के सामने वही
मोबाइल घूम रहा था–
जिसने उसे करोड़पति बनाया था
और भिखारी भी।
सीमा बोली,
'अब क्या करेंगे?'
रमेश ने कहा,
'अब मैं वही हूँ जो पहले था...
बस थोड़ा ज़्यादा मूर्ख।'
पड़ोसी शर्मा जी ने आना बंद कर दिया।
दफ्तर में बॉस फिर बोला–
'फाइल कहाँ है?'
भाई ने कहा–
'तुमने जल्दीबाज़ी की।'
मौसी बोली–
'किस्मत ही खराब थी।'
अब सबका दर्शन समाप्त हो गया।
एक दिन रमेश ने वही पुराना व्हाट्सऐप स्टेटस बदला–
'ईश्वर की कृपा से जीवन ने सबक सिखाया।'
कोई लाइक नहीं आया।
रात को रमेश छत पर बैठा था।
मोबाइल हाथ में था,
पर अब उसमें कोई सपना नहीं था।
सीमा बोली,
'अजीब बात है...
पैसा आया नहीं,
पर लोग चले गए।'
रमेश हँसा–
'हम भी तो चले गए थे...
खुद से।'
फिर बोला,
'मैं खुद को करोड़पति समझ बैठा था,
जबकि मैं सिर्फ एक नोटिफिकेशन था।'
रमेश करोड़पति नहीं बना,
लेकिन उसने यह जान लिया–
इस देश में
पैसे से पहले
अफ़वाह अमीर बनाती है,
और भरोसा सबसे पहले गरीब होता है। ■

- एन.निधी

MONAD UNIVERSITY
Recognized & Approved by :-
UGC
UP Govt.
PCI
BCI
NCTE
आज़ादी का अमृत महोत्सव
बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ
शिक्षित महिला - सशक्त भारत
ADMISSIONS OPEN 2024-25
*Free Education for Girls.
COURSES OFFERED

काजल फुट वेयर
हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है
कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)
स्पेशल ऑफर के साथ

विचित्र पड़ोस

पड़ोस में सुबह छह बजते ही हमेशा की तरह हलचल शुरू हो गई।

गली की मिट्टी में धूप की किरणें छनकर गिर रही थीं, और बुजुर्ग शर्मा अंकल पहले ही अपने पोछे को लेकर गली में घूम रहे थे।

'देखो देखो, नई सुबह आई, और गली अभी भी स्वच्छ नहीं!'

उनकी आवाज़ से ऐसा लग रहा था जैसे गली की सफाई का उनका ही निजी मिशन हो।

बगल वाले मकान की फुलवारी में कुमुद आंटी अपने गुलाब के फूलों को इधर-उधर घुमाती थीं।

हर फूल उनकी नजर में मानो कोई पुरस्कार जीतने वाला प्रतियोगी हो।

'अरे, देखो, यह गुलाब कल रात को थोड़ा फीका हो गया।

कल तक तो वह पूरी दुनिया का राजा था!'

फूल उनके लिए केवल फूल नहीं, बल्कि गली की प्रतिष्ठा का प्रतीक थे।

और बीच में रामु चाचा थे, जो रोज़ सुबह चार बजे उठकर अखबार पढ़ते थे, फिर जोर से अपनी राय गली में सुनाते थे। 'देखो भाई, ये सरकार क्या कर रही है, और यह मोहल्ला क्या कर रहा है!'

उनकी बातें सुनकर कभी-कभी बच्चे हँस पड़ते, और कभी-कभी पड़ोस के लोग सिर पकड़कर खड़े रहते।

पड़ोस का असली रंग तब आता था जब नंदिनी और रोहन स्कूल से लौटते।

नंदिनी छोटी मगर बहुत जिज्ञासु थी।

वह हर बात पर सवाल उठाती—कभी फूलों के रंग, कभी शर्मा अंकल की शिकायत, कभी रामु चाचा की राजनीति।

'मम्मी, क्यों अंकल इतने नाराज़ रहते हैं?'

'क्योंकि उन्हें लगता है कि पूरी दुनिया उनकी निगरानी में है।'

सीमा उसकी माँ मुस्कुरा देती और कहती,

'तुम बड़े होकर मोहल्ले की सुपरवाइज़र बनोगी।'

रोहन, उसके भाई, थोड़ा अलग था।

वह हमेशा सोचता कि अगर मोहल्ला एक खेल होता तो वह कप्तान होता, और सभी बच्चे उसकी टीम में खेलते।

लेकिन उसके खेल में सबसे कठिन चुनौती थी—गली के कुत्ते, जो हर समय उसे रोकते।

इस पड़ोस की विचित्रता तभी पूरी होती जब शाम होती। सभी लोग अपने-अपने घरों की खिड़कियों से बाहर झाँकते।

किसी को पता नहीं, कौन किस पर नजर रख रहा है।और वही नजरें कई बार छोटी-छोटी जासूसी, मज़ाक और हल्की-फुल्की शरारतों में बदल जाती थीं।

एक दिन कुछ अलग हुआ।

गली के बीच में अचानक एक अजीब-सा डिब्बा रखा मिला।

सभी के चेहरे पर हैरानी—किसने रखा, क्यों रखा, और इसके अंदर क्या है?

शर्मा अंकल तुरंत इसे उठाने दौड़े, कुमुद आंटी ने हाथ बढ़ाया, और नंदिनी ने कहा,

'मुझे देखना है, क्या अंदर है। मुझे लगता है कि यह कोई रहस्य है।'

रोहन ने ध्यान से देखा—डिब्बे पर कोई नाम नहीं लिखा था। सिर्फ़ एक चमकता हुआ लाल सितारा था।

'यह कोई संदेश है या जादू का संकेत?' रोहन ने पूछा। बच्चों के चेहरे पर चमक थी, बड़े लोग

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY
₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS
MRP ₹ 699
MEGABUY
₹ 599

शाम को गली में उत्सव जैसा माहौल बन गया। बड़े लोग पुराने झगड़े भूलकर हँस रहे थे। बच्चे अपने खेल में पूरी तरह डूब गए। और डिब्बे का हर सामान किसी न किसी कहानी में बदल गया। रामु चाचा ने जोर देकर कहा, 'अब हम हर शुक्रवार को गली में मिलकर पुराने खेल करेंगे। और यह डिब्बा हमेशा हमारे बीच रहेगा।' नंदिनी ने मासूमियत से पूछा, 'लेकिन यह डिब्बा क्यों यहाँ रखा गया था? और कौन इसे लाया?' शर्मा अंकल ने सिर खुजाते हुए कहा, 'कभी-कभी चीज़ों का असली मज़ा तब आता है, जब हम सवाल नहीं पूछते,बस आनंद लेते हैं।' अगले हफ्ते गली में नई हलचल शुरू हुई। बच्चों ने पुराने खेलों में नए मोड़ जोड़ दिए। रंगीन पतंगें आसमान में उड़तीं, और बड़े लोग उनके पीछे दौड़ते–कभी हँसते, कभी चिल्लाते। डिब्बे की चिट्ठियों ने बड़े लोगों के मन में भी हल्की-सी नमी भर दी। पुरानी शिकायतें, नाराज़गी और छोटी-छोटी तकरारें धीरे-धीरे पिघलने लगीं। कुमुद आंटी ने देखा कि गुलाब के फूल भी पहले से ज्यादा खिल रहे हैं।

डर और उत्सुकता के बीच फँसे हुए थे।

गली में चर्चा फैल गई।

हर घर से कोई न कोई बाहर निकल आता।

कुछ लोगों ने इसे खतरनाक बताया, कुछ ने कहा कि यह कोई सरकारी काम हो सकता है।

लेकिन बच्चों के लिए यह एक नई कहानी की शुरुआत थी।

शर्मा अंकल बोले,

'मैं इसे खोलूंगा, लेकिन सावधानी से।'

कुमुद आंटी ने जोर देकर कहा,

'नहीं, पहले हम सभी मिलकर निर्णय लें।'

लेकिन नंदिनी और रोहन पहले ही डिब्बे के पास दौड़ चुके थे।

डिब्बा हल्का था, और उसे उठाने में बच्चों को मज़ा आ रहा था।

जैसे ही उन्होंने ढक्कन खोला—

और पता चला कि अंदर केवल पुराने पत्र, कुछ खिलौने और गली की पुरानी यादों की तस्वीरें थीं।

सभी लोग हँस पड़े—'वाह! कितनी अजीब चीज़!'

लेकिन उस डिब्बे ने पड़ोस के लोगों को एकजुट कर दिया। सबने मिलकर बैठकर पुराने खेल, पुरानी कहानियाँ और पुराने झगड़े याद किए।

और पहली बार महसूस किया—विचित्र पड़ोस में हर कोई एक-दूसरे की कहानियों का हिस्सा है।

डिब्बे के ढक्कन के खुलते ही बच्चों की आँखों में चमक थी।

नंदिनी ने एक पुरानी चिट्ठी उठाई और जोर से पढ़ी—

'प्रिय पड़ोसी, यह डिब्बा हमारी यादों का संग्रह है।

कृपया इसे खोलकर हँसी, मज़ाक और शरारत में डालें।'

रोहन ने सिर हिलाया—'तो यह कोई खजाना नहीं है, बल्कि एक संदेश है!'

सीमा मम्मी ने कहा, 'देखो, बच्चों के लिए यह कितनी अच्छी चीज़ है। हम अपने पुराने दिनों को उनके साथ बाँट सकते हैं।'

गली में यह बात फैल गई।

शर्मा अंकल ने कहा,

'अगर हम सब मिलकर पुराने खेल और कहानियाँ साझा करें, तो यह गली फिर से जीवंत हो जाएगी।'

कुमुद आंटी ने तुरंत गुलाब के बगीचे की सफाई शुरू कर दी,

'खिलौनों के साथ-साथ फूल भी बहाल होने चाहिए।'

बच्चों ने डिब्बे में से पुराने खिलौने निकाले।

साइकिल, छोटी गुड़िया, और कुछ रंग-बिरंगे पतंग। हर खिलौना उनके लिए नए अनुभव का द्वार बन गया।

शाम को गली में उत्सव जैसा माहौल बन गया।

बड़े लोग पुराने झगड़े भूलकर हँस रहे थे।

बच्चे अपने खेल में पूरी तरह डूब गए।

और डिब्बे का हर सामान किसी न किसी कहानी में बदल गया।

रामु चाचा ने जोर देकर कहा,

'अब हम हर शुक्रवार को गली में मिलकर पुराने खेल करेंगे। और यह डिब्बा हमेशा हमारे बीच रहेगा।'

नंदिनी ने मासूमियत से पूछा,

'लेकिन यह डिब्बा क्यों यहाँ रखा गया था? और कौन इसे लाया?'

शर्मा अंकल ने सिर खुजाते हुए कहा,

'कभी-कभी चीज़ों का असली मज़ा तब आता है, जब हम सवाल नहीं पूछते,

बस आनंद लेते हैं।'

अगले हफ्ते गली में नई हलचल शुरू हुई।

बच्चों ने पुराने खेलों में नए मोड़ जोड़ दिए।

रंगीन पतंगें आसमान में उड़तीं,

और बड़े लोग उनके पीछे दौड़ते—कभी हँसते, कभी चिल्लाते।

डिब्बे की चिट्ठियों ने बड़े लोगों के मन में भी हल्की-सी नमी भर दी। पुरानी शिकायतें, नाराज़गी और छोटी-छोटी तकरारें धीरे-धीरे पिघलने लगीं।

कुमुद आंटी ने देखा कि गुलाब के फूल भी पहले से ज्यादा खिल रहे हैं।

'शायद यह डिब्बा सिर्फ़ बच्चों के लिए नहीं, हमारे लिए भी है।'

सीमा ने हँसते हुए कहा,

'हाँ, अब गली में हर रोज़ एक नई कहानी होती है।'

लेकिन कहानी में ट्विस्ट तब आया जब रोहन ने डिब्बे में एक पुरानी तस्वीर देखी।

तस्वीर में गली के सारे लोग थे—लेकिन कुछ अजीब था।

सबकी आँखें सीधे कैमरे की ओर नहीं थीं।

जैसे कोई छुपा हुआ संदेश है।

नंदिनी ने जोर से कहा,

'देखो! यह तो हमें कुछ बताने की कोशिश कर रही है!'

रामु चाचा ने कहा,

'शायद यह कोई मज़ाक है।

पड़ोस के पुराने लोग हमेशा अजीब शरारत करते रहे हैं।'

लेकिन बच्चों ने निश्चय किया कि वे इस रहस्य को हल करेंगे।

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-105

सभी के लिए सुनहरा

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 2,000/- का नकद इनाम!

अवसर!

१. कौन सा अंग रक्त को पंप करता है?

२. दिन में मुख्य प्रकाश का स्रोत क्या है?

३. मनुष्य के पास कितनी किडनी होती हैं?

४. गणतंत्र दिवस कब मनाया जाता है?

५. भारत के पहले प्रधानमंत्री कौन थे?

६. ताज महल किसने बनवाया?

७. राष्ट्रीय गीत कौन लिखे थे?

८. कौन सा जानवर जंगल का राजा कहलाता है?

९. भारत का राष्ट्रीय पशु कौन सा है?

१०. भारत में पालतू जानवर कौन से आम होते हैं?

११. कौन सा जानवर एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदता है?

१२. कौन सा जानवर सबसे लंबा है?

१३. गाय क्या खाती है?

१४. ऊन किस जानवर की त्वचा से बनाई जाती है?

१५. कुत्ते का बच्चा किसे कहते हैं?

१६. बौद्ध धर्म की स्थापना किसने और कहां की थी?

१७. किस साम्राज्य को अशोक के स्तंभ और शिलालेखों के लिए जाना जाता है?

१८. गुप्त वंश के प्रसिद्ध सम्राट, जिन्हें 'भारतीय नेपोलियन' के नाम से जाना जाता है, कौन थे?

१९. प्राचीन भारतीय ग्रंथों की अधिकांश रचनाएं किस भाषा में लिखी गई थीं?

२०. स्पष्ट दृष्टि के लिए न्यूनतम दूरी कितनी होती है?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station
Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website: swarnimumbai.com

नामः ....

पूरा पताः ....

....

....

फोन नं.: ....

ई-मेलः ....

हर तस्वीर, हर चिट्ठी और हर खिलौने में कोई संकेत खोजा जाएगा।

गली के इस विचित्र माहौल ने सभी को जोड़ दिया। सबने मिलकर तय किया कि हर शुक्रवार को डिब्बे का उत्सव होगा।

और यह उत्सव सिर्फ़ खेल, हँसी और यादों का नहीं, बल्कि पड़ोस की नई पहचान का भी प्रतीक बन गया।

शाम को सभी लोग गली में बैठकर गर्म चाय पीते। बच्चे अपनी कहानियाँ सुनाते,

बड़े अपने अनुभव साझा करते।

और डिब्बे की हर वस्तु एक नई कहानी का हिस्सा बन जाती।

अगली सुबह गली में हल्की धुंध छाई हुई थी।

डिब्बा फिर से बच्चों के हाथों में था।

नंदिनी ने इसे खोलते हुए कहा,

'आज हम रहस्य पूरी तरह जानेंगे। कोई डर नहीं।'

रोहन ने उत्सुकता से चारों ओर देखा।

'अगर कोई संदेश है, तो हम उसे सबके सामने खोलेंगे।

इस बार कोई भी भाग नहीं सकता।'

शर्मा अंकल, कुमुद आंटी, सीमा और रामु चाचा सभी बच्चों के साथ बाहर आ गए।

डिब्बे की सबसे पुरानी चिट्ठी उठाई गई।

यह चिट्ठी अलग थी—कुछ जादुई अंदाज़ में सजाई गई, लाल और नीले रंग के छोटे पैटर्न्स के साथ।

नंदिनी ने पढ़ना शुरू किया:

'प्रिय पड़ोसी, यह डिब्बा हमारे मोहल्ले की यादों और हँसी का प्रतीक है।

यह संदेश है—पड़ोस में झगड़ा, शिकायत या डर कभी भी हावी न होने पाए।

हर वस्तु—चाहे खिलौना हो, पत्र या तस्वीर—एक कहानी कहती है।

इन्हें देखो, हँसो और साझा करो।

क्योंकि मोहल्ला वही जीवित रहता है जो हँसी और समझ से जुड़ा हो।'

बड़े लोग चुप थे।

कुमुद आंटी की आँखों में नमी थी।

शर्मा अंकल ने हँसते हुए कहा,

'तो यही वजह थी कि डिब्बा अचानक आया।

किसी ने हमें याद दिलाना चाहा कि मोहल्ला केवल घरों का समूह नहीं, बल्कि दिलों का संगम है।'

रोहन ने पूछा,

'लेकिन यह डिब्बा किसने रखा?'

सीमा मुस्कुराई—

'शायद वही लोग जिन्होंने इसे बचाया।

जो पुराने दिनों में यहाँ रहते थे, लेकिन अब जा चुके हैं।'

नंदिनी ने अपनी जिज्ञासा कम नहीं की—

'तो इसका असली मज़ा यह है कि हमें खुद समझना पड़ा?'

रामु चाचा ने सिर हिलाया—'हाँ। और यही विचित्रता है।

हर पड़ोसी की अलग पहचान है।

बड़े लोग कठोर दिखते हैं, बच्चे शरारती।

लेकिन यही रंगीनता है इस मोहल्ले की।

और तभी बच्चों ने डिब्बे में से पुरानी तस्वीरें निकाली।

हर तस्वीर में अलग कहानी थी—

किसी में शादी, किसी में जन्मदिन, किसी में मोहल्ले की पुरानी खेल प्रतियोगिता।

बड़े लोग अचानक अपने पुराने दिनों में लौट गए।

हँसी, शरारत, छोटी-छोटी नोक-झोंक—सब कुछ याद आ गया।

शर्मा अंकल ने कहा,

'देखो, अब गली का असली रंग लौट आया।

हम सिर्फ घर नहीं, एक-दूसरे की कहानियों का हिस्सा हैं।'

कुमुद आंटी ने गुलाब की पत्तियों को देख कर कहा,

'और हर खिलता हुआ फूल हमें याद दिलाता है—पड़ोस के दिल अभी भी जिंदा हैं।'

शाम को गली में पहला वार्षिक डिब्बा उत्सव आयोजित हुआ।

सभी ने पुराने खेल खेले—सिक्का उछालना, गिल्ली-डंडा, पतंगबाज़ी।

बच्चों ने अपने नए-पुराने खेल मिलाकर एक अद्भुत खेल बनाया।

बड़े लोग भी बच्चों के पीछे दौड़ते, गिरते और हँसते।

कभी-कभी एक-दूसरे पर शरारत करने का मौका नहीं चूकते।

सीमा ने देखा,

'यह डिब्बा हमें हँसी, मिलन और समझ के लिए वापस लाया है।

और यह पूरी गली को एक नया जीवन दे गया।'

नंदिनी ने मुस्कुराते हुए कहा,

'अब मुझे लगता है, यह पड़ोस कभी साधारण नहीं था।

यह तो हमेशा विचित्र था—और यही इसका असली जादू है।'

रात के समय गली शांत थी।

लेकिन हर घर में हल्की रोशनी जल रही थी—

जैसे हर परिवार ने अपनी कहानी साझा करने का निर्णय किया हो।

रोहन ने नंदिनी की ओर देखा—

'सोचो, एक डिब्बे ने पूरा मोहल्ला बदल दिया।'

नंदिनी हँसी—'हाँ, और यह बदलाव सिर्फ हँसी और समझ से आया।

पैसे या शिकायत से नहीं।'

शर्मा अंकल ने अंतिम शब्द कहे—

'यही है पड़ोस की असली ताकत।

विचित्रता में ही जीवन का असली रंग है।

और हर पड़ोसी किसी न किसी कहानी का हिस्सा है।' पड़ोस केवल घरों का समूह नहीं, बल्कि दिलों का संगम है।

छोटी-छोटी हँसी, यादें और साझा किए गए पल ही जीवन को जीवंत बनाते हैं।

हर पड़ोसी में एक कहानी छिपी होती है—बस उसे समझना और साझा करना चाहिए।

डिब्बे ने केवल पुराने खेल और खिलौनों को नहीं, बल्कि पड़ोसियों के बीच विश्वास, मित्रता और आनंद को वापस ला दिया। और यह विचित्र पड़ोस अब पहले से भी ज़्यादा जीवंत, रंगीन और यादगार बन गया। ■

तेरे जाने के बाद...

तेरे जाने के बाद
कमरा वही है, दीवारें वही हैं,
बस हवा में अब तेरी हँसी नहीं तैरती,
और खिड़की से आती धूप
मुझसे सवाल करती है -
क्या प्यार इतना हल्का था कि चला गया?

रातें अब घड़ी से नहीं,
यादों से चलती हैं,
हर टिक-टिक पर तेरा नाम गिरता है,
और मैं नींद से नहीं,
खुद से जागता हूँ।

हमने वादा किया था
साथ बूढ़े होने का,
पर तुमने आधे रास्ते में
मौसम बदल लिया,
और मैं आज भी उसी मोड़ पर खड़ा हूँ।
तुम्हारी तस्वीरें
अब सिर्फ कागज़ नहीं रहीं,
वे मेरे धैर्य की परीक्षा हैं,
जिन्हें देख कर
मैं हर दिन सीखता हूँ
कैसे मुस्कुरा कर टूटना है।

अगर फिर कभी मिलो,
तो शिकायत नहीं करूंगा,
सिर्फ इतना पूछूंगा –
क्या तुम्हें भी कभी
मेरी कमी
इतनी ही चुपचाप लगी थी?

- एन.निधी

विरह का शहर

इस शहर की हर सड़क
तेरे नाम से शुरू होती है,
और हर मोड़ पर
तेरी याद का ट्रैफिक जाम है,
कहीं भी तेज़ चलना
मुमकिन नहीं।

लोग कहते हैं –
समय भर देता है घाव,
पर वे नहीं जानते,
कुछ घाव घड़ी नहीं देखते,
वे हर शाम
तेरी आवाज़ सुनकर
फिर से खुल जाते हैं।

मैंने खुद को समझाया
कि तू अब किसी और की दुनिया है,
पर दिल रोज़ तुझसे पूछता है –
अगर भूलना इतना आसान होता,
तो प्यार क्यों सीखा था?

तेरे बिना
हर त्योहार अधूरा है,
दीये जलते हैं
पर उजाला नहीं होता,
क्योंकि उजाला तो
तेरी आँखों से आता था।

आज भी जब बारिश होती है,
मैं छत पर खड़ा होकर सोचता हूँ,
कहीं उसी बूंद में
तेरी याद बहकर
मेरे पास न आ जाए।

- दीपसागर

हमारी हिन्दी

उचे उचे महलो मे रहती है अंग्रेजी
बडे बडे दिलो पे राज करती है अंग्रेजी
गरीब बस्ती मे बोली जाती है हिन्दी
उनके दिलो मे चलती है आंधी

अंग्रेजी का बोलो क्यु है इतना रूबाब
अंग्रेजी बोलने वाला क्यु है साहब
इतना सन्मान मिला अंग्रेजी को
फिर क्यु अवमानित हो रही हिन्दी

सब भाषाये बोली भारत माँ के गहने है
जो भारत माँ ने सदियो से पहने है
हिन्दी भारत माँ के माथे कि बिन्दी
फिर क्यु हो रहे है अंग्रेजी के बन्दी

सब तरफ बाट रही है ज्ञान अंग्रेजी
हम अपना अज्ञान पाल रहे है
चारो तरफ जाल बुन रही है अंग्रेजी
धीरे धीरे कालवश हो रही है हमारी नदी

-दिनेश शेळके
जालना

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

यूजीसी के नए नियमों पर विवाद, सुप्रीम कोर्ट ने लगाई रोक

केंद्र को नया ड्राफ्ट तैयार करने के निर्देश

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन (UGC) के नए नियमों पर अगले आदेश तक रोक लगा दी है। कोर्ट ने यह टिप्पणी मृत्युंजय तिवारी, एडवोकेट विनीत जिंदल और राहुल दीवान की याचिकाओं पर की, जिनमें आरोप लगाया गया है कि नए नियम जनरल कैटेगरी के छात्रों के साथ भेदभाव करते हैं। UGC ने १३ जनवरी को अपने नए नियमों को नोटिफाई किया था। इनका देशभर में विरोध हो रहा है। अब सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र और UGC को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। साथ ही नियमों का ड्राफ्ट फिर से तैयार करने का निर्देश दिया।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा लागू किए गए नए नियमों को लेकर देशभर में विवाद खड़ा हो गया है। इन नियमों का उद्देश्य कॉलेज और विश्वविद्यालयों में जाति, वर्ग और अन्य आधारों पर होने वाले भेदभाव को रोकना बताया गया है, लेकिन कई छात्र संगठनों और सामाजिक समूहों ने इन पर आपत्ति जताई है।

यूजीसी ने जनवरी २०२६ में 'इक्विटी रेगुलेशन २०२६' नाम से नए दिशा-निर्देश जारी किए थे। इसके तहत हर विश्वविद्यालय और कॉलेज में इक्विटी कमेटी और इक्वल ऑपॉर्च्युनिटी सेंटर बनाने का प्रावधान किया गया था, ताकि छात्रों की शिकायतों को सुना जा सके और भेदभाव की घटनाओं पर कार्रवाई हो सके। इन नियमों के सामने आते ही कई राज्यों में विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए। विरोध करने वालों का कहना है कि नियमों की भाषा स्पष्ट नहीं है और इससे निर्दोष छात्रों और शिक्षकों को परेशान किया जा सकता है। कुछ संगठनों ने आशंका जताई कि इन नियमों का दुरुपयोग भी हो सकता है।

विवाद बढ़ने के बाद मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुँचा। कोर्ट ने इन नए नियमों पर फिलहाल रोक लगा दी है और कहा है कि जब तक इस पर अंतिम फैसला नहीं हो जाता, तब तक वर्ष २०१२ के पुराने यूजीसी नियम ही लागू रहेंगे।

सुप्रीम कोर्ट ने टिप्पणी की कि नए नियमों में कई बातें अस्पष्ट हैं और इससे समाज में भ्रम और टकराव की स्थिति बन सकती है। कोर्ट ने केंद्र सरकार और यूजीसी से इस मामले में

जवाब भी माँगा है। सरकार का कहना है कि इन नियमों का उद्देश्य किसी वर्ग के खिलाफ नहीं है, बल्कि सभी छात्रों को समान अधिकार देना है। शिक्षा मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि किसी भी छात्र के साथ अन्याय नहीं होने दिया जाएगा।

फिलहाल देशभर के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में पुराने नियमों के अनुसार ही कामकाज चल रहा है। आने वाली सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट तय करेगा कि नए नियमों में संशोधन होगा या उन्हें पूरी तरह लागू किया जाएगा। यूजीसी के इस कदम ने शिक्षा व्यवस्था और सामाजिक संतुलन को लेकर नई बहस छेड़ दी है, जिसका असर आने वाले समय में उच्च शिक्षा नीति पर पड़ सकता है।

UGC नियम क्या हैं?

UGC (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग) ने जनवरी २०२६ में नए नियम जारी किए, जिन्हें 'इक्विटी रेगुलेशन २०२६' कहा गया। इन नियमों का उद्देश्य कॉलेज और विश्वविद्यालयों में छात्रों के साथ होने वाले भेदभाव को रोकना है।

मुख्य प्रावधान इस प्रकार हैं–

हर कॉलेज और विश्वविद्यालय में इक्विटी कमेटी (Equity Committee) बनाई जाएगी।

इक्वल ऑपॉर्च्युनिटी सेंटर (Equal Opportunity Centre) स्थापित करना अनिवार्य होगा।

छात्र जाति, धर्म, भाषा या किसी अन्य आधार पर भेदभाव की शिकायत सीधे इन समितियों में कर सकेंगे।

शिकायतों की जाँच कर संस्थान को कार्रवाई करनी होगी।

UGC का कहना है कि ये नियम छात्रों को सुरक्षित माहौल देने और समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए बनाए गए हैं।

□ विरोध क्यों हो रहा है?

इन नियमों के खिलाफ देश के कई हिस्सों में छात्र संगठनों और सामाजिक समूहों ने विरोध किया। विरोध के मुख्य कारण हैं–

नियमों की भाषा को अस्पष्ट और भ्रम पैदा करने वाली बताया जा रहा है।

कुछ लोगों को डर है कि झूठी शिकायतों का दुरुपयोग हो सकता है।

आनारक्षिता (जनरल) वर्ग के छात्रों का कहना है कि नियम उनके अधिकारों की पर्याप्त सुरक्षा नहीं करते।

कई शिक्षकों और संस्थानों को लगता है कि इससे प्रशासनिक दबाव बढ़ेगा और शैक्षणिक माहौल प्रभावित हो सकता है।

इसी वजह से यह मामला राजनीतिक और सामाजिक बहस का विषय बन गया।

सुप्रीम कोर्ट ने क्या कहा?

विवाद बढ़ने पर यह मामला सुप्रीम कोर्ट पहुँचा। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने कहा कि नए UGC नियमों में कई प्रावधान स्पष्ट नहीं हैं और इनसे समाज में तनाव और भ्रम की स्थिति बन सकती है। सुप्रीम कोर्ट ने–

UGC के नए नियमों पर फिलहाल रोक लगा दी है। आदेश दिया कि जब तक अंतिम फैसला नहीं होता, तब तक २०१२ के पुराने नियम लागू रहेंगे। केंद्र सरकार और UGC से इस मामले पर जवाब माँगा है। कोर्ट ने यह भी कहा कि नियम ऐसे होने चाहिए जो किसी वर्ग के खिलाफ न जाएँ और सभी छात्रों के लिए न्यायसंगत हों।

२०१२ के पुराने नियम क्या हैं?

UGC ने साल २०१२ में 'Anti-Discrimination Regulations' बनाए थे। इनका मकसद भी यही था कि कॉलेज और विश्वविद्यालयों में किसी छात्र के साथ जाति, धर्म, भाषा या वर्ग के आधार पर भेदभाव न हो।

इन नियमों के तहतः

हर विश्वविद्यालय में एक शिकायत निवारण समिति (Grievance Redressal Committee) होती है। अगर किसी छात्र को भेदभाव महसूस होता है, तो वह सीधे कॉलेज प्रशासन में शिकायत कर सकता है। कॉलेज को उस शिकायत की जाँच करनी होती है और समाधान निकालना होता है।

गंभीर मामलों में छात्र UGC या कोर्ट तक भी जा सकता है। यानी, शिकायत की व्यवस्था पहले से मौजूद है, लेकिन वह सरल और सीमित ढाँचे में काम करती है।

फिर नए २०२६ नियम लाने की ज़रूरत क्यों पड़ी?

UGC ने कहा कि २०१२ के नियम कमजोर हैं और उनमेंः

अलग से Equity Committee नहीं थी

Equal Opportunity Centre अनिवार्य नहीं था। शिकायतों की निगरानी की सख्त व्यवस्था नहीं थी। इसलिए २०२६ में नए नियम लाए गए, लेकिन वे विवादों में फँस गए।

सुप्रीम कोर्ट ने '२०१२ के नियम लागू रहेंगे' क्यों कहा?

जब तक नए UGC नियमों पर अंतिम फैसला नहीं होता, तब तक पुराने और पहले से चल रहे नियम ही लागू रहेंगे।

मतलब कॉलेज पहले की तरह ही शिकायतें सुनेंगे । नई Equity Committees बनाना ज़रूरी नहीं होगा।

1. ***कोई नया कानून जबरन लागू नहीं किया जाएगा***
2. ***व्यवस्था में अचानक बदलाव नहीं होगा***
3. ***आम छात्र के लिए इसका क्या मतलब है?***

अभी के समय में छात्र वही प्रक्रिया अपनाएँगे जो पहले से चल रही थी। नई व्यवस्था से डरने या भ्रमित होने की जरूरत नहीं। शिकायत करने का अधिकार पहले जैसा ही रहेगा।

काले गन्ने की खेती...

काले गन्ने की खेती में जलवायु और मिट्टी की भूमिका निर्णायक होती है। दोमट मिट्टी और २० से ३५ डिग्री तापमान इसके लिए अनुकूल माना जाता है। रोग मुक्त बीज और समय पर खाद न दी जाए तो रंग फीका पड़ जाता है, जिससे इसकी बाजार कीमत सीधे प्रभावित होती है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस फसल में ड्रिप सिंचाई और जैविक खाद का प्रयोग करने से गुणवत्ता बेहतर होती है, जबकि रासायनिक खाद की अधिकता से मिठास और रंग दोनों घट सकते हैं।

एक एकड़ में लगभग ३०० से ४०० क्विंटल उत्पादन संभव है। यह सामान्य गन्ने से कुछ अधिक होता है। लेकिन वास्तविक लाभ इस बात पर निर्भर करता है कि किसान इसे किस बाजार में बेचता है – मिल में या सीधे उपभोक्ता तक। सीधे जूस बाजार में बेचने पर लाभ अधिक है, जबकि चीनी मिल में यह सामान्य गन्ने के बराबर कीमत ही दिला पाता है। इसलिए विशेषज्ञ इसे 'निश फसल' मानते हैं, न कि मुख्य व्यावसायिक फसल। परंपरागत गन्ना किसानों के लिए काला गन्ना एक नई सोच का प्रतीक बन सकता है – जहाँ खेती केवल उत्पादन नहीं बल्कि ब्रांडिंग भी बन रही है। कुछ युवा किसान इसे 'ऑर्गेनिक हेल्थ प्रोडक्ट' के रूप में पैक कर शहरों में सप्लाई कर रहे हैं। लेकिन इसके साथ ही यह भी सच है कि हर क्षेत्र में यह प्रयोग सफल नहीं होगा। गलत मिट्टी, गलत समय और बिना बाजार समझे किया गया प्रयोग घाटे में बदल सकता है।

काला गन्ना भविष्य की फसल हो सकता है, लेकिन वर्तमान में यह सीमित बाजार वाली विशेष फसल है। किसान यदि इसे छोटे स्तर पर प्रयोग के रूप में अपनाएं और पहले बिक्री व्यवस्था तय करें, तभी यह लाभकारी सिद्ध हो सकती है। खेती अब केवल खेत तक सीमित नहीं रही – वह बाजार, स्वास्थ्य और उपभोक्ता सोच से जुड़ चुकी है। काला गन्ना इसी बदलती कृषि का एक उदाहरण है।

काला गन्ना (Black Sugarcane) एक खास

जब खेतों में बैंगनी आभा वाली गन्ने की फसल लहलहाती है, तो पहली नज़र में ही यह सामान्य गन्ने से अलग दिखाई देती है। यही है काला गन्ना – जिसे आजकल 'हेल्थ शुगरकेन' कहा जा रहा है। एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर इस किस्म ने शहरों के जूस बाजार से लेकर आयुर्वेदिक उद्योग तक में अपनी जगह बनानी शुरू कर दी है। काले गन्ने में एंथोसायनिन तत्व पाया जाता है, जो इसे बैंगनी रंग देता है और स्वास्थ्यवर्धक माना जाता है। यही वजह है कि महानगरों में इसके रस को सामान्य गन्ने से अधिक कीमत पर बेचा जा रहा है। जूस सेंटरों पर इसकी कीमत २५ से ४० रुपये प्रति किलो तक पहुँच चुकी है। हालांकि कृषि विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि इसका बाजार अभी सीमित है। यदि किसान बिना पूर्व खरीदार तय किए इसकी खेती करता है, तो उसे साधारण गन्ने के दाम पर ही इसे बेचना पड़ सकता है।

प्रकार का गन्ना है, जो सामान्य गन्ने से अलग दिखता है। इसका डंठल गहरा बैंगनी-काला रंग का होता है, बहुत ज्यादा मीठा और मुलायम होता है। यह सामान्य गन्ने की तुलना में बाजार में दोगुना-तिगुना दाम (३०-४० रुपये प्रति नग या ज्यादा) मिलता है, इसलिए किसानों के लिए

बहुत लाभदायक है। यह मुख्य रूप से जौंडिस (पीलिया) और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं में फायदेमंद माना जाता है, इसलिए लोग इसे ज्यादा पसंद करते हैं। काले गन्ने की खेती सामान्य गन्ने जैसी ही होती है, लेकिन कुछ खास बातें ध्यान रखनी पड़ती हैं:

जलवायु और मिट्टी

गर्म और उपोष्णकटिबंधीय जलवायु अच्छी

अच्छी जल निकासी वाली दोमट या बलुई दोमट मिट्टी सबसे बेहतर pH ६.५ से ७.५ के बीच।

बुवाई का समय

मुख्य रूप से अक्टूबर-नवंबर (शरदकालीन) या फरवरी-मार्च (वसंतकालीन) फसल तैयार होने में १०-१२ महीने लगते हैं।

खेत की तैयारी

गहरी जुताई (२०-२५ cm) करें

२-३ बार कल्टीवेटर और रोटावेटर चलाएं

प्रति एकड़ ८-१० ट्राली गोबर खाद या कम्पोस्ट डालें (जैविक तरीका सबसे अच्छा)

बीज (सेट) और बुवाई

स्वस्थ, ३-४ आँखों वाले ३०-४० cm लंबे सेट लें

बीज उपचारः कार्बेन्डाजिम या बाविस्टिन से करें ।

विधिः ट्रेंच या मेंड़ विधि - पंक्तियों में ७५-९० cm दूरी रखें ।

गहराई ३-४ cm

सिंचाई और देखभाल

पहली सिंचाई बुवाई के १०-१५ दिन बाद

कुल १५-२० सिंचाई (मिट्टी और मौसम पर निर्भर)

खरपतवार नियंत्रण और मिट्टी चढ़ाना जरूरी। पौधे मजबूत होने पर बांधना (लॉजिंग रोकने के लिए)

उर्वरक (खाद)

जैविक खाद ज्यादा इस्तेमाल करें

रासायनिकः NPK २५०:१२५:१५० kg/ha (मिट्टी टेस्ट के अनुसार)

टॉप ड्रेसिंगः यूरिया, DAP आदि

रोग और कीट

सामान्य गन्ने जैसे हीः स्मट, रेड रॉट, बोरर आदि

जैविक तरीके से नियंत्रण करें

रोग प्रतिरोधी सेट चुनें।

फायदे और कमाई

सामान्य गन्ने में १०-२० ₹/नग → काले गन्ने में ३०-५० ₹/नग (कभी-कभी ज्यादा)

स्वास्थ्य लाभः ज्यादा एंटीऑक्सीडेंट, आयरन, और मीठा स्वाद ⁼

शुरुआत में कम क्षेत्र से शुरू करें और स्थानीय कृषि विभाग या सफल किसानों से सलाह लें।

जैविक तरीके से खेती करें तो दाम और भी अच्छे मिलते हैं। काले गन्ने की खेती करके आप न सिर्फ अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं, बल्कि स्वास्थ्यवर्धक उत्पाद भी दे सकते हैं।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें। रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें। ज्यादा लंबी रचना न भेजें। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें। आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा। किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing, Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

www.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	30,000/-
2.	Back inside full page	Colour	25,000/-
3.	Inside full page	Colour	20,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount
1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra. Phone: 9082391833, 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532